वर्ष - ७ अंक - १२ मूल्य - २५/-

।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

अक्टूबर २०१८

दया की

अनुपम क्षमादान

''मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह जायेगा। तुम नहीं जानते इससे लोक हित की कितनी हानी हुई है अच्छा विधाता की यही इच्छा है।'' ऐसा कहकर महर्षि दयानन्द ने अपने विषदाता को पाँच सौ रुपये देकर नेपाल भाग जाने को कहा।

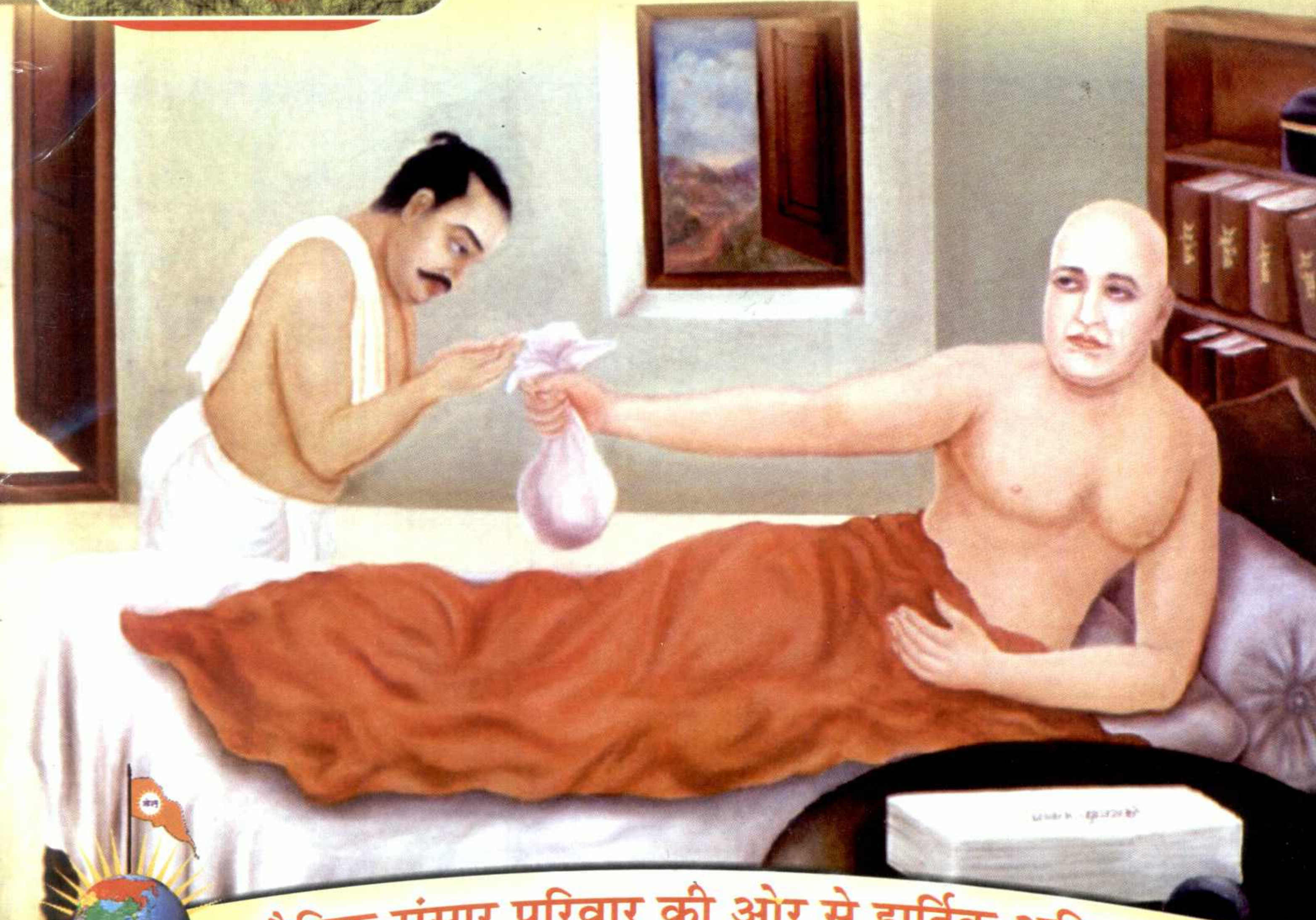

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५ से २८ अक्टूबर २०१८

वैदिक संसार परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन एवं

१३५ वें ऋषि बलिदान दिवस अवसर पर

फरिदाबाद (हरियाणा) केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान में दिनांक ३ से ९ सितम्बर २०१८ तक विभिन्न आर्य समाजों, **अग्रवाल महिला कॉलेज**-बल्लभगढ़, **दयानन्द महिला कॉलेज**-फरीदाबाद तथा अनेक स्कूलों में **व्यक्तित्व विकास, नैतिक शिक्षा तथा धर्म व राष्ट्र** सम्बन्धि व्याख्यान आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान **आचार्य सोमदेव जी आर्य-वानप्रस्थ साधक आश्रम,** आर्यवन (गुजरात) द्वारा प्रस्तुत किए गए।

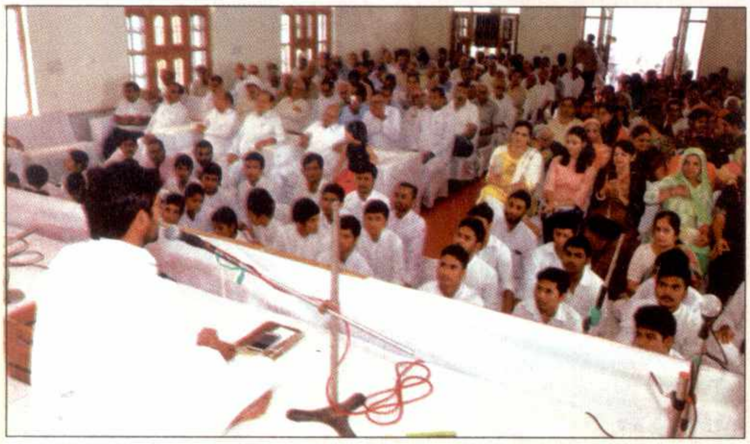

आर्य समाज मॉडल टाउन, हिसार (हरियाणा) के वार्षिकोत्सव में ३ से ७ अक्टूबर २०१८ तक **आचार्य सोमदेव जी आर्य** के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुए। अन्तिम चित्र में दिखाई दे रहा **महर्षि दयानन्द जी** का चित्र अपने हाथ से बनाने वाली बहन **रेणू अग्रवाल** के साथ **आचार्य जी** तथा अन्य **आर्यजन**।

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आई डी सी/२०१८-२०२०
वर्ष-७, अंक-१२
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अक्टूबर, २०१८
आर्ष तिथि- कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा
सृष्टि सम्वत्-१,९७,२९,४९, १२०
शक सम्वत्- १९४०
विक्रम सम्वत्- २०७५, दयानन्दाब्द-१९५

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएसएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व-दिवस, जयन्तियां-पुण्यतिथियां	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
कैसे होगा भावी पीढ़ी का निर्माण और कहां से....	सम्पादकीय	०५
आर्ष बोध, भाग-६	पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री	०५
हमारी महान विभूतियां - सर जगदीशचन्द्र बोस	पं. शिवनारायण उपाध्याय	०८
- पं. उमाकान्त उपाध्याय	पं. आत्मानन्द शास्त्री	०९
- दया की दया	रामचन्द्र कारपेन्टरार्य	११
महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानव जाति और....	आर्य मोहनलाल दशोरा	१२
महर्षि दयानन्द भाष्यानुसार-ऋग्वेद ज्ञानागार....	पं. सत्यपाल शर्मार्य	१३
महर्षि दयानन्द और वेद	खुशहाल चन्द्र आर्य	१४
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वरीय व्यवस्था और...	पं. उम्मेद सिंह विशारद	१५
पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती एक योगि थे	हरिश्चन्द्र आर्य	१७
आर्य समाज में आते है तो	ओमप्रकाश आर्य	१७
महान् बनो	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१८
महर्षि दयानन्द का समकालीन लेखकों पर प्रभाव	देशराज आर्य	१९
यज्ञोपवित का रहस्य	डॉ. सत्येन्द्र सिंह	२०
शीतल जल के स्नान से भगवान जगन्नाथ बीमार	साभार-दैनिक भास्कर	२३
प्रतिक्रिया- समसामयिक अन्धविश्वास का नजारा	डोंगरलाल आर्य	२३
मानव मांसाहारी है या शाकाहारी ?	नरसिंह सोनी	२५
तुलसी के गुण	मृदुला अग्रवाल	२५
आर्य समाज को नये सिरे से खड़ा करने का सवाल	डा. लक्ष्मीनिधि	२६
समलैंगिकता-भारतीय संस्कृति के माथे पर कलंक	डॉ. गंगाशरण आर्य	२७
ग्यारह हत्याऐं या आत्महत्याऐं	रामफलसिंह आर्य	२९
जगदीश्वर से नाता जोड़ो	पं. नन्दलाल निर्भय	३१
प्रभुवर प्रत्यक्ष	पं. देवनारायण भारद्वाज	३१
कटु वास्तविकता-दो पाटों के बीच	ओमप्रकाश बजाज	३१
सृष्टि सम्वत् गणना पर शास्त्रार्थ की चुनौती	आचार्य भद्रकाम वर्णी	३२
कल्पादि गणना से जुड़ी शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार	आचार्य दार्शनेय लोकेश	३२
आचार्य आनन्द पुरुषार्थी द्वारा विदेश में....	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	३३
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३४
आर्य जगत् की प्रस्तावित गविधियां	संकलित	३५
यात्रा वृतान्त-परमपिता परमात्मा की असीम कृपा...	सुखदेव शर्मा	३७
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	३९
संरक्षक सदस्य गजानन्द जी जांगिड का जीवन...	सुखदेव शर्मा	४१

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ।
विप्रासो वा धियायवः।। ऋ. १.८.६

भावार्थ : ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि - इस संसार में मनुष्यों को दो प्रकार का काम करना चाहिये। इनमें से जो विद्वान् हैं वे अपने शरीर और सेना का बल बढ़ाते रहें ओर दूसरे उत्तम विद्या की वृद्धि करके शत्रुओं के बल का सदैव तिरस्कार करते रहें। मनुष्यों को जब-जब शत्रुओं के साथ युद्ध करने की इच्छा हो तब-तब सावधान होकर प्रथम उनकी सेना आदि पदार्थों से कम से कम अपना दोगुना बल करके उनके पराजय से प्रजा की रक्षा करनी चाहिए। तथा जो विद्याओं को पढ़ाने की इच्छा करने वाले हैं, वे शिक्षा देने योग्य पुत्र व कन्याओं को यथायोग्य विद्वान् करनें में अच्छे प्रकार से यत्न करें, जिससे शत्रुओं के पराजय और अज्ञान के विनाश से चक्रवर्ति राज्य और विद्या की वृद्धि सदैव बनी रहे।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह नवम्बर २०१८ के महत्त्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

११ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक कृष्ण नवमी २०७५	२ नवम्बर	क्षयतिथि दशमी - २९:११
१२ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक कृष्ण एकादशी २०७५	३ नवम्बर	पूर्वा फाल्गुन - २४:३८
१३ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक कृष्ण द्वादशी २०७५	४ नवम्बर	भाई परमानन्द जयन्ति
१५ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी २०७५	६ नवम्बर	चित्रा - ०८:५४
१६ गते	सहस मास	१९४० शक स.	कार्तिक कृष्ण अमावस्या २०७५	७ नवम्बर	महर्षि दयानन्द सरस्वती पुण्यतिथि, विपिन चन्द्रपाल जयन्ति
१८ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितिया २०७५	९ नवम्बर	उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस
२१ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी २०७५	१२ नवम्बर	उत्तराषाढ़ - १६:१३
२३ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी २०७५	१४ नवम्बर	बाल दिवस
२४ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी २०७५	१५ नवम्बर	पंचक प्रारम्भ - ०७:०२, विनोबा भावे पुण्यतिथि
२५ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी २०७५	१६ नवम्बर	शहीद करतारसिंह सराबा बलिदान दिवस
२६ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुल्क नवमी २०७५	१७ नवम्बर	लाला लाजपत राय पुण्यतिथि
२७ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी २०७५	१८ नवम्बर	बटुकेश्वर दत्त जयन्ति
२८ गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी २०७५	१९ नवम्बर	रानी लक्ष्मीबाई व इन्दिरा गान्धी जयन्ति
३० गते	सहस मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी २०७५	२१ नवम्बर	पंचक समाप्त - १२:४९, चन्द्रशेखर वेंकट रमन पुण्यतिथि
०१ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२२ नवम्बर	धनु संक्रान्ति - १४:३२, वीरांगना क्षत्राणी झलकारी बाई जयन्ति
०२ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा २०७५	२३ नवम्बर	कृतिका - २६:४५, जगदीश चन्द्र बोस पुण्यतिथि
०३गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा २०७५	२४ नवम्बर	भोगराज पट्टाभि सीता रमैया जयन्ति, गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस
०४ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल तृतिया २०७५	२५ नवम्बर	क्षय तिथि द्वितिया - ३०:३९
०५ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी २०७५	२६ नवम्बर	संविधान दिवस
०७ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी २०७५	२८ नवम्बर	महात्मा ज्योति बा फूले पुण्यतिथि
०८ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी २०७५	२९ नवम्बर	देवी अहिलयाबाई होल्कर पुण्यतिथि
०९ गते	सहस्य मास	१९४० शक स.	मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी २०७५	३० नवम्बर	पूर्वा फाल्गुन - ३०:१३

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

अन्य स्त्रोतो से प्राप्त नवम्बर माह के कुछ विशेष दिवस

- ०२ प. उमाकान्त उपाध्याय पुण्यतिथि
- ०७ प. इन्द्र विद्यावाचस्पति जयन्ति
- १३ आचार्य ज्ञानेश्वरार्य पुण्यतिथि
- १४ विश्व मधुमेह जागृति दिवस
- १४ प. जवाहरलाल नेहरु जयन्ति
- १५ क्रान्ति वीर विरसा मुण्डा जयन्ति
- १५ महात्मा हंसराज पुण्यतिथि
- १६ महर्षि दयानन्द का ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ
- १८ स्वामी अखण्डानन्द पुण्यतिथि
- २२ वीर दुर्गादास राठौर बलिदान दिवस
- २३ महात्मा सुदर्शन जयन्ति
- ३० जगदीश चन्द्र बोस जयन्ति

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धिता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

कैसे होगा भावी पीढ़ी का निर्माण और कहां से कैसे प्राप्त होगी सुख-शान्ति?

सम्पादकीय

इस संसार में मनुष्य जाति में जन्मा कोई भी प्राणी चाहे वह नर हो अथवा नारी या फिर नपुंसक तथा बालक हो चाहे युवा अथवा वृद्ध सभी अपने लिए सुख-शान्ति सुरक्षा चाहते हैं कोई भी व्यक्ति अपने लिए दु:ख-अशान्ति, असुरक्षा नहीं चाहता।

किंतु यह भी शत-प्रतिशत सत्य है कि व्यक्ति की सुख- शान्ति सुरक्षा उसके अपने हाथों में हैं अर्थात् उसके कर्म में है। व्यक्ति अगर दृढ़ निश्चय कर लेवे कि मुझे कोई अन्य व्यक्ति अथवा पदार्थ दु:ख नहीं पहुंचा सकता, अशान्त नहीं कर सकता तो दुनिया का कोई व्यक्ति अथवा पदार्थ उसे दु:ख नहीं पहुंचा सकता, अशान्त नहीं कर सकता और व्यक्ति स्वयं से दु:खी और अशान्त है तो उसे संसार का कोई व्यक्ति सुख-शान्ति नहीं दे सकता अर्थात् व्यक्ति की सुख-शान्ति, सुरक्षा का सम्बन्ध उससे स्वयं से है न की किसी और से, कहा भी गया है कि मनुष्य का सबसे निकट का मित्र अथवा शत्रु कोई है तो वह स्वयं है। प्रश्न उत्पन्न होता है कि मनुष्य स्वयं का मित्र-शत्रु कैसे हो सकता है? इसका उत्तर है- मनुष्य का ज्ञान ही उसका वास्तविक मित्र अथवा शत्रु है अपने ज्ञान के वशीभूत होकर ही मनुष्य अपना हित-अहित करता है। लेख के अग्रभाग में हमने विचार किया कि कोई भी व्यक्ति अपने लिए दु:ख-अशान्ति, असुरक्षा नहीं चाहता तथा यह भी वर्णित किया कि कोई व्यक्ति दृढ़ निश्चय कर ले तो संसार का कोई भी अन्य व्यक्ति अथवा पदार्थ उसे दु:खी नहीं कर सकता, अशान्त नहीं कर सकता। यहां प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब व्यक्ति अपने लिए दु:ख-अशान्ति, असुरक्षा नहीं चाहता तो वह दृढ़ निश्चय कर लें और सुख-शान्ति सुरक्षा प्राप्त कर ले इसमें क्या अवरोध है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि दृढ़ निश्चय करना ही सबसे कठिन कार्य है इसका सम्बन्ध व्यक्ति के निर्माण से है।

ज्ञान की पाँच अवस्थाएं इस प्रकार है- यथा भ्रमात्मक ज्ञान, संशयात्मक ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान, दृढ़ात्मक ज्ञान और परिपक्वात्मक ज्ञान। जिस व्यक्ति का ज्ञान भ्रमात्मक तथा संशयात्मक है वह दृढ़ निश्चय कैसे कर सकता है? जिसका ज्ञान निश्चयात्मक स्थिति को प्राप्त कर चुका वही आगे चलकर दृढ़ात्मक और परिपक्वात्मक ज्ञान का धनी होता है और ऐसा धनी व्यक्ति ही दृढ़ निश्चय कर सकता है अर्थात् संकल्प-विकल्प की स्थिति से पार पा दृढ़ संकल्प का धनी बन सकता है। दृढ़ शुभ संकल्पों का धनी व्यक्ति ही सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता है, संसार में कोई शक्ति नहीं जो इस शुभ संकल्पों के दृढ़ व्यक्ति को दु:खी कर दे, अशान्त कर दे तथा उसकी सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह उत्पन्न कर दे। परमपिता परमात्मा ने मनुष्य जाति के प्राणी को उत्पन्न करने के साथ इसके कल्याणार्थ अर्थात् इसे इस संसार में सुख-शान्ति पूर्वक रहने हेतु वेद ज्ञान दिया। वेद ज्ञान ही मनुष्य मात्र को अच्छे से सुपरीचित करवाता है कि वह क्या करें और क्या न करें। वेद ज्ञान के बगैर व्यक्ति का निर्माण संभव ही नहीं। सीधे-सीधे वेद ज्ञान से संपर्क न रखने वाले व्यक्ति में भी जो-जो अच्छाइयां हैं वे सब कहीं ना कहीं, किसी न किसी माध्यम से वेद से ही प्रस्फुटित होकर उस तक पहुंची है किंतु ऐसा व्यक्ति कितना भी सज्जन चरित्रवान हो, वह भ्रमात्मक तथा संशयात्मक ज्ञान से ग्रसित होता है। ज्ञानावस्था प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वस्तु नहीं है जो उसे देखकर पता किया जा सके कि वह किस अवस्था का ज्ञान है। जो व्यक्ति वेदिक ज्ञान-सिद्धांतों का धनी है वही व्यक्ति भ्रमात्मक एवं संशयात्मक ज्ञानावस्था से ऊपर उठकर निश्चयात्मक ज्ञानावस्था को प्राप्त करते हुए शनै: शनै: परिपक्वात्मक ज्ञानावस्था को प्राप्त करता है और ऐसे व्यक्ति ही ज्ञानावस्था की अनुभूति करते हैं तथा ऐसे व्यक्तियों के व्यवहार से उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को भी यह प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है।

शास्त्र कहते हैं **'सर्व सुखस्य धर्म मूलम्'** अर्थात् सब सुखों का मूल धर्म है। वेद ज्ञान के अभाव में वर्तमान मानव ने ईश्वर के नाम पर प्रचलित तथाकथित अवैदिक पूजा पद्धतियों, भजन-कीर्तन, पर्वतों-नदियों आदि स्थानों पर भ्रमण आदि को धर्म समझ लिया है जबकि ऐसे अधिकांश क्रियाएं अवैदिक है जिनका दूर-दूर तक धर्म से सम्बन्ध नहीं है। धर्म वैदिक ज्ञान आधारित जीवन शैली का नाम है। व्यक्ति के आचरण-व्यवहार का नाम धर्म है जिससे संबंधित व्यक्ति को तो सुख-शान्ति प्राप्त होती ही है तथा उसके सम्पर्क में आने वाले प्राणियों को भी सुख पहुंचता है ऐसे व्यक्ति इतने प्रभावशील होते हैं कि कहीं और से अशान्ति प्राप्त अशान्त-विचलित व्यक्ति भी इनके सम्पर्क में आने के पश्चात् शान्ति अनुभूत करता है उसका मानसिक-आत्मिक बल बढ़ता है।

आर्ष बोध, भाग-६

१. पंच महायज्ञ अर्थात् ब्रह्मयज्ञ (ईश्वरोपासना) देवयज्ञ (हवन) पितृयज्ञ (माता पितादि की सेवा सुश्रुषा) बलिवैश्वदेव यज्ञ (आश्रित प्राणियों का संरक्षण) और अतिथियज्ञ (विद्वानों का सम्मान) प्रत्येक गृहस्थी को करना चाहिये।

२. वैदिककालीन हमारे पूर्वज नियमित रूप से इन पंच महायज्ञों का परिपालन स्व कर्तव्य (धर्म) मान कर किया करते थे हमें भी यह सुखप्रद वैदिक परम्परा अवश्य अपनानी चाहिये, जन्म सार्थक होगा।

३. शास्त्रकारों के मतानुसार जिस परिवार में ये सर्व कल्याणकारी पंच महायज्ञ सम्पन्न किए जाते हैं वे दु:ख, दरिद्रता और अशांति से कभी ग्रसित नहीं होते। वर्तमान में इनेगिने वैदिक परिवारों में ही ये यज्ञ होते हैं।

पण्डित कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल, कर्णावती (गुजरात)
चलभाष- ९८२४०९६०४५, ९९७९४२८०८९

मानव जीवन में किए जाने वाले कर्म धर्म और अधर्म दो भागों में विभाजित होते हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि धर्म-अधर्म की कसौटी क्या है अर्थात् धर्म-अधर्म का निर्णय कैसे हो? इस प्रश्न का उत्तर है कि जो-जो मनुष्य के लिए करणीय कर्म है वे धर्म और जो-जो अकरणीय कर्म है वे अधर्म। प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये तो कर्म के किये जाने के बाद निर्धारण होगा कि किया गया कर्म धर्म है अथवा अधर्म किन्तु कर्म करने के पूर्व मनुष्य को धर्म का ज्ञान कहां से प्राप्त हो? जिससे वह अधर्म कृत्य करें ही नहीं। इसका उत्तर मनु महाराज अपने अमर ग्रंथ **'मनु स्मृति'** में देते हैं **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** अर्थात् वेद धर्म के मूल हैं। **इस प्रकार मनुष्य के सब सुखों का मूल धर्म है और धर्म का मूल वेद है।** वेद परमपिता परमात्मा के ज्ञानागार के मोती होने से मनुष्य को भ्रमात्मक और संशयात्मक स्थिति से उबारते हैं और उसे परिपक्वात्मक ज्ञान की ओर अग्रसर करते हैं।

मनुष्य का निर्माण होता कैसे है ? मनु महाराज इस संसार के सर्वोत्कृष्ट वेदाधारित मानव मात्र के हितकारी संविधान **'मनुस्मृति'** में लिखते हैं - **'जन्मना जायते शुद्रः संस्काराद् द्विज उच्चयते'** अर्थात् जन्म से सभी शूद्र है और संस्कारों के द्वारा उनका दूसरा जन्म होकर उच्चता को प्राप्त करते हैं। इससे सुस्पष्ट है कि मनुष्य मात्र जन्म से शूद्र है। यहां शूद्र से आशय गपोड़शंखी जन्मना ब्राह्मणों द्वारा गढ़े गये नीच, अधम, अछूत अथवा निम्न जाति से ना होकर अज्ञानी है अर्थात् जन्म लेने वाला प्रत्येक बालक अबोध-अज्ञानी (शूद्र) होता है चाहे वह ब्राह्मण माता-पिता की सन्तान हो अथवा क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र की। प्रत्येक मानव का प्रथम जन्म पुरुष द्वारा स्त्री के गर्भ में गर्भाधान पश्चात् ९ माह में शरीर निर्माण होकर शारीरिक रूप से होता है और छः वर्ष की आयु पश्चात् यज्ञोपवित संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार द्वारा आचार्य के गर्भ (गुरूकुल) में ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रविष्ट हो लगभग १८-19 वर्ष संस्कारों की भट्टी में तप कर समावर्तन संस्कार द्वारा उसका वर्ण निर्धारण होकर वह ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य बन उच्चता को प्राप्त कर उसका दूसरा जन्म ज्ञानी के रूप में होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती शूद्र की परिभाषा करते हुए लिखते हैं जिसे पढ़ाने के बाद भी ज्ञान न आवे वह शूद्र है अर्थात् मूढ़ मती (अज्ञानी) जिस प्राणी को ईश्वर निष्ठ, वेद-वेदांग, तपोनिष्ठ आचार्य ने १८-१९ वर्ष निःस्वार्थ सेवा भाव से पक्षपात रहित, पूर्ण पुरुषार्थ, अथक परिश्रम द्वारा वात्सल्य भाव से ज्ञान देकर उसके सर्वांगीण विकास का प्रयास किया हो और जो ज्ञानी बन गौणिक योग्यताधारीत पदवी-उपाधी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य नहीं बन सका वह शूद्र अर्थात् अज्ञानी ही तो कहलायेगा। ऐसा व्यक्ति अन्य योग्य व्यक्तियों के मार्गदर्शन में उनके सहायक के रूप में ही तो सेवा कार्य करेगा।

उपरोक्त वृतान्त से हमने जाना कि व्यक्ति का निर्माण उसके द्वारा अर्जित ज्ञान से है और प्राचीन काल में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा वेद तथा वेदादि शास्त्रों केआधार पर मानव का निर्माण होता था। वेद तथा वेदादि शास्त्रों प्रणीत आश्रम व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था होने से यह भू-भाग विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित था, शस्त्रों की दबंगता के आधार पर नहीं।

वर्तमान में इस भू-भाग पर संचालित शासन-प्रशासन तन्त्र व्यवस्था धर्मनिरपेक्ष है। सुना जाता है कि भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्ष न होकर पन्थ निरपेक्ष है। मत-पन्थ, सम्प्रदाय निरपेक्ष होना तो अच्छी बात है, होना भी चाहिए क्योंकि एक मानव जाति में विघटन उत्पन्न करने का कार्य मत-पन्थ, सम्प्रदाय अपनी संकिर्ण विचारधाराओं के माध्यम से करते हैं किन्तु प्रचलन में यह है कि हमारा खण्डित भारत देश धर्म निरपेक्ष है अर्थात् यहां की व्यवस्था धर्म रहित है उपर हमने चर्चा की कि धर्म मानव जीवन शैली का नाम है। धर्म से विपरीत व्यवहार ही अधर्म है। इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं **'जहां धर्म नहीं वहां अधर्म होगा'**।

शासन-प्रशासन व्यवस्था को धर्मनिरपेक्षता की अन्धी प्रतिस्पर्धा के कारण ही शिक्षा व्यवस्था दुष्प्रभावित हुई और जो वेद और वेदादि शास्त्र मानव निर्माण के आधार थे उनसे शिक्षा व्यवस्था को रहित कर दिया गया। इस प्रकार वेद और वेदादि शास्त्रों युक्त गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली ध्वस्त होने से मानव जीवन के चार सोपान ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम तथा सन्यास आश्रम में केवल गृहस्थ आश्रम में ही सम्पूर्ण जीवन सीमट कर रह गया। अब जहां जन्मा वही अर्थी निकलेगी। **बालपन में ही जब घर छोड़ ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश कर काम-क्रोध-लोभ-मोह, राग-द्वेष से मुक्त आचार्य-सहपाठियों के मध्य रहकर त्याग-सेवा-समर्पण की भावना तथा इन्द्रियों का स्वामी बनकर संयमित, संतुलित आहार-विहार, व्यवहार, भाषा-भूषा के स्थान पर माता-पिता के मध्य रहकर माता-पिता तथा अन्य ग्रहस्थियों के पचड़ों, काम-क्रोध-लोभ-मोह, राग-द्वेष, निंदा-चुगली, असत्य, असंयमित, असंतुलित, अमर्यादित, आहार-विहार, व्यवहार, भाषा, भूषा आदि को देखा, सुना और सीखा तो कहां से भावी पीढ़ी का निर्माण होगा? और ऐसी स्कूली और सांसारिक गृहस्थ शिक्षा प्राप्त करने वाला बालक कैसे त्यागी-तपस्वी होकर ईश्वर निष्ठ, धर्मात्मा, राष्ट्रभक्त बनेगा? और ऐसा व्यक्ति गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर गृहस्थी तो बन जाएगा किन्तु ईश्वर निष्ठ और धर्मात्मा ना होने से वह न तो ईश्वर का सच्चा उपासक होगा, न दानी होगा, न परोपकारी होगा।**

वेद-वेदादि शास्त्रों में गृहस्थ को चारों आश्रमों में ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आश्रम कहा गया है क्योंकि तीनों आश्रमों के पालन-पोषण का भार गृहस्थ व्यक्ति ही उठाता है, अर्थ उपार्जन गृहस्थ व्यक्ति ही करता है अन्य आश्रम के व्यक्ति अर्थ आवश्यकता की पूर्ति हेतु गृहस्थ व्यक्ति पर ही आश्रित होते हैं। वेदानुकूल शिक्षित-दिक्षित व्यक्ति भलीभांति जानता था कि उसका क्या दायित्व है। वर्तमान की लॉर्ड मैकाले द्वारा थोपी गई शिक्षा पद्धति का दुष्परिणाम है कि वर्तमान के गृहस्थी का एक ही धर्म है येन-केन-प्रकारेण कैसे भी, किसी भी स्त्रोत से अकूत धन-सम्पत्ति इकट्ठा करो। बस चले तो सारे संसार का धन अपने घर में भर लो। डोनेशन के नाम पर एठी गई भारी-भरकम फिस आदि में निवेश कर मानव बने या ना बने कोई बात नहीं किन्तु देशी विदेशी मुद्रा छापने वाली मशीन डाक्टर-इंजीनियर आदि जरूर बनाओ। फिर

उसके विवाह (**विशेष दायित्व के वहन करने का नाम विवाह है**) जो कि समान गुण-धर्म-स्वभाव पर आधारित होते हैं के स्थान पर चमड़ी और दमड़ी देखकर की जाने वाली शादी करो जिसका उद्देश्य केवल खाना-आबादी है के नाम पर करोड़ों-अरबों व्यय कर खुलकर इस धरा की मूल संस्कृति की धज्जियां उड़ाओ और फूले नहीं समाओं चाहे उनकी गृहस्थी दो-चार दिन में तो दूर दो-चार घंटे में ही सीमट जाये। ऐसे विशाल महल बनाओ जिनका उपयोग तो दूर उन्हें झाड़ू पोछा के लिए नौकर चाकर की फौज रखना पड़े, महंगी-महंगी चार पहिया वातानुकूलित सर्व सुविधायुक्त हवा से प्रतिस्पर्धा करने वाली विदेशी वाहनों की पंक्तियां सजाओ, बैंक खाते, लाकर ठसा-ठस भरे हो फिर भी भुख न मिटे, कोई दीन-दु:खी, धर्मात्मा, परोपकारी द्वारे आ जावे तो उसे किसी प्रकार का सहयोग-सहायता देना तो दूर यह एक रोग से अवश्य ग्रसित होता है वह रोग हैं **'समय नहीं है'** किसी दिन-दु:खीयारे की बात सुनने का इनके पास समय नहीं होता। फिर भी ऐसे व्यक्ति अकड़ते फिरते हैं कि हमारा तो जीवन सफल हो गया। कैसे सफल हो गया इनकी ये जाने या वह न्यायकारी परमात्मा जाने। **वैदिक दृष्टि से यह निष्फल पशुवत जीवन है। जब संसार में आया था तो अपने प्रारब्ध के कर्मों की गठरी बांध कर लाया था उसके आधार पर भोग तो भोगे किन्तु साथ ले जाने हेतु कुछ ना कमाया।** ऐसा व्यक्ति गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के बाद सन्यास तो दूर वानप्रस्थ आश्रम में भी प्रवेश कैसे करेगा? वह अकूत धन-सम्पदा, भोग के इकट्ठे किये गये साधन उससे कैसे छूटेंगे? फलत: वानप्रस्थ अवस्था में भी घर में सड़ता रहेगा। बहू-बेटों केकोप का भी भागी बनता रहेगा। इन्हीं कारणों से वैदिक आश्रम व्यवस्था नष्ट हो गई और संसार को ज्ञानी, दानी, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी व्यक्ति मिलना बन्द हो गये। सेवानिवृत्ती (रिटायर्ड) व्यवस्था अंग्रेजों की विरासत है, बगैर श्रम के मूल्य कैसा? जीवन भर भारी-भरकम वेतन-सुविधायें भोगने के उपरान्त भी शासकीय कर्मी सामान्य जन को क्या देते हैं सर्वविदित है अब सेवा से मुक्त हो जाने के बाद भी मोह नहीं छूटा सरकार के पीछे पड़े रहते हैं और खटमल की भांति खून चूसते रहते हैं। सरकार कहां से देगी वह सामान्य जन का खून चुसती रहती है। सरकार सामान्य जन का १ लीटर खून चुसती है तो उसमें से १००-५० ग्राम अपने मातहतों को चुसा देती है। सामान्य जन भी देखता है चहूँ और लूट मची हुई है मैं भी पीछे क्यों रहूं, वह भी लग जाता है गोरखधन्धे में, स्थिति यह बन गई है कि सचरित्र सज्जन वह है जिसे भ्रष्टाचार का अवसर नहीं मिला।

इन्हीं कारणों से मनु महाराज मनु स्मृति में व्यवस्था देते हैं कि बगैर वेद पढ़ा हुआ व्यक्ति गृहस्थ में प्रवेश नहीं करें। क्योंकि वैदिक शिक्षा विहीन व्यक्ति गृहस्थ में प्रवेश करेगा तो गृहस्थाश्रम की मर्यादा नष्ट होकर उत्तम प्रजा (सन्तान) का निर्माण ना हो पावेगा। वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा केअभाव में ब्रह्मचर्य आश्रम नष्ट हुआ और इसका प्रभाव गृहस्थ आश्रम पर पड़ा फलत: वैदिक आश्रम व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो गई। स्थिति इतनी निम्नतम् हो गई है कि यह सम्पादकीय जांगिड़ ब्राह्मण समाज भवन नागपुर (महाराष्ट्र) में कोई कार्य नहीं होने से रिक्तावस्था में लिख रहा हूँ। चार-छ: परिचितों को भेंट हेतु द्रुतवार्ता पर सम्पर्क किया, न तो उनके पास समय है और न वह किसी और को भेंट करने पहुंचा सके। हम तो तत्पर हैं किसी के घर जाये हवन करें, उपदेश करें, प्रेरणा दें किन्तु वर्तमान समय में किसी के पास समय ही नहीं है, और एक भय यह भी है कि सुखदेवजी से मिलेंगे तो पत्रिका का चन्दा १०००-५०० देना पड़ेगा जिससे दोहरी मार पड़ेगी पैसे भी जायेंगे और सुखदेव जी पत्रिका भेजेंगे तो पढ़ना भी पड़ेगा। सबसे अच्छा यह है कि सुखदेव जी से दूर ही रहो यही कारण है कि दो दिवस में केवल श्री किशनलाल जी शर्मा ने सहृदयता दिखाई जिन्होंने वार्ता होते ही तत्काल घर आने हेतु गाड़ी भेजी, भोजन कराया, आजीवन सदस्यता राशि सहयोग किया और हमें अपने इच्छित स्थान तक छोड़ने हेतु गाड़ी भी भेजी। सहयोग तो श्री इन्द्र चन्द्र जी समाज अध्यक्ष ने भी किया, सभा भवन का कमरा खुलवाया आपके पोते ने सामान उठवाकर तीसरे माले पर पहुंचाया, दूसरे दिवस समाज भवन पर यज्ञ साथ किया, अपने निवास ले जाकर नाश्ता करवाया, त्रेवार्षिक सदस्यता सहयोग किया। किंतु ऐसी अनुभूति हुई कि संस्था अध्यक्ष के कारण विवशतावश उन्होंने यह सब किया। अन्यथा उनसे अनुरोध किया था कि दो-चार बन्धुओं से मिलवाओ पत्रिका के सदस्य बनवाओ किन्तु वे एक से भी नहीं मिलवा सके। दूसरे दिवस भी यज्ञ में शामिल होने के लिए उन्हें सम्पर्क किया किन्तु उन्होंने असमर्थता प्रकट की। आर्य समाज भी तो इसी संसार और समाज के व्यक्तियों से भरा पड़ा है। कुछ अपवाद छोड़कर जीवन भर शासकीय सेवा में बगैर सेवा शुल्क (रिश्वत) के कार्य नहीं करने वाले सेवानिवृत्ति पश्चात् टाइम पास करने के लिए पुत्रैषणा, वितैषणा तथा लौकेषणा से ग्रसित लोगों ने अपनी चतुराई से धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक संगठनों में घुसपैठ कर ली। दीहाड़ी पर कार्य करने वाला अथवा अपने घर-गृहस्थी की झंझटों में उलझा व्यक्ति तो किसी संस्था में सेवा देने से रहा। ऐसे ही कतिपय तत्व आर्य समाज में भी घुसपैठ कर गये। यह भी कहने में आता है कि जिन्हें और कहीं जगह नहीं मिली उन्होंने आर्य समाज की शिथिलता-उदारता का लाभ उठाकर बड़ी सरलता से अपनी जगह बना ली। ऐसे लोग आर्य समाजी तो बन गये और **'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्'** का उद्घोष तो लगाते किन्तु आर्यत्व से दूर-दूर का सम्बन्ध नहीं। ऐसे लोगों के कारण अच्छे लोगों का आर्य समाज में प्रवेश बन्द हो गया और जो थोड़े बहुत पहले से थे या तो वे संसार से चले गये या कुटिल, कपटी लोगों ने अपनी कपट नीति के तहत उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। फलत: मानव मात्र के हितार्थ कार्य करने वाला संसार का सर्वोत्कृष्ट संगठन आर्य समाज अपनी दयनीय दशा पर अश्रु बहा रहा है इसका प्रत्यक्ष दिग्दर्शन महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य वैदिक गुरुकुल टाटीबन्ध और आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के दुर्ग कार्यालय पहुंचने पर हुआ। (विस्तार से जानने के लिए अगस्त के पृष्ठ क्र. ३४ पर परिभ्रमण पढ़े....) वेदानुकूल शिक्षा से विमुख लोगों के गृहस्थ में प्रवेश करने से ग्रहस्थ आश्रम नष्ट होना ही था तो गृहस्थ आश्रम पर आश्रित अन्य आश्रम व्यवस्था नष्ट क्यों नहीं होती? ●

अद्‌भूत प्रतिभा के धनी '**बेतार का तार**' आविष्कारक भारतीय वैज्ञानिक

सर जगदीशचन्द्र बोस

शिवनारायण उपाध्याय

७३, शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा (राज.)

चलभाष - ०७४४२५०१७८५

जगदीश चन्द्र बोस का जन्म पूर्वी बंगाल (वर्तमान में बांग्लादेश) के मैंमनसिंह जिले के एक छोटे से गाँव रारीवाल में ३० नवम्बर १८५८ में हुआ था। उसके पिता भगवान चन्द्र बोस एक डिप्टी मजिस्ट्रेट थे। जगदीश चन्द्र बोस की प्रारम्भिक शिक्षा रारीवाल गांव में ही हुई। सन् १८७१ में उन्हें कलकत्ता के सेंट झेवियर स्कूल में भरती कराया गया। बालकपन में उन्होंने रामायण और महाभारत का बंगाली अनुवाद पढ़ा। इन दोनों ग्रन्थों का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। पढ़ाई के अतिरिक्त वे जिम्नास्टिक तथा घूंसेबाजी के खेलों में भाग लेते थे। उन्हें हर प्रकार के किटाणुओं और जन्तुओं को पालने का शौक था। वे पानी में रहने वाले सांपों और मछलियों को भी पाल लेते थे। उन दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान नहीं पढ़ाया जाता था। फादर लाफन्ट ने उनके अन्दर भौतिकी के लिए एक उन्माद सा पैदा कर दिया । बाद में लार्ड रेले ने उसे और प्रोत्साहित किया। जगदीश चन्द्र बोस ने अपनी बी.ए. की उपाधी सन् १८७७ में प्राप्त की, इसमें विज्ञान एक विशिष्ट विषय था। फिर १८८१ में आगे के अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में '**टाइपस**' उपाधि तथा लन्दन विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. की उपाधियां प्राप्त की। सन् १८८५ में भारत लौट आए। उन्हें कलकत्ता के **प्रेसीडेन्सी कॉलेज** में भौतिकी के प्रोफेसर का पद प्राप्त हो गया। परन्तु उनको जो वेतन दिया गया वह अत्यन्त अपमान जनक था। अंग्रेज प्रोफेसरों को उनसे तीन गुना अधिक वेतन दिया जा रहा था। इस पर उन्होंने विरोध किया और उस वेतन को लेने से इनकार कर दिया। तीन वर्ष तक वे बिना वेतन काम करते रहे अन्त से सरकार ने हार मान कर उनको बढ़ा हुआ वेतन दिया। जगदीश चन्द्र बोस अपने वैज्ञानिक कार्यों जैसी विद्युत तरंगे और पौधों में जीव के लिए प्रसिद्ध हुए। वे प्राण धारी जीवों और अजीव पदार्थों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्नों के कारण प्रसिद्ध हुए । क्लार्क मैक्सवेल ने बिना प्रयोगों के यह भविष्यवाणी की थी कि प्रकाश की किरणों की प्रकृति विद्युत चुम्बकीय किरणों के समान है। जर्मन वैज्ञानिक हर्टज् ने इसे प्रयोगों द्वारा प्रमाणित किया था। हर्टज् ने यह खोज की थी कि किसी मशीन द्वारा विद्युत आवेश छोड़ा जाये तो वे क्षेत्र में तरंगे उत्पन्न करती है जो प्रकाश किरणों से समानता प्रदर्शित करती है। हर्टज् ने जो सबसे कम लंबाई की विद्युत चुम्बकीय तरंग उत्पन्न की वह ५ मीटर की थी। मार्कोनी और लोज ने भी इसी लम्बाई की विद्युत तरंगें उत्पन्न की। प्रोफेसर जगदीश चन्द्र बोस ने स्वयं एक यंत्र बनाया। उसका नाम **इलेक्ट्रिक रेडियेटर** रखा और ५ मिलीमिटर लम्बाई की तरंगें उत्पन्न करनें में सफलता प्राप्त की। फिर उन्होंने उनको गुणात्मक रूप में आगे बढ़ाया। बोस एवं हर्टज् दोनों ने सिद्ध किया कि छोटी विद्युत-चुम्बकीय तरंगें ठीक प्रकाश की समूह किरणों के समान कार्य करती हैं। बोस विद्युत चुम्बकीय तरंगों को घ्रुवीकरण करने में भी सफल हो गए।

उनकी दूसरी खोज ध्रुवीकरण क्षेत्र के घुमाव से सम्बंधित थी। उन्होंने एक विशेष '**कृष्टल**' खोजा जिसे '**नेमालाईट**' नाम दिया। उन्होंने सिद्ध किया नेमालाईट विद्युत तरंगों का ध्रुवीकरण ठीक वैसे करता है जैसे कि '**टोरमेलाइन**' के द्वारा प्रकाश किरणों का ध्रुवीकरण होता है। उन्होंने विज्ञान में अपना सर्वप्रथम शोध से मई

१८९५ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल के जोर्नाल में प्रकाशित किया लेख का शीर्षक on polarisation of electracal waves by double refrecting crystles रखा था। उन्होंने मार्कोनी और लोज से स्वतंत्र '**बेतार का तार**' का आविष्कार किया। सन् १८९५ में उन्होंने बंगाल के गर्वनर के सामने इसका प्रदर्शन भी किया। उन्होंने अपने रेडियेटर से विद्युत किरणों को २३ मीटर दूर रिसीवर के पास भेजकर एक घण्टी बजाने तथा एक पिस्तोल चलाने में सफलता प्राप्त की तथा बाद में १.६ किलोमीटर दूरी तक वही प्रयोग दोहराया। परन्तु इस खोज को अपने नाम पर पेटेंट नहीं कराया क्योंकि उनकी मान्यता थी कि वैज्ञानिक शोध आम जनता की सुविधा के लिए होती है उन्हें राजकीय सहयोग भी नहीं मिला। ब्रिटिश एसोसिएशन के आमन्त्रण पर वे इग्लैण्ड गए और लिवरपूल में अपने प्रयोग को दोहराया! प्रसिद्ध वैज्ञानिक लार्ड केल्विन उनके प्रयोग से इतने अधिक उत्साहित हुए कि उन्होंने बोस की केवल प्रशंसा ही नहीं की वरन् तेज चलकर महिलाओं में बैठी हुई उनकी पत्नि को उठाया और दोनों हाथों से उनसे बोस की प्रशंसा करते हुए हाथ मिलाए। परन्तु बोस ने आर्थिक साधनों की कमी से इस कार्य को आगे नहीं बढ़ाया। इटली में मार्कोनी भी इसी कार्य में संलग्न था। उसे भी सफलता और राजकीय सहायता प्राप्त हुई। संसार भर में 'बेतार का तार' प्रारम्भ हो गया। लिवरपूल में उन्हें जो सफलता मिली उससे प्रभावित होकर उन्हे **शुक्रवारीय संध्या** व्याख्यान में कई व्याख्यान देने का अवसर मिला। इंडिया ऑफिस पर भी इसका प्रभाव पड़ा फलस्वरूप उन्हें आगे तीन माह के लिए और व्याख्यान देने के लिए विशेष अवकाश स्वीकृत हो गया (फादर लेफान्ट ने बताया कि बोस को सफलता मार्कोनी के पहले मिली थी) जगदीश चन्द्र बोस कलकत्ता विश्वविद्यालय में सन् १८८५ से १९१५ तक भौतिकी में प्रोफेसर के स्थान पर कार्य करते रहे । सन् १८९६ में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने उन्हें **D.SC.** की डिग्री प्रदान की। जगदीश चन्द्र बोस के अपने विद्युत तरंग रिसीवर के व्यवहार में यह देखा कि लगातार प्रयोग में लाने के कारण उसमें **थकान** के लक्षण पैदा हो जाते हैं परन्तु कुछ काल तक यदि इसे बिना काम के छोड़ दिया जाये तो यह पुनः **आराम** कर लेने के कारण, प्रारभिक उत्सुकता के साथ कार्य करने लग जाता है।

... शेष भाग पृष्ठ १६ पर

पं. उमाकान्त उपाध्याय - ज्योति पुन्ज का तिरोधान

"हे शिल्पि प्रवर! शत-शत प्रणाम"

- आत्मानन्द शास्त्री-
आर्य समाज कोलकाता
चलभाष- ९८३११०१५५

दीपक की सफलता की कथा तभी कही जाती है जब वह प्रज्वलित रहते-रहते किसी अन्य दीपक को अपने प्रकाशपुन्ज से तेजोमय कर दे। किसी फल का फलवत्व तभी सफल होता है जब वह बीज रुप में अपने को गला कर भी शतशः अन्य बीजों के निर्माण की प्रक्रिया में वृक्ष को संलग्न कर दे । इसी प्रकार मनुष्य का मनुष्यत्व भी इसी में निहित है कि वह न केवल स्व और स्वत्व के लिए जिए मरे बल्कि दीपक बनकर दूसरे को प्रकाश देते-देते स्वयं जल मरे । वेदादेश का पालन करें-**"मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्"।**

आज मैं अपने जीवन रुपी दीप को वेद के प्रकाश को प्रदान करने वाले उसी शिल्पी के प्रति अपने हृद्योद्गार व्यक्त करने चला हूं जिसके कहने के लिए मेरे शब्द कम पड़ रहे हैं भावों का प्रभाव शब्दों के अभाव को अभिव्यक्त करने में संलग्न है । मेरे जीवन को अहर्निश प्रतिपल, प्रदिपद संवारने वाले उस शिल्पिराज को मैं प्रणाम करता हूँ । **हे अभिजात प्रवर!**

आपका जन्म कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी संवत् १९८४ विक्रमी को अवध प्रान्त (पूर्वी उ.प्र.) सुलतानपुर के झौआरा नाम ग्राम में माता श्रीमती दिलराजी देवी एवं पिता श्री नागेश्वर प्रसाद उपाध्याय के पवित्र सदनांगन में हुआ । भाई जी पं. रमाकान्त शास्त्री में अनुशासन, प्रेरणा और दीक्षा प्राप्त करके जीवन पर्यन्त आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन की सेवा का संकल्प ले लिया । आज आर्य जगत् में उपाध्याय शब्द बोलते ही पं. रमाकान्त, पं. उमाकान्त, पं. शिवकान्त, पं. वाचस्पति उपाध्याय क्षितीज पटल पर देदीव्यमान नक्षत्र की भाँति सुदीप्त दृष्टिगोचर होते हैं । अपने ही **'उपेत्य अधीयते यस्मात्'** इस उपाध्याय संज्ञा को सार्थक किया है । **मैं आपके उस कुल को प्रमाण करता हूँ ।**

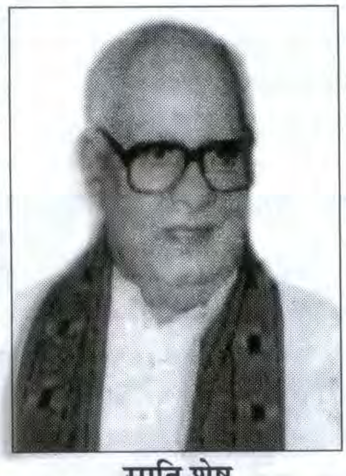

**स्मृति शेष
पं. उमाकान्त उपाध्याय**

हे कर्मयोगिन्! मनुष्य जन्म का महत्व कर्म की सतत् साधना से सिद्ध होता है । कर्म ही वह तत्व है जिससे मनुष्य देवत्व, ऋषित्व को प्राप्त करता है । पूज्यवर्य पं. उमाकान्त जी ऐसे ही सतत् साधनारत् कर्मयोगी थे । कलकत्ता महानगर के शिक्षा केन्द्रों में सप्रतिष्ठित जयपुरिया कॉलेज में लगभग चालीस वर्ष तक आप अर्थशास्त्र के वरिष्ठ प्राध्यापक रहे । कॉलेज में अनुशासन समय का अनुपालन, शिक्षण की कला सब कुछ प्रसंशनीय अनुकरणीय एवं उदाहरणीय रहा । कॉलेज में कार्य करते हुए भी आर्यसमाज के कार्यों में सर्वदा सर्वथा सर्वतोभावेन भाग लेते रहना आपके कर्मयोगित्व को सुतरां सिद्ध करता है । सेवानिवृत्ति के उपरान्त तो सर्वथा आर्यसमाज के कार्यों में अर्पित होकर अहर्निश, अजस्त्र कार्यरत रहना आपके कर्मयोगित्व का प्रमाण, बिस्तर पर ही रहने की मजबूरी के बावजूद दूरभाष से, लेखनी से, किसी के मिलने आने पर मुखारविन्द से सर्वथा वेद, दयानन्द, प्रभु और आर्य समाज की ही चर्चा; अहा! रोम-रोम में वेद, दयानन्द और आर्यसमाज अंगीरस हो गया था। वेद और अंगिरा हो गये थे आप ।

मैं आपके कर्मयोगी स्वरुप को सादर प्रणाम करता हूँ ।

आपका उन्नत ललाट, सुन्दर गौरवपूर्ण अध्यात्मसुधा के सेवन से देदीप्यमान मुखमण्डल और अगाध पाण्डित्य, सब एक साथ मंच पर अवतरित होता था तो प्रतीत होता था। उदयाचल पर भगवान् भास्कर स्वयं उदित होकर वेदभानु का प्रकाश फैलाने लगे हैं । तर्कपूर्ण, विचारपूर्ण, लालित्यमय, अलंकारमय गम्भीर गिरा से जब आपका वेदोपदेश होता था तब प्रतीत होता था स्वयं ब्रह्मा वेदोपदेश देने को अवतरित हो गये हैं । भाषा और भाव की तारतम्यता इतनी कि भोर हो जाय और भावविभोर श्रोता को पता न चले । लगभग पचास वर्षों तक वेद पारायण यज्ञों में ब्रह्मा के रुप में उपस्थित होकर एक-एक मन्त्र की गम्भीर, सहज, सरस व्याख्या से जो आपने हम श्रोताओं को वेदामृत का पान कराया है हम आपके आभारी है।

आपकी वाणी का जादू प्रतिपक्षियों के मानमर्दन में सदैव समर्थ रहा । न केवल भारतवर्ष अपितु विदेशी धरती पर भी आपकी वाग्मिता की अनुगूँज देर तक दूर तक सुनायी देती रही है। सन् १९७६ में जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड) में आपने भगवान् वेद का सन्देश देकर प्रभावित लोगों के मध्य आर्यसमाज की स्थापना की । सन् १९७८ में नैरोबी (केन्या) में सम्पन्न सार्वभौम महासम्मेलन में भारतवर्ष और आर्यसमाज के प्रतिनिधि के रुप में आपने भाग लिया । सन् १९८० में लन्दन में सम्पन्न **विश्व धर्मसम्मेलन** में वैदिक धर्म के प्रतिनिधि के रुप में आपने **"वेदविहित धर्म ही वस्तुतः धर्म है और वेद ही सकल विश्व का एकमात्र धर्मग्रन्थ है'** विषय का प्रतिपादन किया । **आपकी वाग्मिता को मैं, सादर प्रणाम करता हूँ ।**

हे लेखकललाम ! पूज्य पं. उमाकान्त उपाध्याय जी जो उमा के कान्त थे न केवल वाणी से अपितु लेखनी से भी अनिश ज्ञानवारिधि को उलचने में संलग्न रहे । आपके द्वारा लिखित पुस्तकों की एक बृहत्तर सूची है । **'वेद वीथिका', 'वेद वैभव', 'वेद वन्दना', 'आर्यसमाज कलकत्ता का शतवर्षीय इतिहास', 'व्यतीत के यश की धरोहर', 'सत्यार्थ प्रकाश सन्दर्भ दर्पण'** जैसे

अनेक ग्रन्थ आज साहित्य जगत् की धरोहर है । शतश: लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। '**सन्मार्ग**' नाम दैनिक पत्र जो कलकत्ता के समाज पत्रों में प्रतिष्ठित स्थान रखता है उसमें आपके लेख प्राय: प्रकाशित होते थे और सन्मार्ग के स्तम्भ लेखकों में आपका एक गरिमामय स्थान था।

हे सम्पादकशिरोमणे ! शिक्षा और शिक्षण की प्रत्येक विधा में सिद्ध हस्त श्रीआचार्य जी सम्पादन के क्षेत्र में भी ध्वजवाहक कार्य किया। आर्य जगत् में सुप्रतिष्ठित सम्मान्य पत्रिका '**आर्य संसार**' का विगत पचास वर्षों से भी अधिक आप सम्पादन कर रहे थे । आपके सम्पादकत्व में इस पत्रिका के लेख पठनीय मननीय एवं संग्रहणीय होता था । पत्रिका में आपके द्वारा प्रदत्त वेदव्याख्यान, ऐतिहासिक संस्मरण इत्यादि इस पत्रिका के यश को द्विगुणित करते थे । **यह पत्रिका आर्यसमाज कलकत्ता का मुख पत्र है** । पत्रिका के सम्पादन के साथ अपने अन्य लगभग बीस ग्रन्थों का सम्पादन व प्रकाशन कराया । **जीवन ज्ञानमय होकर परोपकार परिपूर्ण रहा है यह देखकर सिर श्रद्धा से झुकता है।**

हे वेद विदांवरेण्य विद्वद्वर्य! अर्थशास्त्र पढ़ाकर जीविकोपार्जन करके वेदविद्या की सेवा दत्तमना आचार्यवर्य जैसा अदभुत चरित्र चहुंओर निहारने पर भी दृष्टिगोचर नहीं होता बड़े भाई के अनुदेश "**उमेश! कॉलेज में पढ़ाकर पैसे लेना किन्तु आर्य समाज में आकर वेद की सेवा करना**" को मानकर सेवावृति के साथ-साथ आर्य समाज और वेद की सेवा करना और सेवानिवृत्ति के उपरान्त सर्वात्मना वेदसेवार्थ जीवन अर्पण कर देना यह भाव कोई आप से बिना मूल्य सीख सकता है । लोग रिटायर होते है कार्यानिवृत्ति के लिए किन्तु मेरा आचार्य रिटायर होता है तो कर्म प्रवृत्ति के लिए सेवानिवृत्ति के पश्चात् वेद सेवा की ऐसी धुन लगी कि वेद और आचार्यवर्य पर्यायवाची हो गये । दिन हो तो, रात हो तो, प्रात: दोपहर सायं कुछ भी हो वेद बस वेद । वेद और दयानन्द के नाममात्र के श्रवण से पुलकित वदन् अश्रुपूरित नयन मैने कई बार दर्शन किये । ज्ञात हो जाय कि अमुक विद्वान् अमुक कार्य वेद के विषय में कर रहा है बस वह विद्वान आचार्य जी के प्रियतम हो जाते थे । मुझे बार-बार वेद सेवा की प्रेरणा, आर्यसमाज के प्रचार के प्रेरणा पूज्य आचार्य जी से सतत मिलती रही है । जब भी मिले सहसा मिले, प्यार से मिले, कुशल क्षेम के बाद सीधे वेदचर्चा के लिए इतनी तड़प । ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत वेदार्थ को इतनी ही रहती थी जितनी किसी मधुमेह के मरीज को मीठे के प्रति रहती है।

हे आचार्यवर्य! जो सबको आचरण सिखाये वह आचार्य आपका जीवन प्रतिपद आचरण को ही शिक्षा प्रदान करता था। । समय का अनुपालन ऐसा कि कोई घड़ी मिला ले । यथासमय कार्य का आरम्भ यथासमय समापन । घड़ी टल न जाय कहीं वह घड़ी न आ जाय जब सब घड़ियां बन्द हो जाये । वक्तव्य सर्वदा समयानुकूल। उचित बोलना, सत्य बोलना, देश काल परिस्थिति के अनुरुप बोलना । मुस्कुराहट ऐसी कि पता चले अन्दर बाहर सर्वत्र आनन्द सागर हिलोरे मार रहा है । पुत्र श्री योगेशराज उपाध्याय एवं पुत्रियाँ सुनिता, जयश्री, राजश्री, मनीषा के साथ में आचार्यत्व का आधिक्य रहा है । यही कारण है कि आज वे सभी प्रतिभा सम्पन्न विवेकवान् , मृदुभाषी मिलनसार तथा सदाचरणशील है। **हम सभी आपके इस आचार्य स्वरुप को प्रणाम करते हैं** ।

हे सद् व्यवहारभानों! "**व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा**" किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह कोई आपसे सीखे । "**वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि । लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ।**" अनुशासन, समयपालन, सैद्धान्तिक दृढ़ता में व्रजादपि कठोराणि और वात्सल्य, दु:खानुभूति, परदु:खकातरता के क्षेत्र में कुसुमादपि मृदु आपका व्यवहार साथ में रहने वाले लोगों के लिए छत्रछाया-सा प्रतीत होता था। आपकी विद्यावदात शुचिता की उसी छत्रछाया में मैने जीवन के बहुत से समय को व्यतीत किया है। **मेरा रोम-रोम आपके प्रति कृतज्ञ है व आभारी है।**

आचार्य जी ने जीवन के अन्तिम क्षण तक वेद का कार्य किया ऐसे प्रभुभक्त, वेदनिष्ठ महापुरुष को देखकर ही किसी मनस्वी ने कहा था -

दग्धं दग्घं पुनरपि पुन:
कांचनं कान्त वर्णं।
न प्राणान्ते प्रकृति
विकृतिर्जायते चोत्तमानाम् ।।

आगे आने वाली पिढ़ियां सदा आपसे प्रेरणा लेती रहेगी ।

जिसने सदाचार के बल पर,
गुण गौरव का दीप जलाया।
दिसिमान् रहा बुझकर भी,
इस जग में वह अमर कहाया। ●

वेद एवं उपनिषद् पर हुआ व्याख्यान

स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रत्यक्ष शिष्य महात्मा कालूराम जी की तप:स्थली पर गुरुपुर्णिमा पर आर्य समाज रामगढ़ शेखावाटी राजस्थान का अर्धवार्षिक उत्सव हुआ। मध्याह्न पश्चात् की सभा में आमंत्रित विद्वान आचार्य रामगोपाल शास्त्री, फतेहपुर शेखावटी, जिला-सीकर का वेद तथा उपनिषद् पर व्याख्यान हुआ।

सर्वप्रथम आपने यजुर्वेद अध्याय ३२ के मन्त्र सं. १४ का वाचन किया

यां मेधां देवगणा: पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने, मेधाविनं कुरु।।

इस मन्त्र के एक-एक शब्द का अर्थ समझाते हुए भक्त द्वारा परमात्मा से की गई प्रार्थना का भाव इस भांति समझाया - हे परमेश्वर! हमारे प्राचीन तत्वदर्शी विद्वानों तथा पूर्वजों ने जिस प्रकार की पवित्र एवं सात्विक बुद्धि आप से प्राप्त की थी उसी प्रकार की शुद्ध बुद्धि, पावन विचारों से मुझे भी युक्त कर दीजिये। इसके पश्चात् ११ उपनिषदों में से एक वृहदारण्यक के तृतीय अध्याय में महर्षि याज्ञवल्क्य एवं बृहदारण्यक के तृतिय अध्याय में महर्षि याज्ञवल्क्य एवं ब्रह्मचारिणी विदुषी वाचक्नवी गार्गी के मध्य राजा जनक की सभा में हुए शास्त्रार्थ की कथा सुनाई तथा बताया कि शास्त्रार्थ में प्रथम रहे ऋषि याज्ञवल्क्य को राजा जनक ने सोना मढ़े हुए सींगों वाली एक हजार गायें पुरस्कार में दीं। सम्पूर्ण शास्त्रार्थ में द्वितीय स्थान वचक्नु ऋषि की पुत्री ब्रह्मचारिणी गार्गी का रहा।

१८२४
मूल शंकर

ऋषिराज महर्षि दयानन्द सरस्वती
एक ज्वलन्त जीवन , सन् -१८२४-१८८३

१८८३
देव दयानन्द

देश लुट्यो और कुट्यो पिटयो, एक हजारां ऊंच!
ज्ञान मान सब मिट गयो, रही न हाथां पूंछ!!
अट्ठारह चोबीस मां, टकांरा रे बीच!
ईशाशीष दई रयो जाग जगा औदीच!!

दया की दया

दया[1] की दया[2] को न दाया[3] समझना,
दया ने दिया वो गजब का दिया!
दया की दवा का है दावा प्रबल,
दवा न करे जो दया ने किया!
दया की दया...!

शंकर[4] ने सीखा शिवरात्री को,
ये शंकर[5] बड़ा प्रलयंकर भी है!
पर भगा न सका एक चूहे को जो,
वो शंकर नहीं कोरा कंकर ही है!
दया की दया...!

शंकर से शंकर दयानन्द बना,
ब्रह्मचारी बना, सत्यधारी बना!
योगी बना और वेदी बना,
वैदिक धरा का धरातल बना!
दया की दया...!

विकट स्थिति में अंधेरे में था
कहां से कहां तक भटकता गया!
उसने खोजा उसे[6] अपनी ही चाह से,
कहीं से मिली न किसी की दया!
दया की दया...!

दया पर दयालु था परमात्मा.
एसा फैंका गिरा नन्द के धाम में!
गाढ़ी घुट्टी पिलाई वहां नन्द[7] ने,
दया चल पढ़ा वेद की राह में!
दया की दया!

चला जब दया तो ऐसा चला
जीवन भी कुन्दन बनाता गया
पाप पाखण्ड अज्ञान को दूर कर
दया दे गया हमको अपनी दया
दया की दया...!

तिलस्मों को तोड़ा बड़े से बड़े,
तर्क तलवार मारी निशाने पे ही!
थर्रा गये वो जो थे उल्टे,
दया को ही दीवार समझा गया!!

पिलाया जहर जब जगन्नाथ[8] ने,
उसके हृदय में थी न कोई दया,
दे के रुपया भगाया नेपाल को
सबको सिखला दिया ऐसी होती दया!

दया जब गया तो ऐसे गया,
ईश्वर से विनती करता गया!
तेरी इच्छा हो पूरण ऐ प्यारे प्रभू
दिवाली को प्यारा दिया बुझ गया!!

हम ऋणि है तुम्हारे दुलारे ऋषि,
वेद धारा ऐसी बहायेंगे हम,
सारी दुनियां को भर देंगे आर्यत्व से,
बना देंगे इसको वैदिक चमन!!

बस विनय है यही अब तो स्वीकार लो,
अर्पित है श्रद्धा के श्रद्धा सुमन,
नमन है ऋषी, है नमन, है नमन,
नमन है (गुरुवर) शत-शत नमन!!

१. दया = स्वामीजी, २. दया = कृपा, उपकार, ३. दाया = परेशानी, आफत, उलझन, झंझट, ४. शंकर = स्वामीजी का जन्म नाम मूलशंकर, ५. शंकर = शिव, ६. उसे = सच्चा शिव ७. नन्द = विरजानन्द जी, ८. जगन्नाथ = स्वामीजी का रसोइया

रामचन्द्र कारपेन्टरार्य
मुलतानपुरा
जिला - राजगढ़ म.प्र.
चलभाष : ९८२६८७७८२६

महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानव जाति और आर्यवर्त्त पर असीम उपकार

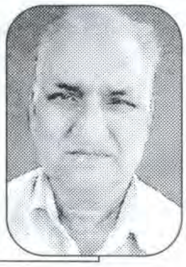

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला - मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७ ९८४१२

महर्षि दयानन्द के काल (१८२४-१८८३) में भारत अंग्रेजों का गुलाम था। भारत की जनता धर्म के नाम पर भटक चुकी थी। कई तरह के देवी देवताओं की मूर्ति पूजा का बोलबाला था। अंधविश्वास, पाखण्ड, आडम्बर और गुरुडम चरम पर था। जनता अंग्रेजी शासन की प्रताड़ना व अशिक्षा, अज्ञान अंधकार में त्रस्त थी।

लोग वेद और वेद मार्ग को भूल चुके थे। अन्य सम्प्रदायजन भावना का शोषण कर रहे थे। ऐसे विकट समय में दयानन्द स्वामी ने देश को सोते से जगाया। गुरुवर विरजानन्द से वेद ज्ञान प्राप्त कर दक्षिणा के रुप में वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने का बीड़ा उठाया। उनका संदेश था **वेदों की और लौटो**।

अंधविश्वास, आडम्बर, पाखण्ड, छुआछूत, महिला उत्पीड़न, सतीप्रथा, बाल-विवाह, गो-हत्या, अशिक्षा, धार्मिक दासता के विरुद्ध डटकर शंखनाद किया। वैदिक विचारधारा का पुनर्जागरण किया। इसके लिये कई बार शास्त्रार्थ किया। सत्रह बार जहर खाया परन्तु किसी से नहीं डरे और सत्य पर अटल रहे। महर्षि दयानन्द इस युग की महान विभूति थे। उनके व्यक्तित्व में तेजस्विता, अखण्ड ब्रह्मचर्य, अपूर्व क्रान्ति, योगानुभूति, के चुम्बकीय प्रभाव के गुण थे। उनको कई प्रकार के प्रलोभन जैसे एकलिंग मठाधीश बनाने या भगवान घोषित कर पूजा कराने के प्रलोभन दिये गये परन्तु दयानन्द सत्य पर अडिग रहे। सत्य के विरुद्ध कभी समझौता नहीं किया। हनुमान और भीष्म पितामह के बाद तीसरे अखण्ड ब्रह्मचारी महापुरुष थे। सत्य के लिये राजा महाराजा, सन्त महन्त, तहसीलदार, कलेक्टर और वाइसराय तक को खरी-खरी सुनाते थे। न जाने कितने मुंशीराम, अमीचन्द, गुरुदत्त को सत्य का रास्ता बताया। ज्ञान का प्रकाश दिया। जोधपुर नरेश को शेर और नन्हीजान को कुतिया कहकर फटकारना मामूली बात न थी। कलकत्ता में वाइसराय नार्थ ब्रुक को अंग्रेजी राज शीघ्र समाप्त होने का सन्देश देना, बहुत बड़ी बात थी। सत्य तो यह कि दयानन्द अमावस की काली रात्रि में विदा हो गये परन्तु सम्पूर्ण मानव जाति को दीपावली का ऐसा प्रकाश दे गये जो सबके मन मस्तिष्क का प्रदूषण दूर कर स्वच्छ पर्यावरण कायम करने के लिये पर्याप्त है। उनका लिखा सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य, गो करूणा निधि, आर्योद्देश्यरत्न माला, आर्य समाज के दस नियम मानव मात्र और प्राणी मात्र के कल्याण के लिये, सब काल में सभी स्थानों पर सभी वर्ग के लिये समान रुप से उपयोगी और लाभकारी हैं। वैदिक ज्ञान ईश्वर प्रदत्त आदि सृष्टी से अपने आप में सभी प्रकार से (सामाजिक, राजनैतिक, विज्ञान, खगोल, भूगोल, धर्म और मानवता से) परिपूर्ण है जो पहले भी था, आज भी है, भविष्य में वैसा ही पूर्ण रहेगा।

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ने और समझने से स्पष्ट होता है कि वे विरक्त मार्ग से निवृत्त मार्ग पर चलने वाले, सत्य के पुजारी, ब्रह्मचर्य की प्रतिमूर्ति, स्वाधीनता के प्रथम उद्घोषक सूत्रधार, हिन्दी भाषा के पृष्ठ पोषक (गुजराती होने पर भी), सती प्रथा, बाल विवाह, हिंसा, छूआछूत, दलित-पतित, अशिक्षा, जातिवाद, भाग्यवाद अंधविश्वास निवारक, गोरक्षा के पक्षधर, सत्य सनातन वैदिक धर्म के उद्धारक आर्य समाज के संस्थापक (१८७५) और राष्ट्र पितामह थे।

वसुधैव कुटम्बकम्, सर्वेभवन्तु सुखीनः, तमसो मा ज्योतिर्गमय और सत्य मेव जयते दयानन्द के वैदिक आधारित विचार थे। जो सर्व हितकारी और अनुकरणीय है। समाज में पूर्ण समरसता का आदर्श है।

आज भी सरकारी जन कल्याणकारी योजनाऐं इन्हीं सिद्धान्तों पर चल रही है यथा महिला बाल विकास, आंगनवाड़ी, नारी शिक्षा, बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ और बेटी बढ़ाओ, महिला आरक्षण, लाड़ली लक्ष्मी योजना, अन्त्योदय उत्थान, गुरुकुल आश्रम शिक्षा, योग, सूर्य नमस्कार आदि भारत (आर्यावर्त) के नैतिक उत्थान के लिये वैदिक संस्कारित शिक्षा का होना अनिवार्य होना चाहिये तभी भृष्टाचार और गरीबी दूर होगी। हमारा सौभाग्य है कि हमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम, योगीराज कृष्ण से आदर्श, नीतिज्ञ, हनुमान सा ब्रह्मचारी, सेवा भावी मंत्री दयानन्द सा सत्य का पुजारी, मार्गदर्शक, धर्मरक्षक, राष्ट्रभक्त, आर्य महापुरुषों का आशिर्वाद और संरक्षण मिला। हमें उन पर गर्व है। हम ऐसे महापुरुषों की केवल पूजा, अभिषेक, पाठ परायण, लीलाऐं कथा श्रवण न कर उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में, चरित्र में, समाज में बदलाव ला सके तो यही उनकी सच्ची पूजा होगी। चिंतन, मनन की बात यह है कि मंदिर निर्माण, मूर्ति स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा, अभिषेक, भोग, कथा श्रवण को ही हमने धर्म समझ लिया। यह तो मात्र कर्म है। मानव समाज का चरित्र निर्माण और सत्य सनातन वेद मार्ग पर चलकर समाज व राष्ट्र का निर्माण ही सच्चा मानव धर्म है। राष्ट्र धर्म, मानव समाज धर्म सर्वोपरि हो फिर व्यक्तिगत धर्म का पालन हो। ●

आपदा प्रबंधन ने सुरक्षित भारत मिशन के अर्न्तगत अवार्ड प्रदान किए

अनामिका शर्मा सहित विशिष्ठ प्रतिभाओं का सम्मान

जयपुर। महिला नेतृत्व में आपदा प्रबन्धन का राष्ट्रीय वर्कशॉप एवं अवार्ड समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में समाज सेवा के क्षेत्र में छोटी उम्र में कीर्तिमान स्थापित करने वाली वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा व कैप्टन अदिति सामंत को अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। बनीपार्क में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मेजर जनरल डॉ. सुभाष पारीक (महावीर कैंसर हॉस्पिटल) थे। कार्यक्रम की अयध्यक्षता आपदा प्रसेफ्टी प्रोफेशनल्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. ए.के. सिंह ने की। कार्यक्रम की विशिष्ठ अतिथि आईपीएस प्रभजोत कोर थी।

ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार- ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

अथ ऋग्वेद पञ्चम् मण्डलम्

गतांक से आगे...

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
२२	१ से ४	अग्नि विषय
२३	१ से ४	अग्नि पद वाच्य वीर के गुणों का वर्णन
२४	१ व २	अग्नि पद वाच्य राज विषय में
	३ व ४	अग्नि पद वाच्य विद्वानों के गुणों का वर्णन
२५	१	अग्नि विषय
	२	अग्नि दृष्टान्त से राज विषय
	३ से ६ तक	अग्नि दृष्टान्त से विद्वद्विषय
	७	अग्नि पद वाच्य राजदृष्टान्त से विद्वद्विषय
	८	मेघ दृष्टान्त से विद्वद्विषय
	९	विद्वद्विषय
२६	१	अग्नि पद वाच्य विद्वानों के गुण
	२	अग्नि के गुण
	३	अग्नि के सादृश विद्वानों के गुण
	४,५,८,९	विद्वद्विषय
	६	अग्नि सादृश के विद्वद्विषय
	७	अग्नि धारण विषय
२७	१, २ व ३	अग्नि सादृश्य से विद्वानों के गुण
	४ व ५	उपदेशक के विषय में
	६	उपदेश के विषय में राज्योपदेश
२८	१	अग्नि के गुण
	२, ३, ६	विद्वद्विषय
	४	विद्वद्विषय में राज्य का प्रकार
	५	अग्नि दृष्टान्त से राज्य का प्रकार
२९	१ से ३ तक	इन्द्रपद वाच्य राजगुण
	४, ६ व ८ से ११ तक	राज विषय
	५ व १२ से१४ तक	विद्वद्विषय
	७	सूर्य दृष्टान्त से राज विषय
	१५	राज्य विद्वद्विषय में पुरुषार्थ रक्षण
३०	१ से ३ तक	इन्द्र के विषय में
	४,५,७,८,९,११	वीरों के विषय में
	६,१४,१५	विद्वद्विषय
	१०	विद्वानों के उपदेश
	१२, १३	अग्नि दृष्टान्त से राज विषय
३१	१ से ५ तक	इन्द्र के गुण
	६ से ८ तक	विद्वानों के गुण
	९ से १३ तक	यन्त्र कला विषय शिल्प कार्य
३२	१ व २	इन्द्र पद वाच्य राज गुण
	३	इन्द्र पद वाच्य धनुर्वेदवित् राजगुण
	४ व ६ से ९ तक	राज विषय
	५	शिल्प विद्या जानने वाले विद्वान के गुण
	१० से १२ तक	विद्वद्विषय
३३	१ से ७ तक	इन्द्र के गुण
	८ से १० तक	विद्वद्विषय
३४	१	इन्द्र गुण युक्त स्त्री-पुरुष का वर्णन
	२	विद्वद्विषय में पाक गुण
	३	विद्वद्विषय
	४ व ५	प्रजा विषय
	६	इन्द्र के सादृश्य से राजगुण
	७ से ९ तक	राज विषय
३५	१ से ३ तक	इन्द्र पद वाच्य राजगुण के वर्णन
	४ से ७ तक	प्रजा विषय
	८	राजा द्वारा विद्वद्विषय के विषय में
३६	१ से ३ तक	इन्द्र पद वाच्य
	४ व ५	विद्वद्विषय
	६	शिल्पी कार्य के विषय में
३७	१	इन्द्र विषय में
	२	शिल्पी विद्वान के विषय में
	३	युवावस्था में विवाह विषय में
	४	शीघ्रयान चालन के विषय में
	५	विद्युत विद्या विषय
३८	१	इन्द्र के गुणों का वर्णन
	२	विद्वद्विषय के विषय में
	३ से ५ तक	राजा प्रजा धर्म विषय
३९	१	इन्द्र के गुणों का वर्णन
	२, ३ व ५	विद्वद्विषय के विषय में
	४	राजा-प्रजा के विषय में
४०	१	इन्द्र के गुण
	२	मेघ के विषय में
	३ व ४	इन्द्र पद वाच्य राजा के गुण
	५ व ६	सूर्य के विषय में
	७	राज विषय में
	८	विद्वद्विषय
	९	सूर्य और अंधकार के दृष्टान्त से विद्वानों और अविद्वान के विषय में

(शेष आगामी अंक में...)

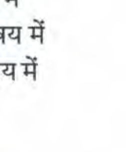

- पं. सत्यपाल शर्मार्य -
आर्य समाज-देहरी, जिला- मन्दसौर म.प्र.
चलभाष : ८४३४७४६४७४

महर्षि दयानन्द और वेद

– खुशहालचन्द्र आर्य –
१८०, महात्मा गांधी रोड़, कोलकाता
चलभाष – ९८३०१ ३५७९४

महर्षि दयानन्द का वेदों पर बड़ा अटूट विश्वास था। वे वेदों को ईश्वरी ज्ञान व सदा सत्य विद्याओं के ग्रन्थ मानते थे। साथ ही उनका यह पूर्ण विश्वास था कि यदि विश्व में सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है, तो वह वेदों केअनुसार चलने से ही हो सकती है। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। कारण उनकी यह मान्यता थी कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनका नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे उनके मुख से चार वेद जिनका नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, उच्चारित करवाये जिसमें ईश्वर ने वैसे तो प्राणी-मात्र के लिए, नहीं तो विशेषकर मनुष्य मात्र के लिए बनाये जिनमें बताया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए जिससे वह धर्म, अर्थ काम तीनों पुरुषार्थों को धर्म के अनुसार करते हुए अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त कर सके जिसको पाने के लिए जीव को ईश्वर धरती पर भेजता है। इसीलिए जिस प्रकार श्री राम को धनुष वाला बोलते हैं, भगवान श्री कृष्ण को बंशी वाला बोलते हैं। उसी प्रकार महर्षि दयानन्द को वेदों वाला बोलते हैं। महर्षि दयानन्द की वेदों सम्बन्धी निम्नलिखित मान्यताएँ थी।

१ – **वेद, ईश्वरीय ज्ञान है :**- महर्षि जी के आने से पहले, वेदों को ऋषि-मुनियों द्वारा बनाए हुए ग्रन्थ मानते थे। परंतु महर्षि दयानन्द ने अपने सद्‌गुरु विरजानन्द की गोद में तीन साल बैठ कर सही व्याकरण पाणिनि कृत महाभाष्य और अष्टाध्यायी पढ़कर वेदों के मन्त्रों का सही अनुवाद करना सीख लिया, जो पहले आचार्य सायण, महिधर उव्वट आदि ने वेदों के मन्त्रों का गलत अर्थ लगा कर उनको केवल कर्मकाण्ड के ग्रन्थ समझते थे और उनके हिंसा परक व अश्लील अर्थ लगा दिये थे जिससे लोगों की वेदों केप्रति अश्रद्धा हो गई थी और उन्हें केवल गडरियों के गीत समझने लगे थे। महर्षि जी ने वेद मन्त्रों के प्रसंग को समझकर सही अर्थ लगाये जिससे यह ज्ञात हुआ कि वेदों को ईश्वर ने बनाया है। मनुष्य में वेद-मन्त्रों को बनाने की क्षमता ही नहीं है। यह महर्षि जी का मनुष्य-मात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है जिसे भूलना नहीं चाहिये।

२ – **वेद, सब सत्य विधाओं का पुस्तक है :**- महर्षि दयानन्द का मानना था कि वेदों में सब सत्य विद्याएं हैं। पहले यह वेद भाष्यकार वेदों को केवल कर्मकाण्ड के ग्रन्थ ही मानते थे। उनको अनादि ना मानकर उनमें इतिहास व हिंसा यानी पशु बलि का वर्णन भी है, ऐसा मानते थे। परन्तु महर्षि जी ने वेदों को सृष्टि के आदि में ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है जो सब सत्य विद्याओं का संग्रह है जिसके अनुसार चलने से ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, ऐसा बताया।

३ – **वेद-ज्ञान मनुष्यों के लिए संविधान के रुप में है :**- जिस प्रकार एक राष्ट्र के लिए उसका कोई संविधान होता है, उसी के अनुसार चलने से राष्ट्र उन्नति व समृद्धि को प्राप्त होता है। उसी प्रकार ईश्वर ने वेद-ज्ञान मनुष्यों को संविधान के रुप में दिया है, जिसको पढ़कर तथा उसको अपने जीवन में उतार कर मनुष्य अपनी उन्नति तथा दूसरों की उन्नति करता हुआ, मोक्ष को प्राप्त कर सके जो जीव का अन्तिम व मुख्य उद्देश्य है। यहां यह बतलाना भी आवश्यक है कि मोक्ष क्या चीज है? जो मनुष्य अपने पूरे जीवन मैं केवल परोपकार के ही काम कियें हैं, जिनका खाना- पीना, उठना-बैठना, सोना-जागना सब कार्य परहित के लिए होते हैं जैसे भगवान् श्री कृष्ण व महर्षि दयानन्द का जीवन था। ऐसे महापुरुष मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त होते हैं और अनन्त काल तक ईश्वर के सानिध्य में रहते हुए परम आनन्द को पाते हैं।

४ – **वेदानुसार चलने से ही विश्व का कल्याण है :**- जब तक विश्व में वेदों का पढ़ना-पढ़ाना प्रचलित था, तब तक विश्व में परस्पर प्रेम था और सब लोग आनन्द व सुख से अपना जीवन यापन करते थे। महाभारत से करीब एक हजार वर्ष पहले वेदों का पठन-पाठन कम हो गया और महाभारत में अधिकतर विद्वान्, योद्धा, आचार्य, पुरोहित आदि समाप्त हो जाने से वेदों का पठन-पाठन लुप्त प्राय: ही हो गया, तभी से विश्व में अज्ञान, अंधविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया। ईश्वर की असीम कृपा से सन् १९०० शताब्दी में महर्षि दयानन्द इस धरती पर आये। उन्होंने अपने बहुत कठोर परिश्रम से सद्‌गुरु स्वामी विरजानन्द को ढूंढा और उनकी गोद में करीब तीन साल बैठकर व्याकरण पर पूरा अधिकार जमाया और फिर वेदों के सही अर्थ करके यह सिद्ध कर दिया की वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। इसी को पढ़कर और उसी के अनुसार चलकर हम अपना व विश्व का कल्याण कर सकते हैं। इसी में ईश्वर ने मानव-मात्र को एकता का पाठ पढ़ाया है और पृथ्वी तुम्हारी माता है, तुम सभी उसी के पुत्र व पुत्रियां हो **''माता भूमिः पुत्रोऽहम पृथिव्याः''** कहकर मातृ भाव का पाठ पढ़ाया है और विश्व में शान्ति बनाए रखने का पाठ पढ़ाया है। **''वसुधैव कुटुंबकम्''** कहकर पूरे विश्व को एक परिवार बताया है। ऐसा एकता का सन्देश वेदों के अलावा और कहां मिल सकता है? अर्थात् कहीं नहीं।

५ – **वेदों में अन्धविश्वास नहीं है :**- वेदों में भूत-प्रेत, जादू-टोना, गण्डा-डोरी, शगुन-अपशगुन, फलित, ज्योतिष आदि नहीं है। परन्तु वेदों का पठन-पाठन कम हो जाने से स्वार्थी, मूर्ख व कम पढ़े लोगों ने इसका भय बिठा दिया जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोल-बाला हो गया। महर्षि जी ने वेदों के आधार पर कहा कि भूत-प्रेत कोई योनि ही नहीं है। उन्होंने बताया कि भूत बीते हुए को कहते हैं और प्रेत मरे हुए शव को कहते हैं इसलिए भूत-प्रेत बोलना चालू हो गया। **शेष भाग पृष्ठ ३६ पर**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वरीय व्यवस्था और मानवीय अवस्था का बोध करवाया

पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकम्पुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष -९४११५१२०१९

भारत वासियों के अहोभाग्य महाभारत काल के बाद अट्ठारवी शताब्दी में भारत की पुण्य भूमि टंकारा (गुजरात) में युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म एक सभ्रान्त ब्रह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने ईश्वरीय वाणी वेदानुसार और ईश्वरीय व्यवस्था सृष्टि क्रमानुसार वैज्ञानिक आधार पर ईश्वर का सत्य स्वरूप और मानवीय कर्म व्यवस्था का सत्य मार्ग संसार के सामने रखा। स्वरचित ग्रन्थों द्वारा जिनमें प्रमुख सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वरीय व्यवस्था और मानवीय कर्म व्यवस्था का उपदेश दिया। उन्होंने सर्वप्रथम त्रैतवाद का बोध कराया, उन्होंने शुद्ध कर्म, शुद्ध ज्ञान, शुद्ध उपासना का संसार को ज्ञान कराया। उन्होंने ज्ञान दिया, जीव ब्रह्म और प्रकृति तीनों अनादि और निरन्तर रहने वाली सत्ताऐं हैं। उन्होंने सर्वप्रथम स्वाधीनता व समानता व पंथ निरपेक्ष का मार्ग बताया उन्होंने कोई पंथों की बात नहीं की उन्होंने वेद और योग का पथ बताया। उन्होंने भी मत व सम्प्रदाय खड़ा नहीं किया, अपितु प्राचीन आर्यवर्त्त की संस्कृति व संस्कारों को बढ़ाया।

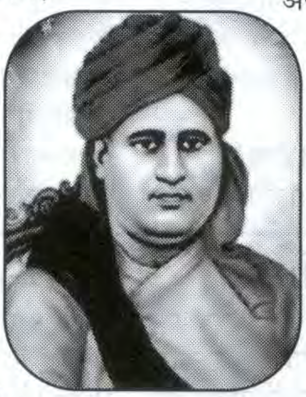

ईश्वरीय व्यवस्था और मानवों द्वारा मान्य भगवानों की अवस्था पर विचार

१. जो सृष्टि रचना ईश्वर करता है उसे मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान नहीं कर सकते हैं। बल्कि ईश्वरीय सृष्टि रचना में जीवन बिताते है।

२. ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड का रचियता है और मनुष्य द्वारा मान्य भगवान ईश्वर के नियम व व्यवस्था में रहता है।

३. ईश्वर सारे जीवों का पालन पोषण करता है और जीवों के लिये जीवन यापन के तमाम पदार्थों का निर्माण करता है। मनुष्य मान्य रूपी भगवान ईश्वर द्वारा रचित पदार्थों का सेवन करके जीवित रहता है और ईश्वर की रचना के अन्तर्गत रहता है।

४. ईश्वर फल दाता है और जीवों के कर्मों का यथा योग्य क्रमानुसार न्याय पूर्वक फल देता है। मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान ईश्वर द्वारा कर्म फल व्यवस्था के अन्दर जीवित रहता है।

५. ईश्वर सारे जीवों को भोग सामग्री प्रदान करता है और मनुष्य द्वारा मान्य भगवान ईश्वर द्वारा प्रदत्त भोग सामग्री के कारण ही जीवित रहता है।

६. ईश्वर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करता है और वह नियम निरन्तर चलता रहता है। और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान ईश्वर की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की व्यवस्था में रहता है।

७. ईश्वर अजन्मा और अविनाशी है। मानवों द्वारा भगवान जन्मा व एक देशी और नाशवान है, अर्थात् जन्म और मृत्यु के बन्धन में रहता है।

८. ईश्वर सृष्टि क्रम द्वारा जीवों के लिये ऋतुऐं तथा अन्न व वनस्पतियों की रचना करता है। और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान, ईश्वर द्वारा रचित ऋतुओं का वनस्पतियों व अन्न द्वारा जीवन जीता है।

९. ईश्वर निराकार है व सर्वशक्तिमान है व सर्वव्यापक है। और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान साकार जन्म-मृत्यु के बन्धन में रहता है और अल्प सामर्थ्य वाला है और एक देशी होता है और भिन्न-भिन्न आकार वाला होता है इसलिये निराकार ईश्वर ही सत्य है, हमें उसी को मानना चाहिये।

ईश्वरीय व्यवस्था और मानवों और मानवीय कर्म व्यवस्था पर संक्षिप्त विचार

ईश्वरीय व्यवस्था में जीव सभी प्रकार के कर्मों का अर्थात् सभी प्रकार के जीवों के प्रति किये गये। कर्मों का यथा योग्य सुख-दुःख रूपी फल प्राप्त होता हैं इस व्यवस्था में अपराध के दृष्टिकोण से किसी भी जीव के प्रति अपराध पर चाहे वह पशु ,पक्षी, मानव, अजन्मा शिशु आदि कोई भी क्यों न हो कोई भेद नहीं किया जाता।

मानवीय कर्म व्यवस्था

मानवीय कर्म फल व्यवस्था में मानव के उन्हीं अशुभ कर्मों को दण्ड योग्य माना जाता है जो दूसरे मानव के प्रति किये जाते हैं। किन्तु अनेक कार्य ऐसे है जो अपराध की श्रेणी में नहीं आते जैसे पशु-पक्षियों पर किये गये अत्याचार। राष्ट्रीय पक्षियों को छोडकर ऐसे ही भ्रूण हत्या को कानूनी मान्यता प्राप्त होते हुए भी बच्चों की हत्या को भी हत्या का अपराध नहीं माना जाता।

ईश्वरीय द्वारा रचित जाति व्यवस्था और मनुष्यों द्वारा मान्य जाति व्यवस्था

ईश्वर द्वारा रचित जीव जैसे पशु, पक्षी, गौ, अश्व, हाथी, सांप, बिच्छु, कौवा, कोयल, मेंढक, शेर, चीता, भैंस, बकरी व अनन्त प्राणीयों की रचना की गयी है, और जो शरीर जिस जीव को दे दिया गया है, वह आजीवन इसी रूप कर्मानुसार संसार में जीवों को वैसे ही शरीरों की रचना करता है, जो कभी बदलते नहीं है। वैसे ही प्राणियों में श्रेष्ट मनुष्यों की भी भिन्न-भिन्न शक्लों द्वारा रचना की है। और गुण कर्मानुसार मनुष्यों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, व शूद्र का वर्ण प्रदान किया है, किन्तु उसमें कोई भी भेद-भाव नहीं है और यह उत्पत्ति कर्म सृष्टि उत्पत्ति का कर्म सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय के उपरान्त भी निरन्तर चलता रहता है। मनुष्यों ने अपने अज्ञान व स्वार्थ सिद्धी के कारण मनुष्यों को आपस में बांट दिया है, और स्वरचित जाति व्यवस्था बनाकर आपस में एक संघर्ष की दीवार खड़ी कर रखी है। जो ईश्वरीय व्यवस्था में महापाप है और मनुष्य जाति के दुःख का कारण है। जब तक मनुष्य वर्ण व्यवस्थानुसार नहीं चलता और वर्तमान तथाकथित जाति व्यवस्था में घुलता रहेगा, तब तक कभी भी मानवीय जगत में पूर्ण सुख शान्ति मिल ही नहीं सकती है। यदि ईश्वर का

आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हो तो अपने नाम के जाति वाचक शब्द निकाल दीजिये। इस कार्य से हम ईश्वर के अति नजदीक हो जायेंगे।

ईश्वरीय व्यवस्था में कभी भी जीव आत्मा की मृत्यु नहीं होती है

ईश्वरीय कर्म फल व्यवस्था में जीव की कमी मृत्यु नहीं होती है। केवल शरीर का वियोग और रूपान्तर होता है। और जीव को अपने कर्मों का शुभा-शुभ परिणाम रूपी सुख या दु:ख भोगना पड़ता है। और जीव व ईश्वर के नित्य होने से ईश्वर की कर्म व्यवस्था भी नित्य है। बिना कर्मों का फल भोगे कर्म नष्ट नहीं होते हैं, संसार में मनुष्य का संयोग होता है और जहां संयोग होता है वहां वियोग अवश्य होता है किन्तु ईश्वर के साथ कभी भी वियोग नहीं होता सदा संयोग ही संयोग रहता है।

मानवीय कर्मफल व्यवस्था में कर्मफल की अवधारणा व्यक्ति के जीवित रहते ही सम्भव है। व्यक्ति की मृत्यू होते ही उसके शुभाशुभ कर्म मानवीय दण्ड व्यवस्था में समाप्त हो जाते हैं और वह कर्म ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में आ जाते हैं। अत: कर्मफल दण्ड व्यवस्था व्यक्ति के जीवित रहते ही सम्भव है। ईश्वरीय व्यवस्था में जीव को कर्मफल अगले जन्म में शुभाशुभ का फल भोगना पड़ता है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में साक्ष्यों का कोई स्थान नहीं है

ईश्वर सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ होने के कारण सभी जीवों के कर्मो को यथावत् जानता है उसके कर्मफल व्यवस्था में साक्ष्यों को कोई स्थान नहीं है। वह प्रत्येक जीवों का कर्मफल न्यायानुसार करता है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में सदैव न्याय होता है

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में ईश्वर सर्वव्यापक सर्वज्ञ होने के कारण सबके कर्मों को यथावत् जानता है उस जीव के किये हुए कर्मों का यथावत् न्याय करता है। मानवीय कर्म दण्ड व्यवस्था में सीमित ज्ञान के कारण व मानवीय दण्ड व्यवस्था में साक्ष्यों के अभाव के कारण बच निकलने की अवधारणा बनी रहती है। वर्तमान शासन व्यवस्था में राष्ट्राध्यक्ष के पास भी विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट कारणों के आधार पर अपराधी को उसके दण्ड को माफ करने का अधिकार रहता है।

ईश्वरीय कर्मफल या दण्ड व्यवस्था में साक्षी की आवश्यकता नहीं होती है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वज्ञ होने के कारण सबके कर्मों को यथावत जानता है अत: जीव के किये हुए कर्मों का यथावत न्याय करता है। मानवीय कर्म व्यवस्था में न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत व्यक्ति के अपराध का निर्धारण किया जाता है। यदि उसने वह अपराध किया है और साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित नहीं होता है तो उसे छोड़ दिया जाता है। जबकि ईश्वरीय व्यवस्था में ऐसा नहीं है।

नोट :- यह विषय विस्तृत है, और पूर्ण पहलुओं का संकेत इस छोटे से लेख में सम्भव नहीं है। मेरा आशय तो केवल इतना है कि आज संसार योगवादी चकाचौंध में ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था को भूलता जा रहा है। और निज स्वार्थों की गहरी खाई में गिरता जा रहा है। आज संसार में महर्षि देव दयानन्द जैसे कई महापुरूषों की अति आवश्यकता है। जो संसार का ध्यान ईश्वरीय गुण कर्म व्यवस्था और मानवीय गुण कर्म व्यवस्था का भेद का ज्ञान प्रदान कर सके। आज सारा संसार आर्य समाज जैसी उच्च आध्यात्म संगठन की ओर अपने उद्धार के लिये आशा भरी निगाहों से देख रहा है।

पृष्ठ ८ का शेष भाग...

सर जगदीशचन्द्र बोस

इस अध्ययन में उन्हें अपने **बायोलॉजी** के प्रति जन्मजात प्रेम के कारण जड़ और चेतन वस्तुओं पर बाहरी उत्तेजना या दबाव के प्रति प्रेरित किया। उन्होंने प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया कि जड़ अथवा चेतन वस्तु पर बाहरी उत्तेजना का समान प्रभाव पड़ता है। उन्होंने ब्रेडफोर्ड एवं पेरिस में अपनी इस खोज को प्रदर्शित किया। लोग देखकर दंग रह गये परन्तु उनके ये प्रयोग समय से बहुत पहले थे। लोग देखकर आश्चर्य तो करते थे परन्तु जड़ पदार्थों में '**थकना आराम** करना सोना नाराज हो जाना आदि शब्दों को प्रयोग करना उस काल के लोगों की समझ से बाहर का कार्य था। वास्तव में तो आज भी बहुसंख्यक पढ़े लिखे लोग भी इस विषय को समझ नहीं पा रहे हैं। जबकि बोस ने ये सब बातें सबके सामने प्रयोग करके सिद्ध कर दी थी। परन्तु फिर भी जगदीश चन्द्र बोस का विरोध होता है।

मैं सोचता हूं कि इसका एक कारण धार्मिक भावना भी हो सकती है क्योंकि कोई भी धर्म जड़ पदार्थ में चेतनता स्वीकार नहीं करता है। जगदीश चन्द्र बोस ने सन् १८९९ से १९०४ तक कठोर परिश्रम किया उन्होंने आठ शोध पत्र प्रकाशित किए और एक **मोनाग्राफ** पूर्ण किया जिसका शीर्षक था। 'Response in the living and non living' अर्थात् सजीव और निर्जीव में होने वाली प्रतिक्रिया। उन्होंने प्रयोगों द्वारा ज्ञात किया कि किसी भी थके हुए औजार की थकान कर्व किसी भी पशु की अंक की थकान हुए कर्व से अत्यन्त समान होती है। बोस का विचार था कि उनकी यह नई खोज सभी पदार्थों में बंटे हुए विज्ञान को जोड़ने का काम करेगी। उन्होंने कुछ समय इंग्लैण्ड में रहकर औषध विज्ञान का भी अध्ययन किया। साथ ही Prop.Vines के साथ भी जो प्राणी विज्ञान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे सम्पर्क बनाए रखा। उनकी खोज ने सिद्ध कर दिया कि जीव-जन्तु ही नहीं वरन् वनस्पतियां भी उनके प्रति उत्तेजक क्रियाओं पर प्रतिक्रिया करती हैं। उनके उत्कृष्ट कार्य से प्रभावित होकर ब्रिटिश रायल सोसायटी ने उन्हें अपना सदस्य चुना। बाद में उन्हें **सर** की उपाधि भी दी गई। उन्होंने ३० नवम्बर १९१७ ई. को '**भारतीय विज्ञान शोध संस्था**' की नींव डाली। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा, यह संस्थान विज्ञान की एक प्रयोगशाला मात्र नहीं है यह तो एक मन्दिर है। आजकल इसे '**बसु विज्ञान मन्दिर**' कहा जाता है। उन्होंने यह भी कहा, इस संस्था का मूल उद्देश्य विज्ञान का प्रचार-प्रसार करना तथा देश में ज्ञान का फैलाव करना है। उन्होंने Crecograph नामक यंत्र भी बनाया जिसमें पौधे के अन्दर होने वाली क्रियाओं को देखा जा सकता है। आज भी संसार भर के वैज्ञानिक उनके इस कार्य का अवलोकन करने के लिए भारत में आते रहते हैं। ऐसे महान् भारतीय वैज्ञानिक श्री जगदीशचन्द्र बोस की २३ नवम्बर १९३७ में दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई। सन् १९४५ में इन्साइक्लोपिडिया ब्रिटेनीका ने उनकी संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित की। उसमें लिखा गया है कि वे अपने समय की वैज्ञानिक मान्यताओं से बहुत आगे थे। इति।

तत्ववेत्ता सत्य संशोधक, आर्य समाज के संस्थापक

पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती एक योगि थे

हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : ०५९२२-२६३४१२

□ गुरू विरजानन्द के पास से शिक्षा समाप्ति के बाद वे १८६३ में मथुरा से आगरा गये और वहां खूब योग साधना की और इतनी प्रगति की कि १८ घंटे की समाधि लगाने में सक्षम थे। अपनी अवधूत अवस्था में गंगा के किनारे सिद्धि प्राप्त की, जो योगी ही प्राप्त कर सकते थे वे भविष्य में होने वाली घटनाओं को देख लेते थे। स्वामी जी ने योग साधना के द्वारा कुछ आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर ली थी।

घटनाक्रम

□ जून १८६६ में अजमेर में प्रार्थना समाज के बाबू श्यामलाल सिंह के घर से कुछ दूध लाया गया। स्वामी जी ने उसे ग्रहण करने से मना कर दिया और कहा यह दूध अनिच्छा से भेजा गया है। अत: मैं उनके परिवार में अनबन नहीं कराना चाहता। श्यामलाल सिंह ने जब इसे पहली बार सुना तो उन्हें आश्चर्य हुआ। परन्तु बाद में पता चला कि उनकी माँ ने साधु के लिए दूध भेजने पर आपत्ति की थी।

□ बुलन्दशहर में कोई नन्द किशोर स्वामी जी के लिए कुछ सब्जी लाये स्वामी जी ने उन्हें लेने से मना कर दिया। क्योंकि वह चोरी की थी, जब बहुत दबाव दिया गया तो स्वामी जी ने कहा कि आपने सब्जी तोड़ने से पहले मालिक से आज्ञा नहीं ली थी।

□ १८७७ में लाहौर में उन्होंने अपने एक शिष्य गणपत राम से कहा कि वह तीस वर्ष से अधिक नहीं जियेगा अत: उसे विवाह न करना चाहिए। गणपत राम ने विवाह न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। परन्तु उसके पिता ने उस पर दबाव डालकर विवाह कर दिया। २८ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। यह घटना गणपतराम के भाई ताराचन्द ने मुजफ्फरपुर में पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर को सुनाई थी।

□ एक दिन स्वामी जी ने अपने रसोईये से कहा कि तेरे पिता जी तुझे लेने आ रहे हैं। राजनाथ बाहर गया परन्तु वहां न तो उसके पिताजी थे न कोई और आधे घंटे बाद राजनाथ के पिता जी आ गये और उससे घर चलने को कहा।

□ एक दिल १८७२ में जब स्वामी जी कुछ लोगों के साथ बैठे थे, तो अचानक रूक कर बोले कोई विशेष घटना होने वाली है। थोड़े समय बाद एक व्यक्ति भोजन लाया और स्वामी जी से खाने को कहा, स्वामी जी ने वहां बैठे सभी लोगों से कहा कि यह भोजन विषैला है। स्वामी जी ने उस व्यक्ति से फिर कभी ऐसी हरकत न करने को कहा।

□ उदयपुर में १८८२ में स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने स्वामी जी को झील की सतह पर पानी के ऊपर बैठे देखा। एक बार उन्होंने स्वामी जी को २४ घंटे की समाधि लगाये देखा था।

□ अमृतसर में जब स्वामी जी वेद भाष्य लिख रहे थे तो अचानक कमरे से बाहर आये और अन्य सभी लोगों को भी कमरे से बाहर आने व कमरे का सभी सामान बाहर निकालने को कहा। लोग आश्चर्य चकित हो गये कुछ मिनटों बाद ही कमरे की छत गिर गयी।

□ उदयपुर में जब स्वामी जी के साथ महामहिम महाराणा उदयपुर स्वामी सहजानन्द व कुछ अन्य व्यक्ति बैठे थे। स्वामी जी ने अचानक कहा पं. सुन्दरलाल जी आ रहे हैं वह यदि पहले से कहते तो सवारी का प्रबन्ध कर दिया जाता। महाराणा ने कहा कि सवारी तो अभी भी भेजी जा सकती है। इस समय तो वह बैलगाड़ी में आ रहे हैं। एक बैल सफेद है दूसरे पर लाल धब्बे हैं। वह यहां कल पधारेगें। पं. सुन्दरलाल अगले दिन उदयपुर पहुँचे। उसी प्रकार की गाड़ी में जिसका वर्णन स्वामी जी ने किया था।

□ ३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर में मृत्यु से कुछ समय पूर्व स्वामी जी ने पं. सुन्दरलाल के विषय में पूछा जब उन्हें यह बताया गया कि वे नहीं आये हैं तो स्वामी जी ने कहा पं. सुन्दरलाल आये हैं, कुछ ही मिनटों में पं. सुन्दरलाल आ गये। ●

आर्य समाज में आते हैं तो

आर्य समाज में आते हैं तो खुद को आर्य कहना होगा,
कहने से न काम चलेगा आर्य स्वयं बनना होगा।
आर्य स्वयं बनना होगा, आर्य शब्द लिखना होगा,
जातिसूचक शब्द नाम से अब तुमको तजना होगा।
आर्य बनो, आर्यत्व अपना सबके सम्मुख झलकाओ,
आर्य समाजी कहो गर्व से, आर्य बनो औरों को बनाओ।
आर्य समाज से लगाव अगर है, स्वाध्याय नित किया करो,
आर्यानुकूल आचरण करके जीवन अपना जिया करो।
नहीं नित्य तो समय-समय पर हवन-यज्ञ भी किया करो,
आर्य बन्धुओं के सुख-दु:ख का हाल-चाल भी लिया करो।
डरो नहीं खंडन-मंडन से तर्क तुम्हारा बम है,
साथ चलो सत्यार्थ प्रकाश के किसमें उस-सा दम है ?
शास्त्रार्थ की जगह अगर तुम परस्पर भिड़े रहोगे,
सिद्धान्तों की रीढ़ टूटेगी, कैसे आर्य बनोगे ?
आर्य शब्द के जैसा कोई उत्तम शब्द नहीं है,
आर्य समाज के जैसी कोई संस्था अन्य नहीं है।
आर्य समाज की लहर चले, हम सब हों उसके दीवाने,
एक लक्ष्य निर्धारित कर लें, हमें है आर्य बनाने।
आर्य समाज में आने पर भी यदि बदलाव हुआ न,
समझो वैदिक ग्रन्थों का हमने स्वाध्याय किया न।
स्वाध्याय भी करके जीवन पहले जैसे जिया तो,
लाभ नहीं होगा उससे कुछ वैसा न अगर किया तो।

ओमप्रकाश आर्य
आर्य समाज,
रावतभाटा (राज.)
चलभाष
९४६२३ १३७९७

महान् बनो

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' -
६०२, जी. एच.-५३, सैक्ट. २०, पंचकूला
चलभाष : ०९४६७६०८६८६

मनुष्य अपने जीवन में महान् कैसे बन सकता है इस यक्ष प्रश्न का उत्तर हमें वेद ज्ञान से मिलता है । ऋग्वेद का मंत्र **अयमुष्य सुमहॉं अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः।** अर्थात् सुमहान् वही है जो १. **होता** २. **मन्द्रः** ३. **मनुषः** ४. **यह्वः** ५. **अग्निः** इन गुणों से परिपूर्ण है। इन गुणों की चर्चा से पूर्व हमें महानता के सामान्य अर्थ और कसौटी को समझना होगा।

सामान्य तौर पर बड़े होने को ही महान् होना समझ लिया जाता है। अंग्रेजी में दोनों को समानार्थक माना गया है और ग्रेट का अर्थ बड़े और महान् दोनों से किया जाता है। भाषाओं की जननी और विश्व की सबसे प्राचीन समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा संस्कृत और उसके निकटतम उसी देवनागरी लिपि से बनी हमारी मातृभाषा हिन्दी इस अंग्रेजी से कहीं अधिक व्यापक समृद्ध होने के कारण इस बड़े और महान् होने के अन्तर को स्पष्ट कर देती है। वेद की दृष्टि में तो ना कोई बड़ा है ना कोई छोटा। धन ऐश्वर्य से बड़ा होने पर कोई महान् नहीं हो सकता। महानता की कसौटी पर समय और समाज मनुष्य को कसता है। कोई भी व्यक्ति यदि स्वयं को खुद ही स्वयंभू बनकर महान् घोषित कर देता है तो वह महान् नहीं कहलाता अपितु वह तो आत्म मुग्धता से ग्रस्त एक अहंकारी मात्र है और अहंकार या अभिमान एक ऐसा अवगुण है जो किसी गुण से पैदा होता है और फिर सबसे पहले उसी गुण को खा जाता है। जैसे ज्ञान का अभिमान ही सबसे बड़ी अज्ञानता है। अर्थात् वही मनुष्य महान् है जिसे समय और समाज महान् कहे ना कि वह जो खुद को महान् घोषित कर दे।

आइये अब महानता के पांचों लक्षणों पर चर्चा करते हैं। प्रथम लक्षण है **होता** जिसका अर्थ है वह याज्ञिक जो अग्निष्ठ होकर ज्योति व प्रकाश का प्रादुर्भाव करता है। होता एक कर्म कुशल कर्मयोगी होता है और प्रत्येक संस्था में होता के होने से ही सब कुछ होता है और नहीं होने से कुछ नहीं होता। यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठतम कर्म करते हुए समय की आवश्यकताओं के अनुसार दिव्यताओं का सृजन, सत्कार, संगतिकरण करता हुआ जब सर्वस्व समर्पित कर देता है तब वह होता के रूप में जाना जाता है। होता केवल आह्वाता यानि आह्वान करने वाला ही नहीं अपितु वह परमपिता परमेश्वर को अंगीकार करने वाला आदाता और समाज, राष्ट, विश्व के हित के लिए सर्वस्व दान करने वाला दाता भी होता है।

सुमहानता दूसरा लक्षण **मन्द्रः** अर्थात् आनन्दवृति वाला होना। आनन्द और सुख में अन्तर है आनन्द आत्मा का भोजन है जबकि सुख मनुष्य की मन:स्थिति पर निर्भर करता है। स्थिति अनुकूल होने पर सुख प्रतिकूल होने पर दु:ख होता है। जबकि आनन्द में मनुष्य का आत्मा आनन्द स्वरूप परमपिता परमेश्वर के आनन्द में निमग्न होकर नर्तन करने लगता है इसे ही उपासना भी कहते हैं। आनन्द की स्थिति में साधक साधना करते हुए साध्य देव ईश्वर को समर्पित होकर एकरूप हो जाता है। सामान्य अर्थ में जो मनुष्य अपने को सौंपे गए नियत कार्य में पूरी रूचि लेकर उसमें निमग्न होकर जय पराजय के भाव से मुक्त स्थितप्रज्ञ होकर प्रसन्नतापूर्वक कुशलता से उस कार्य को करता है वही आनन्द वृति वाला होता है।

महानता का तीसरा लक्षण है **मनुषः** अर्थात् मनुष्यता। वेद भगवान ने मनुर्भव कहकर हमें मनुष्य बनने का आदेश दिया। इससे स्पष्ट है कि मानव योनि में जन्म लेने के उपरांत भी मनुष्योचित गुणों को धारण करके ही हम मनुष्य बन सकते हैं। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने मनुष्य को परिभाषित करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखा **मनुष्य वह जो मननशील, विचारवान हो, सभी से स्वआत्मवत यथायोग्य व्यवहार करता हुआ निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण और दुष्टों को दंड देकर परोपकार के कार्य किया करे।** अब हमें आत्मविवेचन करते हुए खुद को इस कसौटी पर कसना है कि क्या हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं या फिर **मनुष्य रूपेण मृगाश्चरेति** हम मनुष्य के रूप में पशु बनकर फिर रहे हैं। मनुष्यता हम मनुष्यों का धर्म है यदि हम अपने धर्म मनुष्यता की रक्षा करेंगे तो निश्चित रूप से रक्षित धर्म हमारी रक्षा करेगा और यदि हम अपने धर्म मनुष्यता को मार देंगे तो यही मरा हुआ हमारा धर्म हमें मार देगा। यदि हम महान् बनना चाहते हैं तो पहले हमें मनुष्य बनना होगा ।

सुमहानता का चौथा लक्षण है **यह्वः** अर्थात् पवित्र विचार और विशाल ह्रदयता लिए महानता। इसीलिए ब्रह्मयज्ञ में साधक प्रार्थना करता है **ओं भूः पुनातु शिरसि** और **ओं महः पुनातु हृदये**। वस्तुतः महान् वही है जिसके विचार महान् हों, दिल महान् हो और कर्म महान् हों।

महानता का पांचवां लक्षण है **अग्निः** अर्थात् अग्निस्वरूप परमेश्वर की ज्योति से ज्योतिर्मय अन्तरात्मा। महान् वही है जिसके अन्दर आग है, प्रकाश है, ताप है, उत्साह है और जो स्वयं रोशन है वही दूसरों को रोशनी दे सकता है। मनुष्य की आत्मा सत्य का आग्रही है और सर्वान्तिर्यामी परमेश्वर सत्यस्वरूप सर्वज्ञ हमारी आत्मा में विराजमान हमारे सच्चे मित्र होकर सदैव हमें सत्य धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। महान् बनने के लिए आवश्यक है हम अग्निस्वरूप अन्तर्यामी ईश्वर से स्वयं प्रकाशित हों और आत्मा में उद्‌बुध अग्नि में यश अपयश की चिन्ता किए बिना आनन्दमय होकर सद्‌कर्मों की आहुति देते हुए सच्चे होता बनें तभी हम महान् बन सकते हैं।

भूल सुधार

विगत सितम्बर माह के अंक में पृष्ठ १५ पर **'गो माता पर बलिहारी है'** प्रकाशित किया गया था इसके प्रस्तुतकर्ता श्री मोहम्मद हुसैन शाह थे। आपका उत्साहवर्धन तथा साधुवाद देने के लिए आर्य जनों ने सम्पर्क किया होगा तो उन्हें निराशा हुई होगी क्योंकि आपका चलभाष क्रमांक का प्रथम अंक ७ के स्थान पर ९ प्रकाशित हो गया था। आपका वास्तविक चलभाष क्र. ७८६९०६१७३८ है त्रुटि के लिए खेद है।

महर्षि दयानन्द का समकालीन लेखकों पर प्रभाव

जांगिड गौरव - **देशराज आर्य** -
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
प्रधान-आर्य समाज, रेवाड़ी (हरि.)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

महर्षि दयानन्द सरस्वती को यदि विष द्वारा समाप्त नहीं किया गया होता तो वे सौ वर्ष से भी अधिक (समय तक) जीवित रहते। ब्रह्मचर्य के तप एवं योग साधना से उन्होंने अपने शरीर को वज्र के समान बना लिया था। यद्यपि वे ५९ वर्ष ही इस संसार में जीवित रहे परन्तु इस अल्पावधि में भी उन्होंने एक युग जितना महान कार्य कर दिखाया। वे मथुरा में गुरु विरजानन्द जी के पास लगभग ३६ वर्ष की आयु में अपनी अतृप्त ज्ञान-पिपासा शान्त करने तथा सत्य विद्या गृहण करने हेतु पहुँचे तथा तीन वर्ष तक वहां अनन्त श्रद्धा भाव से गुरुसेवा करते हुए अपने गुरु से (८१ वर्ष तक संचित समस्त गुरु शिक्षा) ज्ञान लेकर संसार से अन्धविश्वास, अन्धकार और अन्याय समाप्त करने का सन्देश लेकर ३९ वर्ष की आयु में कार्यक्षेत्र में उतरे। प्रारम्भ में तीन चार वर्ष तक वे गुरु विरजानन्दजी से पत्रव्यवहार और भेंट करके मार्गदर्शन भी लेते रहे। परन्तु अन्त में १५,१६ वर्षों में महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन को पूर्ण रुप से मानव कल्याण तथा जन हितार्थ अर्पित कर दिया था। अब उन्हें न भोजन की चिन्ता थी और न आराम की। जैसे-जैसे वे अज्ञात अन्त समय की तरफ जा रहे थे, वैसे-वैसे ही वे एक-एक क्षण का सदुपयोग पाखण्ड खण्डन, समाज सुधार, सत्यार्थ प्रकाश एवं संस्कार विधि आदि ग्रन्थ लेखन, आर्य समाज का गठन तथा मुख्य रूप से वेद भाष्य के कार्य में व्यस्त हो गए थे।

वेदों के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा थी तथा वे चाहते थे कि चारों वेदों का भाष्य अपने जीवन काल में ही पूरा कर जाएं। उन्होंने **भ्रांति निवारण** पृष्ट ४ पर लिखा है कि **''परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला की वेद भाष्य पूर्ण हो जाए तो निसन्देह इस आर्यवर्त्त देश में सूर्य का प्रकाश हो जावेगा कि जिस के मेटने और झांपने को किसी का सामर्थ्य ना होगा। क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं की जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके।''** सम्भवतया अन्य ऋषियों, मुनियों एवं पुण्यात्माओं की भान्ति महर्षि दयानन्द को भी अपने अन्त समय का आभास हो गया लगता था। सन् १८७५ से १९८३ तक के समय में उनका जीवन योग तथा परमात्मा की असीम कृपा से दिव्य प्रकाश से महान तेजस्वी बन गया था। उस समय जिस किसी ने भी महर्षि के दर्शन किए या उनके उपदेश सुनें उनका जीवन परिवर्तन हो गया।

महर्षि केअन्तिम ८ वर्षों केजीवन काल से आर्य समाज के लोग तो उनसे प्रभावित थे ही, बल्कि आर्य समाजी नहीं होते हुए भी उनके समकालीन अन्य महामानवों पर भी उनके दिव्य तेज का प्रभाव छाया हुआ था। बेशक उन्होंने महर्षि दयानन्द या आर्य समाज का कहीं नाम ना लिया हो। महर्षि के समकालीन श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी भी (जन्म १८३८ मृत्यु १८९४) ५६ वर्ष ही जीवित रहे। वे १८५८ में पश्चिमी बंगाल के डिप्टी-मजिस्ट्रेट बने तथा १८९१ में मजिस्ट्रेट बनकर सेवानिवृत्त हुए। बंकिम चन्द्र जी ने १८६५ से साहित्य रचना प्रारम्भ की तथा उन्होंने १८९४ अन्त समय तक ३१ पुस्तकें लिखी। यहां उनकी दो पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, (१८८२ में लिखा आनन्दमठ उपन्यास तथा १८८६ में लिखा कृष्ण चरित्र जिन पर महर्षि दयानन्द के जीवन तथा प्रचार-प्रसार का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा लगता है) प्रस्तुत करता हूँ। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि - श्री कृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों के सदृश देखो श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अतियुत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों से सदृश जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी नहीं किया। श्री बंकिम चन्द्र जी ने भी ऋषि दयानन्द की बात का पक्ष किया तथा श्री कृष्ण जी महाराज पर जो आक्षेप किये गये हैं उनको निर्मूल, निराधार और अप्रमाणित बतलाया है। उन्होंने श्री कृष्ण के मानवी चरित्र की समालोचना का कदम उठाया है। उन्होंने महाभारत के प्रक्षिप्त अंशों और पुराणों की अविश्वसनीय मनगढ़न्त कथाओं को अनुपयुक्त बतलाया है। उन्होंने कृष्ण को अवतार न मानकर इंसानों में श्रेष्ठ व महान इंसान माना है। बंकिम चन्द्र के इस चिन्तन का कारण निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द का प्रभाव रहा होगा।

बंकिम चन्द्र की दूसरी पुस्तक जिस पर भी महर्षि की जीवन शैली का प्रभाव मालूम पड़ता है वह है १८८२ में लिखा **'आनन्दमठ'** उपन्यास। इस पुस्तक का कथानक पात्र चरित्र चित्रण वैदिक परम्परानुसार दर्शाया गया है। कथानक में आनन्दमठ के संस्थापक ब्रह्मचारी सत्यानन्द है तथा उनके सहयोगी भावानन्द तथा जीवानन्द हैं। अन्य कार्यकर्ताओं में धीरानन्द, नवीनानन्द और ज्ञानानन्द है जिन्होंने सन्तान बनने के महामंत्र से दीक्षा ली है। उनका उद्देश्य अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने का है। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने समाज सुधार के लिए राजा महाराजाओं को शिक्षित किया उसी प्रकार आनन्दमठ में भी ब्रह्मचारी सत्यानन्द ने वैसा ही कार्य एक छोटे से जागीरदार श्री महेंद्र सिंह और उनकी धर्मपत्नी कल्याणी को मन्त्र दीक्षा देकर सन्तान बना कर कराया है। जंगल में प्रथम परिचय होने के बाद भावानन्द, महेंद्र सिंह के सामने सन्तान द्वारा गाया जाने वाला मंगल गीत **''वन्दे मातरम्''** गाता है। इसी आनन्दमठ में ही वन्दे मातरम् का पूरा गीत बंकिम चन्द्र जी ने प्रथम बार लिखा जो अब सारे राष्ट्र का मान-सम्मान का गीत बन चुका है। यहां भावानन्द **''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''** कहकर अपनी जन्मभूमि को ही मां कहकर स्वर्ग से बढ़कर बताता है।

मठ में रहने वाले सभी सन्तान ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए मातृभूमि की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहते हैं। उस

समय भीषण अकाल की स्थिति है परन्तु जंगल में स्थित मठ में उनके लिए भरपूर भोजन उपलब्ध। मठ में अनेक गायें हैं जिनका दूध सन्तान सेवन करती है। इस पुस्तक को पढ़ने से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि इसका कथानक, पात्र, जीवन चरित्र तथा मठ के उद्देश्य, महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरित है। सन्तानों के नाम के साथ आनन्द मठ, ब्रह्मचारी, गौ का दूध सेवन करना और राष्ट्र भक्ती का गीत वन्दे मातरम् सन्तान द्वारा गाया जाना आदि सब प्रसंग महर्षि की जीवन शैली से ही प्रेरित लगते हैं। बंकिम चन्द्र जी की अन्य पुस्तकों में कुछ-कुछ सुधारवादी दृष्टिकोण की पुष्टि होती है।

महर्षि दयानन्द के समकालीन दूसरे महान समाज सुधारक पं. ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी हैं। उनका जन्म १८२० तथा मृत्यु १८९१ में हुई तथा वे भी बंगाल के रहने वाले थे। पं. विद्यासागर का जीवन भी सादगी, सदाचार तथा परोपकार से परिपूर्ण था। इन्होंने भी महर्षि दयानन्द या आर्य समाज का कही संकेत नहीं किया परन्तु प्रेरणा महर्षि से ही ली है। इन्होंने स्त्री जाति के उद्धार हेतु महान् कार्य किया। यद्यपि सती होने की कुप्रथा तो राजा राममोहन राय ने १८३३ में इंग्लैंड में कानून बनाकर बन्द करवा दी थी परन्तु बहु विवाह, वृद्ध विवाह की प्रथा यथावत थी। अत: पं. विद्यासागर ने समाज में विद्यमान इन दोनों प्रथा को समाप्त करने का महान् कार्य किया, साथ ही उन्होंने विधवा विवाह का भी पूरी लगन तथा निष्ठा से समर्थन किया। पं. विद्यासागर जी ने लिखा है कि कुलीनता के बल पर अस्सी-अस्सी वर्ष की आयु में पुरुषों द्वारा कम आयु की अनेक लड़कियों से विवाह करने तथा सबसे अधिक विवाह करके अपनी कुलीनता की रक्षा करने का चलन था, उन्होंने एक दृष्टान्त दिया कि एक ५५ वर्ष का पुरुष ७० विवाह कर चुका था। उन्होंने वेरीसाल जिले में कलसकारी गांव का उदाहरण दिया जहां ५५ वर्ष का एक सज्जन १०७ विवाह कर चुका था। अत: पं. विद्यासागर ने भी वृद्ध विवाह एवं बहु विवाह का निवारण तथा विधवा विवाह का समर्थन महर्षि के सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव से ही किया होगा। महान आत्माओं का प्रभाव सहज भाव से सभी पर पड़ता है। जिस प्रकार प्रकाश से दूर तक भी प्रकाश का आभास होता है उसी प्रकार देव तुल्य महापुरुषों का भी सद्जनों और महापुरुषों पर प्रभाव पड़ता है तथा वे उससे प्रेरित होकर समाज सुधार का कार्य करते हैं। जिस प्रकार हम ईश्वर की प्रेरणा से कोई अच्छा कार्य करते हैं परन्तु उसका कहीं जिकर नहीं करते, वैसा ही प्रभाव महर्षि दयानन्द सरस्वती का अपने समकालीन समाज सुधारकों तथा लेखकों पर रहा होगा। ●

यज्ञोपवीत् का रहस्य

-डॉ. सत्यदेव सिंह -
५०७- गोदावरी ब्लाक
अशोक सिटी, गोवर्धन चौक, मथुरा
चलभाष - ९९९७९८९९६३, ८६३०५०६१०५

किसी भी देश का मौलिक साहित्य ही राष्ट्र का प्राण होता है, राष्ट्र निर्माण अथवा राष्ट्र की स्वतंत्रता उस राष्ट्र के मौलिक साहित्य अर्थात् उसके मूल सूत्रों पर निर्भर करती है। सूत्र शब्द से प्रकृत में **'यज्ञोपवीत्'** ही अभिप्रेत है। यज्ञ का उपवीत ही यज्ञोपवीत् है। यज्ञोपवीत् हमारा ध्यान आध्यात्मिक यज्ञ, आधिदैविक यज्ञ, आधिभौतिक यज्ञ इन तीन संस्थाओं की ओर आकर्षित करता है। इसलिए यज्ञोपवीत् के मौलिक स्वरूप परिचय से पूर्व **'यज्ञ'** शब्द का अर्थ जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। वेद विज्ञान में किसी भी दो वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध दो प्रकार से बतलाया गया है। प्रथम साधारण सम्बन्ध, जिसे कि **'योग'** नाम से तथा द्वितीय सम्बन्ध अंतर्याम सम्बन्ध जिसे **'याग'** कहा जाता है। शरीर के साथ वस्त्रों का जो सम्बन्ध होता है, उसे योग सम्बन्ध कह सकते हैं एवं शरीराग्नि के साथ भुक्त अन्न का जो सम्बन्ध है, उसे **'याग'** सम्बन्ध के रूप में समझा जा सकता है। इसे ही दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि, दो विजातीय वस्तुओं का रासायनिक संयोग ही **'याग'** सम्बन्ध कहलाता है। उदाहरणार्थ बारूद को लेते है- सोरा और कोयला के रासायनिक सम्बन्ध से बारूद बना करती है। यही याग सम्बन्ध **'यज्ञ'** कहलाता है।

सृष्टि का प्रत्येक प्रदार्थ यज्ञीय प्रक्रिया का ही परिणाम है, यज्ञ पर ही प्रतिष्ठित है और अंत में उन पदार्थों का विलयन यज्ञ में ही हो जाता है। अत: कह सकते हैं कि यज्ञ-विद्या वेद-विज्ञान की वह विद्या है जिसे वर्तमान भौतिक विज्ञान रसायन शास्त्र कहता है। जिन मौलिक तत्वों के समन्वय से यज्ञ का स्वरूप निष्पन्न होता है, वही मौलिक तत्व ब्रह्म (फिजिक्स) से प्रसिद्ध है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि ब्रह्म ही यज्ञ की प्रतिष्ठा है। अर्थात् वर्तमान परिभाषा में फिजिक्स ही केमिस्ट्री की आधार भूमि है। यज्ञ सम्बन्ध के स्वरूप सम्पर्क तत्वों को ऋषियों ने अग्नि व सोम इन दो तत्वों के अंतर्भाव ही माना है। वैदिक परिभाषानुसार अग्नि **'दाहक तत्व'** है तो वही सोम **'दाह्य तत्व'** है। इन्हीं अग्नि-सोम का समन्वय **'यज्ञ'** कहलाता है।

सौर जगत् आधिदैविक जगत् है इसकी प्रतिष्ठा सौर अग्नि- चान्द्र सोम है। दाम्पत्यभाव आध्यात्मिक जगत् है, इसकी प्रतिष्ठा स्त्री के गर्भाशय में प्रतिष्ठित अग्निमूर्ति शोणित (रुधिर) एवं पुरुष में प्रतिष्ठित सोममूर्ति शुक्र है। पार्थिव जगत् आधिभौतिक जगत् है। इसकी प्रतिष्ठा पार्थिव भूताग्नि एवं औषाधि रूप सोम है। इस प्रकार से तीनों में ही **'अग्निषोमात्मक यज्ञ'** का ही साम्राज्य दृष्टव्य है। इसी अग्निषोमात्मक यज्ञ की व्यापकता बतलाते हुए भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं -

सहयज्ञा प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ।। -अध्याय-३, श्लोक १०

इसी नित्य सिद्ध त्रिधाविभक्त प्राकृतिक यज्ञ के आधार पर ही उन वैज्ञानिकों (आर्ष ऋषियों) ने यज्ञ का आविष्कार किया था जो यज्ञ-पद्धति-विज्ञान (मौलिक उत्पत्ति) पुर: सर वेद के कर्मकाण्ड प्रधान ब्राह्मण ग्रंथों में निरूपित हुई है, वही यज्ञ विद्या भारत वर्ष का मूल प्राण है। इस सर्वफल प्रदात्री

यज्ञ विद्या को समझाने के लिए सौर यज्ञ को ही देखते हैं।

सौर परिवार से संबंधित 'अग्नि-सोम' दोनो ही सत्य ऋतु नामक दो भागों में विभक्त है। इनमें से जो पदार्थ शरीर युक्त है, अर्थात् केन्द्र है वही सत्य है तथा अशरीरी-अकेन्द्रीय पदार्थ ऋत् है। इन्हीं लक्षणों के अनुसार अग्नि प्रधान सूर्य सत्य पदार्थ हुआ अर्थात् वह सत्याग्नि पिण्ड कहलाया। इसीं तरह से सोमयुक्त चन्द्रमा सत्यसोम पिण्ड कहलाया। '**सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्**' इस वैदिक सिद्धांतानुसार सूर्य-चन्द्रमा ही विश्व के माता-पिता कहलाये है। सत्य सूर्य और सत्यसोम में से निरन्तर अग्निसोम प्रवर्ग्य (ब्रह्मौदन का जो भाग इससे पृथक हो जाता है उसे वैदिक भाषा में प्रवर्ग्य या उच्छिष्ट कहा जाता है। उसी से सब पिण्डों का निर्माण होता है) रूप से पृथक् होते रहते हैं। जो सौर अग्नि सूर्य पिण्ड से पृथक होकर वायु में प्रतिष्ठित हो जाता है उसी के संबंध से ग्रीष्म ऋतु में रात्रि के समय वायु गरम बन जाता, यही बिखरा हुआ वायु (केन्द्र शून्य) अग्नि ही ऋताग्नि कहलाता है। ऋतवायव्यग्नि दक्षिण दिशा में प्रतिष्ठित होकर निरन्तर उत्तर दिशा की ओर तथा ऋतु वायव्य सोम उत्तर दिशा में प्रतिष्ठित होकर दक्षिण दिशा की ओर जाया करता है। इन्हीं अग्निषोमात्मक ऋत् प्रधान ऋताग्नि सोमों के समन्वय से ही '**ऋतु**' भाव उत्पन्न होता है। ऋतु के आधे पर्व में अग्नि एवं आधे पर्व में सोम का साम्राज्य होता है। संवत्सर के कालात्मक किसी एक प्रदेश (भाग) में केवल सोम का ही साम्राज्य है। अब क्रमशः प्रकृति में अग्नि कणों का प्रवेश होता है। उस समय प्रवृद्धशील यानि सोम में अग्नि सुहावना लगने लगता है। यही भाग तो अग्नि का माधुर्य भाग है। यही '**यस्मिन् काले अग्नि कणाः पदार्थेषु वसन्तो भवन्ति स कालो वसन्त**' निर्वचन के अनुसार अग्नि के इस जन्मकाल को ही वसंत कहा जाता है। आगे जाकर अपनी युवावस्था में अग्नि विशेष रूप से पदार्थ को ग्रहण करता है अतः '**अतिशयेनाग्नि पदार्थान्गृहणाति तदुपलक्षितः कालो ग्रीष्मः**' के मतानुसार यह अग्नि '**ग्रीष्म**' नाम से प्रसिद्ध है। इसके आगे अपने विकास की चरम सीमा में पहुंच कर अग्नि पानी का रूप धारण कर लेता है। अदाहरणार्थ अत्यन्त शोकाग्नि ही अश्रु का कारण है, वहीं पर अत्यन्त परिश्रमाग्नि पसीने का कारण बनता है।

चतुर्वेद शतकम् यज्ञ एवं वैदिक सत्संग

दिनांक : २ से ६ नवम्बर २०१८ तक

स्थान : २९-ए, गंगा सागर कालोनी, बाल्टी फैक्ट्री के सामने, आगरा रोड़, जयपुर (राज.)

आमन्त्रित विद्वान

यज्ञ ब्रह्म - पं. रविदत्त जी शास्त्री. जयपुर

भजनोपदेशक - प. भूपेन्द्र जी आर्य

समस्त धर्मनिष्ठ आर्यजन सादर आमंत्रित है।

आयोजक एवं निवेदक

आर्य मूलचन्द शर्मा 'जांगिड'

चलभाष : ९४१३४ ७७२३८

वेद-विज्ञान में तो '**अग्रेरापः**' नामक सर्वमान्य सिद्धान्त है। अग्नि की यह विकासमान चरमावस्था ही पानी है। अतः '**यस्मिन् काले अग्निर्वर्षीयान् भवति स कालो वर्षाः**' के अनुसार अग्नि का यह विकसित रूप (अवस्था) ही वर्षा नाम से व्यवहृत होती है। वसंत-ग्रीष्म-वर्षा तीनों ही ऋतुयें ऋताग्नि प्रधान हैं। इनमें क्योंकि अग्नि ही देवता है अतएव इन तीनों ऋतुओं को भी हम देवता कह सकते हैं।

अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच कर अग्नि अब क्रमशः क्षीण होने लगता है। इसी प्रारंभिक अवस्था को '**यस्मिन् काले अग्निकरणः शीर्ण भवन्ति स कालो शरत्**' के अनुसार '**शरत्**' कहा गया है। आगे जाकर जब अग्नि और भी हीनभाव को प्राप्त करता है तब उसे '**यस्मिन् काले अग्निकणाः हनितांप्राप्ता भवन्ति स कालो हेमन्तः**' के अनुसार '**हेमन्त**' कहा गया है। सर्वान्त में अग्नि जब बिल्कुल क्षीण हो जाता है तो उसे '**पुनः पुनरतिशयेन यास्मिन् काले अग्नि कणाः शीर्ण भवन्ति स कालो शिशिरः**' के निर्वाचन से '**शिशिर**' कहा जाता है। अग्नि की क्रमशः पतनावस्था शरत्, हेमन्त्, शिशिर तीनों ही सोमभाव प्रधान हैं। सोम ही पितर है, अतः तीनों सौम्य ऋतुओं को पितर भी कहा जाता है। यही अग्नि-सोममय ६ ऋतुओं का समन्वित रूपाभाव ही संवत्सर यज्ञ कहलाता है। यही विश्व का उपादान भूत यज्ञ पुरुष है।

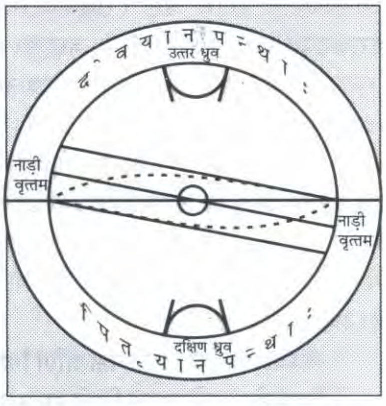

सौर संवत्सर यज्ञ-प्रतिकृति

सम्वत्सरात्मक यज्ञ पुरुष के उत्तरायण-दक्षिणायन विषुवद्-वृत्त भेद से तीन प्रधान पर्व है। उत्तरायण देव-अग्नि प्रधान तथा दक्षिणायन पितृ सोम प्रधान है। इसलिए ही षाण्मासिक उत्तरायण को देवताओं का '**दिन**' तथा षाण्मासिक दक्षिणायन काल को देवताओं की '**रात्रि**' कहा जाता है। संवत्सर के तीनों पर्व क्रमशः देव-पितर-मनुष्य नामक प्रजा सृष्टियों के प्रवर्तक हैं। इन तीनों पर्वो का संचालन सूर्य के द्वारा होता है जो कि स्वयं विषुवद वृत्त के केन्द्र में प्रतिष्ठित रहते हैं। चन्द्रमा का सूर्य के साथ नित्य सम्बन्ध रहता है तथा भूपिण्ड सूर्य को केन्द्र में रखता हुआ जिस नियत मार्ग से सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करता है वहीं नियत मार्ग (भूपरिभ्रमण मार्ग) '**क्रांतिवृत्त**' कहलाता है (मकर संक्राति पर्व सृष्टि विद्या की इसी स्थिति का द्योतक है।) यही क्रांतिवृत्त वह छन्दोमय सूत्र है जिसके द्वारा संवत्सर यज्ञ पुरुष सीमित रहता है। अतः क्रांतिवृत रूपी इस सूत्र को '**यज्ञ सूत्र**' भी कहा जाता। है। यहां ध्यान देने योग्य यह है इसी क्रातिवृत्तात्मक यज्ञ-सूत्र के भीतर ही उत्तरायण-दक्षिणायन विषुवद भेद से तीन अवान्तर पर्व बतलाये गए हैं। यही तीनों पर्व क्रमशः यज्ञ सूत्र के तीन अवान्तर सूत्र हैं। इन तीनों अवान्तर सूत्रों की समिष्टि से ही महायज्ञसूत्र का स्वरूप निष्पन्न होता है।

सौर संवत्सर यज्ञ के साथ चन्द्रमा के भी सम्बन्ध को बतलाया गया है।

चन्द्रमा का चन्द्र परिभ्रमण वृत्त '**दक्षवृत्त**' नाम से जाना जाता है। इसे '**चन्द्ररथ**' भी कहा जाता है। इस चन्द्ररथ के तीन पहिये माने जाते हैं। नक्षत्र मोक्ता, अतएव '**उडुपति**' नाम से प्रसिद्ध चन्द्रमा द्वारा यज्ञसूत्रात्मक नक्षत्र ग्रहावच्छिन्न संवत्सर मण्डल के परिभ्रमण के दौरान यज्ञात्मक संवत्सर यज्ञ में प्रतिष्ठित नक्षत्र मार्गों के अवान्तर तीन मार्गों की कल्पना की गई है। जिन्हें क्रमशः '**एरावत मार्ग**' '**जरद्गवमार्ग**' एवं '**वैश्वानर मार्ग**' कहा जाता है। इन्हें दूसरे शब्दों में क्रमशः **हाथी- बूढ़े बैल-बकरे का मार्ग** भी कहते हैं। जिस तरह से उत्तरायण-दक्षिणायन-विषुवद् के क्रमानुसार यज्ञ सूत्र त्रिपट माना जा सकता है। आकाशात्मक संवत्सर यज्ञ के इन तीनों मार्गों के विषय में व्यास मुनि कहते हैं-

'सर्वग्रह्यणा त्रीण्येव स्थानानि द्विज सत्तम।
स्थानं जरद्गवं मध्ये तथैरावतमुत्तरम।
वैश्वानरं दक्षिणतो निर्दिष्टमिज्ञ तत्वतः।।

इन तीनों प्रधान नाक्षत्रिक (एरावत-जरद्गव-वैश्वानर) मार्गों के प्रत्येक के आगे जाकर तीन-तीन वीथियां (क्षुद्रमार्ग या गलिया) हो जाती हैं। उत्तराकाशस्थ ऐरावत मार्ग (राजमार्ग सड़क) में **नागवीथी, गजवीथी, ऐरावतवीथी** व मध्याकाशस्थ जरद्गव मार्ग में आर्ष, वीर्ना, गोवीथी, जरद्गववीथी तथा दक्षिणाकाशस्थ वैश्वानर मार्ग में- अजवीथी. मार्गीवीथी वैश्वनरीवीथी नामक वीथिएँ मानी गई हैं। इस प्रकार से तीन मूल संभूय मार्गों में ९ (नौ) वीथिएँ (गलियां) हो जाती हैं। इनमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन तीन मार्गों के (त्रिसूत्रों के) त्रिवीथिरूप अवान्तर तीन-तीन सूत्र और भी प्रतिष्ठित होते हैं। सौर हिरण्मयकरण क्रांतिवृत्त के सम्बन्ध से जहाँ तक एक चक्र कहलाया है, वहाँ पर चान्द्ररथ उक्त मार्गों के सम्बन्ध से त्रिचक्र कहलाया है। आप्त पुरुष कहते हैं -

वीथ्याश्रयाणि चरति नक्षत्राणि निशाकरः।
त्रिचक्रोभयतोश्वश्च विज्ञेयस्तस्य वै रथः।। - लिंग पु. छ.पू.अ.

आगे जाकर नक्षत्रों के अवान्तर भेद के द्वारा ही प्रत्येक वीथिसूत्र में तीन-तीन नाक्षत्रिक सूत्रों के और जुड़ जाने से संभूय ९ (नौ) वीथियों के तीन -तीन क्रम से २७ अवान्तर नाक्षत्रिक सूत्र स्वतः सिद्ध हो जाते हैं।

२७ अवान्तरतम स्त्रात्मक, ९ अवान्तरतम सूत्रात्मक, ३ अवान्तरतम सूत्रात्मक संवत्सर मंडलात्मक यज्ञ सूत्र से ही अपने प्रातः सवन (प्रातःकाल, माध्यन्दिन सवन (दोपहर)सायं सवन (सायंकाल) रूपी तीनों सवनों से क्रमशः ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य नामक तीन वर्णों का भी उदाहरण बनते हैं। प्रातः सवन अष्टाक्षर '**गायत्री छन्द**' से, माध्यन्दिन एकादशाक्षर '**त्रिष्टुप छन्द**' से एवं सायं सवन द्वादशाक्षर '**जगती छन्द**' से छन्दित (सीमित-परिच्छिन्न) रहता है। ऐसी दशा में निष्कर्ष यह निकलता है कि ब्राह्मण योनि में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति में गायत्री के आठ अक्षरों के सम्बन्ध में आठवें वर्ष में विकास होता है, इसीलिए ब्राह्मण का यज्ञोपवीत् संस्कार आठवें वर्ष में विहित माना गया है। क्षत्रिय योनि में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति में त्रिष्टुप के ११ अक्षरों के सम्बन्ध में ११ वें वर्ष में विकास होता है, अतएव क्षत्रिय का यज्ञोपवीत् संस्कार ११ वें वर्ष में विहित है। वैश्य योनि में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति में जगती छन्द् के १२ अक्षरों के सम्बन्ध में १२ वें वर्ष में विकास होता है, अर्थात् वैश्य का यज्ञोपवीत् संस्कार १२ वें वर्ष में विहित है।

प्रत्येक द्विजाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) मौलिक यज्ञ पर्वों के अनुसार क्रमशः गायत्री-त्रिष्टुप-जगती छन्द से युक्त होकर ही धरातल पर अवतीर्ण होता है। गुण-कर्म से जाति का परिवर्तन नहीं होता है। प्रकृति (जाति) और संस्कार दोनों के समन्वय से वर्ण का स्वरुप सुरक्षित रहता है। इसी आधार पर तो महर्षि वशिष्ठ ने '**प्रकृति विशिष्टं चातुर्वर्ण्यं संस्कार विशेषाच्च**' यज्ञ कहा है। इसी नित्य सिद्ध वर्ण व्यवस्था को लक्ष्य में रखकर श्रुति कहती है -

गायत्रया ब्राह्मणं निरवर्त्तयत् त्रिष्टुभा राजन्यं
जगत्या वैश्यं न केनचिच्छन्दसा शूद्रं निरवर्त्तयत्।

अपने गायत्र-त्रिष्टुप-जागत स्वरूप के लिए १६ स्मार्त संस्कार, ३२ श्रौत संस्कार एवं संभूय ४८ संस्कार अपेक्षित हैं। संस्कारों से ही संस्कृत द्विजाति साक्षात् आधिदैविक संवत्सर यज्ञप्रजापति की प्रतिमा है। संस्कार संस्कृत द्विजाति यज्ञ प्रजापति की जीवित प्रतिमा बनाता हुआ, विज्ञान के माध्यम से सब कुछ करने में समर्थ है, इसी आधार पर भगवान याज्ञवल्क्य ने '**ब्राह्मविद्यया ह वै सर्व भविष्यन्तो मन्यन्ते मनुष्यः**' कहा है। इसी सर्व विद्या भाव की सूचना के लिए द्विजाति का यज्ञोपवीत् संस्कार किया जाता है। यज्ञोपवीत् इस बात का सूचक है कि अमुख वर्ण, अमुख छन्द से युक्त है एवं भविष्य में यह अपने आत्मदेवता के बल पर प्राकृतिक विज्ञान पर अधिकार करते हुए समाज, राष्ट्र, विश्व के कल्याण का साधन बनेगा।

प्राकृतिक यज्ञ पुरुष में उत्तरायण का सम्बन्ध देवताओं के साथ, दक्षिणायन का सम्बन्ध पितरों के साथ एवं विषुवद् का सम्बन्ध मनुष्यों के साथ बतलाया गया है। विषुवद् वृत्त ही हमारे शरीर का मेरूदण्ड (रीढ़ की हड्डी) बनता है। इससे दक्षिण का भाग दक्षिणगोल एवं उत्तर का भाग उत्तरगोल है तथा स्वयं मेरुदण्ड विषुवद् है। यहां ध्यान देने योग्य बात है कि सूर्य की व्याप्ति २४ अंश तक है। २४ अंश दक्षिण परमक्रांति है, २४ अंश उत्तर परम क्रांति है। यही क्रांति भाव ही पर्शु (पसलियों) का उपादान है। क्योंकि क्रांति का परम भाव २४ पर ही समाप्त हो जाता है । अतः पंसलिया भी २४ ही होती । परम क्रांति पर पहुचने के बाद पृथ्वी की गति अर्वाचीन हो जाती है, इसलिए ही तद्गति सम पर्शु (पसलिया) भी सीधे न जाकर मुड जाती है। उत्तर गोल सूर्य का दक्षिणायन है, दक्षिण गोल में सूर्य का उत्तरायण है, वामस्कन्ध उत्तर गोल है, यहां दक्षिणायन काल है, दक्षिणस्कन्ध दक्षिण गोल है, यही उत्तरायण काल है। जैसी स्थिति में यज्ञ सूत्र हमारे शरीर पर प्रतिष्ठित रहता है, इस स्थिति का उत्तरायण स्थिति में सम्बन्ध है यह **देवभाव** है। पितृ-कर्म में दक्षिण कंधे पर यज्ञसूत्र डाल लिया जाता है, यही दक्षिणायन काल का द्योतक है, यही **पितृभाव** है। मालावत् यज्ञसूत्र (जनेऊ) को गले में डाले रखना **मनुष्यभाव** है। हमारा यज्ञसूत्र (जनेऊ) क्रांतिवृत्त , यज्ञसूत्र के अवान्तर तीन सूत्र उत्तरायण, दक्षिणायन, विषुवद् अर्थात् देव-पितृ-मनुष्यभाव अर्थात् ऐरावत मार्ग-जरद्गव मार्ग-वैश्वानर मार्ग-इन पर्वों के सूचक हैं। प्रत्येक सूत्र में रहने वाले तीन-तीन सूत्र उक्त चान्द्र ९ वीथियों (गलियों) के सूचक हैं। पुनः प्रत्येक सूत्र में रहने वाले ३-३ तन्तु अश्विनी आदि नक्षत्रों के द्योतक हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारा यज्ञसूत्र आधिदैविक जगत् की वास्तव में प्रतिमा बन जाता है। यही है यज्ञोपवीत् की उत्पत्ति एवं उसका मौलिक रहस्य। ●

शीतल जल के स्नान से भगवान जगन्नाथ बीमार
केसर-चन्दन का लेप लगाकर काढ़ा पिलाया

दैनिकभास्कर
दिनांक ३० जून २०१८ शनिवार

नर्मदा तट स्थित जगन्नाथधाम मन्दिर में विराजित भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र व बहन सुभद्रा गुरुवार पूर्णिमा पर नर्मदा के शीतल जल से हुए अभिषेक से बीमार हो गए। इसलिए गुरुवार शाम ही मन्दिर के पट बन्द कर दिए गए। भगवान

का विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों से काढ़ा बनाकर एवं विभिन्न प्रकार के चन्दन का लेप लगाकर इलाज किया जा रहा है। १५ दिन बाद भगवान स्वस्थ होकर जगन्नाथ रथ यात्रा के रुप में नगर भ्रमण के लिए निकलेंगे।.....

प्रतिक्रिया :

दिनांक ३०/०६/२०१८ को प्रकाशित समाचार के सन्दर्भ में

"सामयिक अंधविश्वास का नजारा"

- डोंगरलाल पुरुषार्थी -
प्रधान-आर्य समाज, कसरावद
जिला- खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९० ५९०९९

मिथ्या चिकित्सा का प्रत्यक्ष दृष्टांत

यह कलयुग है सब जानते हैं, यह कलयुग है।
विद्या क्या है? मिथ्या क्या है? ये कुछ ही जानते हैं।।

विश्व के पुस्तकालय में प्राचीनतम धर्म-ग्रन्थ ऋग्वेद है। जिसकी रचना अग्नि ऋषि द्वारा हुई। वेद का शाब्दिक अर्थ "**यथार्थ ज्ञान**"। वेद में विद्या और अविद्या का व्यापक समावेश है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के आठवें नियम में "**अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए**" प्रतिपादन किया है। इसी नियम के तहत मनुष्यों में ढोंग-पाखण्ड, आडम्बर, पोपलीला का निवारण होकर सुक्ति- "**सा विद्याया विमुक्तये**" अर्थात् सुख की प्राप्ति सम्भव है। अगर आर्य समाज दौड़ता है तो अन्य पंथ चलते हैं। आर्य समाज चलता है तो अन्य बैठ जाते हैं। अगर आर्य समाज बैठ जाता है तो अन्य सो जाते हैं। इसीलिये दयानन्द ने सोये हुओं को जगाया है और जगाकर महर्षि ने "**वेदों की ओर लौटने**" का बिगुल बजाया है, जो वेदों में यथार्थ-ज्ञान, कर्मकाण्ड, ईश-उपासना और विज्ञान का भंडार समाया हुआ है। **काका हाथरसी** अनुसार-

"लक्ष्य प्रधान न हो तो कोई पुरुष प्रधान नहीं होता।
कर्म महान् ना हो तो कर्ता कभी महान् नहीं होता।
जब तक निष्ठा दृढ़ न बने, तब तक सद्ज्ञान नहीं होता।
सब कुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।
केवल पत्थर का पुतला ही तो भगवान् नहीं होता।।
ऐसे निश्चय वालों का कुछ भी उत्थान नहीं होता।।
आर्य समाज नहीं होता तो वेदों का मान नहीं होता।।
सब कुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

महाभारत युद्ध पश्चात् भारत का घोर पतन प्रारम्भ हो गया। वाम-मार्ग की हीन मानसिकता के तहत- "**अश्वमेघ, गोमेघ तथा नरमेघ**" जैसे पावन वैदिक यज्ञ में घोड़े, गायें और मनुष्यों आदि की बलियाँ देकर मिथ्या उक्ति- "**वैदिक हिंसा, हिंसा न भवति**" को घड़कर हिंसा को खूब फैलाया। श्रेष्ठ कहलाने वाले ब्राह्मणों ने- उँच-नीच, जात-पात, छूआ-छूत की खोरापात को खूब विकसित करते हुए, यदि शूद्रों द्वारा ब्राह्मणों का यज्ञ देख लेने पर आंखें फोड़ देना, मंत्र-पाठ सुन लेने पर कानों में गरम सीसा शीशा भर देना, मंत्रों का उच्चारण या बोल देने पर जिव्हा को काट देना आदि **अमानवीय कृत्य होने लगे**। ऐसी दुरावस्था की प्रतिक्रिया में जैन धर्म का उदय होकर "**जियो और जीने दो**" का सन्देश और बौद्ध धर्म द्वारा- "**अहिंसा परमो धर्मः**" के माध्यम से हिंसा रोकने एवं समानता, मानवता का सूत्रपात हुआ। जैन अनुयायियों ने अपने तीर्थंकरों की मूर्तियों का निर्माण करवाया तो बौद्धों ने बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण करवाने के बाद शनैः-शनैः तीर्थंकरों व बुद्ध की मूर्ति पूजा प्रारम्भ कर दी। इनकी इस क्रिया को देख ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ और धनोपार्जन की लालसा में अपने देवी-देवताओं की काल्पनिक मूर्तियाँ बना कर मिथ्या प्राण-प्रतिष्ठा करके मूर्तिपूजा को चरम सीमा तकपहुंचा दिया। इस अंधविश्वास पर लोग मूर्तियों के प्रति आश्वस्त हो गये, की मूर्तियों के रहते कोई हमारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

इसी मिथ्याभिमान के कारण मुहम्मद बिन कासिम से लेकर इस्लाम धर्म का महाकट्टर औरंगजेब तक मुगलिया सुल्तानों की सल्तनत ने भारत के मन्दिरों और मूर्तियों का खुलकर विध्वंस करते हुए बुत-परस्त हिन्दुओं का इतना कत्लेआम किया कि खून की नदियां बह निकली। **सोने की चिड़िया** कहा जाने वाला भारत को लूट-लूट कर इतना खोखला कर दिया कि **कथीर की चिड़िया बन गया**। ब्राह्मण, ठाकुरों द्वारा पीड़ित और अपमानित शूद्रों ने इस्लाम को स्वीकार कर सम्मान की जिन्दगी व्यतीत करने लगे। इन्हीं शूद्रों ने

ब्राह्मण-ठाकुर का कत्ल और गुलाम बनाकर ढ़ाई-ढ़ाई रुपये में नीलाम करवाकर पत्थर तुड़वाये, मैला उठवाया आदि। जिन मूर्तियों को हिन्दू श्रद्धा-आस्था की नज़र से देखते थे, पूजते थे। इन्हीं मूर्तियों का विध्वंस कर मुस्लिम शासकों ने अपनी मस्जिद आदि के फर्श और सीढ़ियों पर लगवाया ताकि नित्य पैरों से कुचला जा सके। इस प्रकार मूर्तियां मक्खी की टाँग तक न तोड़ पाई। न अपनी रक्षा कर पाई, न हीं पुजारी-भक्तों की रक्षा कर पाई। बुत-परस्ती ही हिंदुओं की दुर्दशा का कारण सिद्ध हुई। मूर्ति पूजा मनुष्य को ईश्वर से विमुख करती ही है, तो अनेको ढोंग-पाखण्ड, भ्रमों को जन्म भी देती है। वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, विदुर नीति, चाणक्य नीति, कबीर, नानक, दयानन्द, विवेकानन्द, गुरु खैचर, स्वामी रामतीर्थ आदि, आर्य-ग्रन्थों में और महापुरुषों द्वारा मूर्ति पूजा का विरोध किया है। मूर्ति बनाना, स्थापित करना और मूर्तियों को पूजना इन तीनों व्यापारों में मात्र कल्पना की उड़ान हैं, जो सच्चाई से कोसों दूर हैं। मूर्तिपूजकों की अपेक्षा मूर्ति-निर्माता और पुजारियों का चरित्र अधिक पतित होता है। जबकि वेदों से मनुष्य -

भारत पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इसके निवासी आर्य हैं।
विद्या, कला-कौशल सबके, ये प्रथम आचार्य हैं।।
सन्तान भारत की आज यद्यपि, ये अधोगति में है पड़े।
चिह्न उनकी उच्चता के, आज भी कुछ हैं खड़े।।
विख्यात चारों वेद मानो चार सुख के सार हैं।।
चारों दिशाओं के हमारे वे जय-ध्वज चार हैं।।
वे ज्ञान-गरिमागार हैं विज्ञान के भण्डार हैं।
वे पुण्य के पारावार हैं, आचार के आधार हैं।। -मैथिलीशरण गुप्त

सामयिक पंक्तियां- **समय-समय की बात है, समय-समय के रोग।**
बड़े-बड़े शब्दों से शोभित, प्रायः दो कौड़ी के लोग।।

अर्थात्- आज के परिवेश में कुछ अपवाद छोड़कर- ''संत-महंत=विलासिता के रोगी, योगी=भोगी, ज्ञानी=व्यभिचारी, साधु=स्वादु, पण्डे=गुण्डे, ज्योतिषी=लुटेरे आदि कुख्यात शब्दों की सार्थकता को सिद्ध कर रहे हैं।

आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में विदेशी चिकित्सकों की अभूतपूर्व चिकित्सा क्रियाओं को देख दाँतों तले उँगली दबा ली जाती है। किन्तु प्राचीन चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का नाम गौरवान्वित करने वाले चिकित्सक आचार्य सुश्रुत का नाम विश्व में सर्वोपरि है। आज के एक चिकित्सक द्वारा उनकी उपचार क्रिया भारतवर्ष को चार चाँद लगा देती है। वह इस प्रकार है- ''शीतल जल से अभिषेक स्नान करने के कारण पत्थर के भगवान् बीमार पड़ गये हैं।'' इसलिये मन्दिर के पट बंद कर दिए गये। भगवान् का विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों से काढ़ा बनाकर एवं विभिन्न प्रकार के चन्दन का लेप लगाकर उपचार किया जा रहा है ताकि पत्थर के भगवान् स्वस्थ हो जाये। मन्दिर के चिकित्सक महन्त हृदयगिरि महाराज बताते हैं कि तुलसी, पारिजात, अश्वगंधा, जावित्री, जायफल, लैंडीपीपल, पुनर्नवा, गिलोय, नागकेसर, निर्गुणी, केदार, कड़वी आदि जड़ी-बूटियों को अभिमंत्रित करके लाया गया है, इन्हे पीसकर काढ़ा बनाया गया है। भगवान् को सुबह-शाम यह काढ़ा उपचार हेतु दिया जा रहा है। काढ़ा के अतिरिक्त भगवान् को केसर, बादाम का दूध और फलों का रस भी दिया जा रहा है। भगवान् के मस्तिष्क और शरीर पर केसर, मलयागिरी-चन्दन, मुल्तानी मिट्टी, शहद, गुलाब जल लगाया जा रहा है ताकि भगवान् को शीतलता की प्राप्ति हो आदि-आदि। प्रस्तुत वृतांत यह कोई कहानी या कथा नहीं है। भगवान् के उपचार का समाचार सचित्र और व्यापक प्रकाशित किया (समाचार की कटिंग संलग्न है)'' ऐसी उपचार क्रिया को देख भविष्य में यह अन्धविश्वास भी प्रस्फुटित होगा, कि हमारे पत्थर के भगवान् को छप्पन-भोग कराने के कारण भगवान् का हाजमा खराब हो गया है। अस्तु भगवान् के हाजमे को दुरुस्त करने के लिए सर्वत्र स्थानों से हाजमे की विविध जड़ी-बूटियाँ, बुलाकर और उन्हें अभिमंत्रित कर काढ़ा बनाकर पिलाया गया। ताकि भगवान् का हाजमा ठीक हो सके। काश! यदि संत-महंतों, पण्डे-पुजारियों आदि को प्राणियों के प्रति सद्बुद्धि और संवेदना जागृत हो जाये तो मानवीय जीवन साकार हो जाय। भूखे को भोजन, नंगे को वसन, रहने को सदन, रोगी को उपचार की प्राप्ति होकर नीति श्लोक भारत में साकार हो जाये

- ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।''

संत कबीर ने निर्भीक होकर मूर्ति-पूजा पर जमकर प्रहार किए हैं जैसे-

''पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजुँ पहार।
ताते वो चाकी भली, पीस खाये संसार।।

दूसरी ओर ईश्वर भक्ति पर -

रोगी मुआ, वैद्य मुआ, मुआ सकल संसार।
एक कबीरा नाम मुआ, जाको राम आधार।।

(मुआ = मरा, राम = ईश्वर) कबीर अपने इकलौते बेटे से कहते हैं -

''कबीर कहे कमाल से, दो बातें ले सिक।
कर साहेब से बन्दगी, भूखे को दे भीख।। (साहेब = ईश्वर)

अगर भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र और योगिराज श्रीकृष्ण की मूरतों के बजाय उनके चरित्र की पूजा की होती तो मुगलों के, अंग्रेजों के गुलाम न बने होते। हमारे क्रान्तिकारियों ने इनके पद-चिह्नों पर चलकर आजादी प्रदान कराई। अतः अंधविश्वासी, संत-महंतों, पण्डे-पुजारी, बाबा-ज्योतिषों के बाहु-पाश से निकलना आवश्यक है।

मुक्तक - जो इन्सानों के काम आये, वही तो इन्सान होता है।
जो इन्सानों को भ्रम में भटकाते, वह शैतान होता है।।
जो पत्थर की मूर्तियों को ही, समझता है ईश अपना।
ऐसे बुद्धिहीन इन्सान में, महाअज्ञान होता है।।
यह भारत अज्ञानता का घर ना बन जाये, सोचो।
अज्ञान को सद्ज्ञान में परिवर्तित करने की सोचो।।
सोचो इन्सानों! पत्थर को अपना भगवान् मानने वालों।
जीवों की संवेदनाओं को, अपने हृदय में बसाने की, सोचो।।

जय भारती ●

तुलसी के गुण

- डा. उर्मिला किशोर

संकलनकर्ता - **मृदुला अग्रवाल**
१९-सी, सरत बोस रोड़, कोलकाता
चलभाष : ९८३६८ ४१०५१

"**तुलसी**" के गुणों को हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व जान लिया था, इसीलिये उन्होंने इसे धार्मिक संस्कारों से जोड़कर इसकी पूजा प्रारम्भ की। वही परम्परा आज तक चली आ रही है। "**तुलसी**" कल्याण स्वरुपा है। तुलसी से पर्यावरण शुद्ध होता है। समाज से रोग-विकार दूर करने के लिए तुलसी एक साधन है। तुलसी की जड़, तने, पत्तों और मंजरी से अनेक आयुर्वेदिक औषधियाँ बनायी जाती है।

आयुर्वेद में यह अनेक रोगों की चिकित्सा में काम आती है। तुलसी के पत्ते जल में डालकर स्नान करने से शरीर अनेक रोगों से बचा रहता है। त्वचा में कान्ति और शरीर में स्फूर्ति आती है। इसकी सुगन्ध से डैंगू के मच्छर दूर भागते हैं। मीठी तुलसी को "**वन तुलसी**" या "**नियाजबो**" भी कहते हैं । इसकी पत्तियां अन्य तुलसी से काफी बड़ी और हरे रंग की होती है। इसके फूल सुगन्धित और हरे बैंगनी रंग के होते हैं। दिल्ली में इसे राम-तुलसी भी कहते हैं। यह एंटीबायोटिक तथा एंटीवायरस होती है। इसकी तीन-चार पत्तियां खाने से रक्तचाप भी नियन्त्रित होता है। मीठी तुलसी गठिया, पेशाब में जलन, हैपेटाइटिस, पेट का अल्सर जैसी बिमारियों में राहत देती है। इससे थकान, तनाव, उल्टी, दस्त, अरुचि, हिचकी, सर्दी-जुकाम, पेट सम्बन्धी रोग और मधुमेह में लाभ होता है। सर्दियों में इसके इस्तेमाल से सेहत में लाभ होता है। चिकन-गुनिया में तुलसी लाभकारी होती है। रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी तुलसी के पत्ते बहुत लाभकारी होते हैं। ●

मानव मांसाहारी हैं या शाकाहारी

- नरसिंह सोनी आर्य -
डागा सेठिया गली, डागा पंचायत
भवन के पीछे, बीकानेर (राज.)
चलभाष - ७०१४८०८४९९

ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है। अन्न, फल, मेवे, साग, सब्जी नाना प्रकार के ये सब मनुष्य के लिये ही उत्पन्न किये है, जानवरों-पशुओं के लिए नहीं। डिस्कवरी टी.वी. में आप देखते होंगे की, बड़ा जीव सिंह, चीता, भेड़िया आदि छोटे जीवों जैसे हिरण, गाय, भैस आदि जानवरों को मारकर खा जाते हैं। उदरपूर्ति करते हैं। ईश्वर ने उनको ऐसा ही बनाया है। मनुष्य के खानपान में और हिंसक पशु के खान-पान में यही एक विशेष फर्क है। लेकिन मनुष्य के हाथ पैर व बुद्धि है वह किसी का गुलाम नहीं है। फिर वह इन्द्रियों का गुलाम क्यों है? क्या हम उदर पूर्ति के लिये खाते हैं या केवल स्वाद के लिए? मनुष्य ने किसी भी जीव को खाने से परहेज नही किया है। यहां तक की जिन्दगी भर दूध पिलाने वाली घी, मक्खन, दही, मावा, मिठाईयां आदि खिलाने वाली गाय जिसको हमारी वैदिक सभ्यता में माता का दर्जा दिया हुआ है, काट के खा जाना, कितना घोर अनर्थ पाप करते हैं। इसका कभी कोई प्रायश्चित नहीं होगा। अपनी जन्म देने वाली मां को मार कर खा जाने से हजार गुना पाप लगता है। अपने अन्तरात्मा में बैठे हुए खुदा (ईश्वर) से कभी पुछ के तो देखों। मैं गलत कर रहा हूँ या सही, ऐसे उपयोगी पशु जिसका गोबर, मूत्र भी उपयोगी है। अगर आपकी आत्मा में जरा भी इंसानियत है तो यही जवाब आयेगा कि यह गलत है। ऐसे कर्म को छोड़ दो। गौ-माता-पिता और गुरू की सेवा से बढ़कर कोई सेवा नही है। मांसाहार सभी मनुष्य के स्वास्थ्य का दुश्मन और रोग उत्पन्न करने वाला भी है। ऐसा सभी डॉक्टर वैध भी कहते है। तो फिर स्वाद के गुलाम क्यों है? धर्म के नाम पर देवी-देवताओं के नाम पर बली देकर मांस का प्रसाद ग्रहण भी पाखण्ड है। अपने को तथा ईश्वर को धोखा देना है। इससे भी बचो। मांस भक्षण मनुष्यत्व तो नहीं है राक्षसी कृत्य है। सुख शान्ति का घोर विरोधी है। देखिये यजुर्वेद इस बारे में क्या कहता है।:-

"**अहन्या यत्रमान्स्य पशुनपाहि**" यानि परमात्मा आज्ञा देता है कि हे पुरूष तू इन पशुओं को कभी मत मार और सबको सुख देने वाले पशुओं की रक्षा कर। महर्षि मनु इस बारे में क्या कहते हैं:-

"अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।"
संस्कर्ता चोपहर्ता च खाद कश्चेति घातका: ।। मनु अ. ५

यानि मारने की सलाह देने, मांस को काटने, पशु आदि को मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस को पकाने, परोसने और खाने वाले ये सब पापी है।

विवेकहीन मनुष्य दुनिया का सबसे खतरनाक प्राणी है। वह किसी भी प्राणी को मारकर खाने में कोई। परहेज नहीं करता। हजारों टन चारा खा जाता है, हजारों लीटर पेट्रोल पी जाता है, कोयला आदि कोई भी हाथ लगे सब खा जाता है। इसको कभी संतोष नही होता, तृप्ति नहीं होती। इन्द्रियों की तृप्ति में ही सारा जीवन नष्ट कर देता है। समय रहते जो चेत जाता है वही सुख को प्राप्त करता है। ●

आर्य समाज को नये सिरे से खड़ा करने का सवाल

- डा. लक्ष्मीनिधि 'अधिवक्ता' -
१७२, न्यू बाराद्वारी, ह्यूम पाईप रोड़
पो. साकची, जमशेदपुर-१ (झारखण्ड)
चलभाष - ०९९३४५२१९५४

श्री सुखदेव बाबू, नमस्कार, आपका जब राँची से मुझे फोन मिला तो मुझे बहुत हर्ष हुआ आपने फोन पर मुझे बतलाया, जमशेदपुर आने का समय मिला तो प्रोग्राम बनाऊँगा। मुझे लगा आने पर आपके दर्शन होंगे और आर्य समाज के स्थानों तथा कार्यक्रम संबंधी विचार विमर्श भी होंगे मगर, आप की, प्रतीक्षा करता रह गया । मुझे मालूम है, पत्रिका निकालना कितना कठिन काम है । इस काम में समय निकालना बहुत मुश्किल है । अगर मैं स्वस्थ होता तो मैं ही राँची आने का प्रोग्राम बना लेता मगर, दुर्घटनाग्रस्त होने के फलस्वरूप मैं राँची जाकर आपके दर्शन से वंचित रह गया । यदि जमशेदपुर के आर्य समाज में जीवंतता होती तो उसके अधिकारी राँची जाकर आपका प्रोग्राम ले आते । टाटा कम्पनी ने करोड़ों की जमीन मामूली रेट पर लीज पर इसे मासिक लीज पर दी है । उस पर विशाल आर्य समाज भवन बना है । उसमें एक स्कूल चल रहा है । मैंने कभी आर्यसमाज के कोई वार्षिक सम्मेलन के बारे में न सुना और कोई अन्य कार्यक्रमों की मुझे कोई खबर नहीं है । इस स्कूल का कोई ऐसा मानदंड सामने नहीं आया है जो इसे राज्यों द्वारा संचालित स्कूल, कान्वेंट या लोयला स्कूल से टक्कर ले सके ।

यहाँ के छात्र आर्य समाज के कोई वसूल या आदर्श लेकर निकलते होंगे तो उस स्कूल के व्यवस्थापक बतलाये । असल में स्वामी जी के बतलाये मार्ग पर न आर्य समाज चलता है और न आर्य समाजी असल में आर्य समाज के केन्द्रीय या राज्य संगठन स्वयं लंगड़े घोड़े बने हैं, उनमें आज के दौड़ की प्रतियोगिता में विजय हासिल करने के लिए मैदान में उतरने की हिम्मत नहीं है। स्वामी जी ने जिस बड़े उद्देश्यों से आर्य समाज का गठन किया । उसका थाह-पता इसके नेताओं को नहीं है । आर्य समाज ने हिन्दू धर्म के असली स्वरूप वैदिक धर्म को उजागर करने के लिए अभियान चलाया मगर साधना का वह अभियान विलुप्त सा हो गया है । न कभी कोई सेमिनार, न कभी समाजिक मुद्दों पर कोई सक्रियता अखिर क्यों खड़े हैं - इतने आर्य समाज के संगठन ? बच्चे बिगड़ रहे हैं-सिनेमा वाला हिदायत कर रहा है। **देख अम्मा तेरा मुण्डा बिगड़ा जाये** और युवक को लगता है जमीन पर है ही नहीं। वे आसमान में लटके हैं - भारतीय युवकों में आर्य समाज के प्रति तो क्या उन्हें अपने माता-पिता के प्रति भी कोई आदर भाव नहीं है । यही कारण है घर के बुजुर्ग **ओल्ड एज होम'** में रहना पसंद करते हैं यदि आर्य संस्कृति और आर्य संस्कारों की इसी तरह अवहेलना होती रही तो इस देश का क्या होगा? आजकल युवक अपने कन्धों पर किसी प्रकार के दायित्व का बोझ रखने नहीं देना चाहते, वैसी स्थिति में क्या होगा? **बूढ़ा-बैल कितना खेत जोतेगा, जिनके पाँव ही नहीं उठते और युवक अपने कंधों पर जुआ ही नहीं रखने देते तो नया भारत कौन गढ़ेगा?**

सुखदेव बाबू आप वैदिक संसार के नाम पर एक पत्रिका नहीं निकाल रहे हैं वरन् स्वामी दयानन्द महाराज के चिन्तन को बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार के लिए तैयार कर रहे हैं। वैदिक संसार अपने लिए ग्राहकों की तलाश नहीं करती वरन् स्वामीजी के साधना पथ पर चलने वाले अग्नि-पंथी और क्रान्तिदूत का निर्माण कर रही है। स्वतंत्रता संग्राम के समय महात्मा गांधी ने जिस स्वदेशी संस्कार और स्वाभिमानी भारत के निर्माण का आह्वान किया वह विजन और मिशन आर्य समाज के कार्यक्रमों में निहित है।

आज देश भर में आर्य समाज को चाहिए :-

१. **सत्यार्थ प्रकाश** को सभी भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में प्रकाशित कराएँ और उसे घर-घर पहुंचाएँ
२. अवकाश प्राप्त आर्यसमाजी आर्य संस्कृति पर सारथी (वानप्रस्थी) बनकर पूर्ण कालिक कार्यकर्ता बने तथा देश में घूम-घूम कर आर्य संस्कृति तथा संस्कार का प्रचार-प्रसार करें।
३. देश-विदेश के जवलंत मुद्दों पर बड़े-बड़े सेमिनार तथा सम्मेलन कर अपनी स्पष्ट राय व्यक्त करें तथा उनके कार्यान्वियन के लिए **आर्य वीर** के रुप में समाज के सामने आवें।
४. आत्महत्या, दहेज हत्या, भ्रूण हत्या, अपहरण-बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध आर्य समाजी, समाज के सामने आवें और राष्ट्रीय चेतना अभियान चलावें।
५. देश प्रेम व देश भक्ति के लिए युवकों में राष्ट्रीय तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागृत करें। आज देश और समाज में राष्ट्रीय तथा सामजिक दायित्व के प्रति उदासीनता के कारण ये सब अपराध होने लगे हैं।
६. भारतीय राजनीति को प्रदूषण से बचाने के लिए जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रीयवाद तथा परिवारवाद से मुक्ति के लिए लोकतांत्रिक सुराज व्यवस्था के लिए संघर्ष छेड़े।
७. ऐसे ही अनेक प्रोग्राम बनाये जा सकते हैं जो आर्य समाज के संगठन चलाते हैं वे नवीन हर्ष और नवीन दृष्टिकोण से आर्य समाज को नये कुरूक्षेत्र में उतारें।

कुरीतियां

अ बहुत से लोग कुरीतियों, रुढ़ियों, अन्धविश्वासों में फंसकर दुखी एवं बर्बाद होते रहते हैं। समाचार पत्र लोगों को इन कुरीतियों को बन्द करने पर जोर देते हैं। आजकल शादियों में दहेज एवं लेन-देन की कुरीति बहुत जोर पकड़ती जा रही है। इनके चक्कर में फंसकर लाखों परिवार कर्ज के मकड़जाल में फँस कर बरबाद हो रहे हैं।

अ अपने लड़के-लड़कियों के रिश्ते करते समय कुछ अन्धविश्वासी लोग जन्म कुण्डलियां लेकर पण्डितों एवं ज्योतिषियों से मिलान करवाने घूमते रहते हैं। पण्डित जी कह देते हैं कि गुण नहीं मिल रहे हैं अथवा लड़का-लड़की में एक मांगलिक है और एक बे मांगलिक। इस चक्कर में लड़कियां २८-३० साल की और लड़के ३५-३५ साल के हो जाते हैं। इस तरह की बेतुके बेदिमाग रीति-रिवाज पर तथा शादियों में बढ़ते जा रहे लेन-देन तथा दिखावे पर समाचार पत्रों को जोरदार ढंग से प्रहार करना चाहिए।

आचार्य रामगोपाल सैनी चलभाष : ०९८८७३९३७१३

समलैंगिकता-भारतीय संस्कृति के माथे पर कलंक

- डॉ. गंगाशरण आर्य -
चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम-शाहबाद मोहम्मद पुर, नई दिल्ली
चलभाष : ९८७१६४४१९५

वर्तमान भौतिकता प्रधान युग में पाश्चात्य संस्कृति में अन्धे हुए कुछ कामातुरों द्वारा विवाह जैसे पवित्र व पुनीत कार्य जो एक सामाजिक अनुष्ठान है, जो सम्बन्धों में निश्चिन्तता प्रदान करता है, जिसमें दोनों (लड़का-लड़की) दम्पत्ति बनकर अपना वंश चलाते हैं। ऐसी संस्था जो हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा समाज को व्यवस्थित व मर्यादित बनाने के लिए स्थापित की गई थी, को भी तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। और हजारों-लाखों वर्षों से समाज को मर्यादा में रखकर विकास और प्रगति की ओर ले जाने वाली इस परिवार रुपी संस्था को विकृत मनोवृत्तियों के प्रवाह में निर्बाध होकर बहना **मानव संस्कृति** नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि समलैंगिता अथवा समलिंगी विवाह जैसे शब्दों का हमारी संस्कृति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यह घृणित, अप्राकृतिक, अनैतिक और मानसिक विकृति का दुष्परिणाम और केवल यौनाचार है जो न केवल वैदिक संस्कृति पर, अपितु मानवीय संस्कृति पर कुठाराघात है। इसका परिणाम निर्विवाद रूप से दु:ख और पतन है और जो लोग इस विकृति के समर्थक, पक्षधर और निर्णयकारक है वे स्वयं इस मनोविकार से ग्रसित है तथा अपनी विकृति को सारे समाज पर थोपकर सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण को दूषित करना चाहते हैं। इसके प्रसार से न सामाजिक मर्यादाएं सुरक्षित रहेंगी, न पारिवारिक सम्बन्धों में पवित्रता रहेगी, न संस्थाएं शुद्ध-चरित्र रह पाएंगी आर्थात् समाज का प्रत्येक वर्ग इससे प्रभावित होगा, जिससे सदाचार समाप्त होकर चहुँओर दुराचारियों का बोलबाला होगा, समस्त निर्मल वातावरण धूमिल हो जाएगा ।

कितने अपराध और कितनी समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी इसका आप और हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते ठीक। वैसे ही जैसे एकाध कॉन्वेंट स्कूल भारत में जब अंग्रेजों के मूर्धन्य लार्ड मैकाले ने खुलवाए और भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा के नाम पर संस्कृति व संस्कार ही बदलने का तुच्छ सा प्रयास किया और हमारे पूर्वजों द्वारा इनका विरोध न करने पर परिणाम स्वरुप आज की जो स्थिति है उससे आप चिरपरिचित है, हमारी भावी पीढ़ी अपनी संस्कृति व संस्कारों से शून्य होती जा रही है। इसी प्रकार इस तरह की विकृतियों का व उसके पक्षधरों का विरोध न करने पर समाज की क्या स्थिति होगी अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता।

अभी तक तो गर्भ निरोधक के उपायों का परिणाम भोग ही रहे हैं, सैकड़ों शारीरिक रोग व मानसिक रोग पनप रहे हैं इसके बाद स्थिति और भी भयावह हो जाएगी। लड़कियां तो आज भी हमारे देश में असुरक्षित हैं इसके बाद लड़कों को भी अपहरण व बलात्कार का शिकार होने से बचाया न जा सकेगा। समाज का जो व्यवस्थित ताना-बाना हमारे ऋषियों ने बुना है वह क्षीण हो जाएगा। गृहस्थ रूपी संस्थाए हमारे देश से नष्ट हो जाएंगी। जरा विचार करें अपनी प्राचीन पुरातन संस्कृति का जिसका बोलबाला पूर विश्व में था यही नहीं सम्पूर्ण विश्व का गुरु हमारा देश व विश्व की सिरमौर हमारी संस्कृति रही है। और आज भौतिक चकाचौंध और पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करने के कारण मनुष्य नीचता की भी मर्यादा भूल गया है। पहले क्या आज भी मनुष्य जब कोई गलत काम करता है तो उसे कुत्ते व गधे आदि जानवरों की उपमाएं दी जाती हैं किन्तु समलैंगिक रुपी इस मनोविकृति वाले इन्सान को किसकी उपमा देंगे क्योंकि इतनी नीच व घृणित विकृति तो पशुओं में भी नहीं पाई जाती। ये लोग तो पशुओं से भी ज्यादा गिरे हुए हैं। ये लोग समलैंगिकता के पक्ष में मानव स्वतन्त्रता और मानवाधिकार का तर्क देते हैं, किन्तु यह तर्क नहीं, तर्काभास है। यदि सहमतिपूर्वक किए जाने वाले अश्लील और अनैतिक कार्यो को मानवीय स्वतन्त्रता माना जाता है और समानता तथा मानव अधिकार से जोड़कर देखा जाता है तो इसके अंतर्गत तो सभी स्वैच्छिक यौन सम्बन्ध, वेश्यावृति, पशु मैथुन, स्वैच्छिक आत्महत्या, स्वैच्छिक व्यसन, रिश्वतखोरी आदि अनेक स्वतन्त्रताएँ भी आती है इसी का नाम स्वतन्त्रता है तो यौन

गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक सम्मेलन

दिनांक १० से १२ नवंबर २०१८ तक

वेदयोग महाविद्यालय (गुरूकुल) केहलारी, जिला-खण्डवा (म.प्र.) द्वारा अपने स्थापना के बारहवें वर्ष पर **गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक** सम्मेलन का भव्य आयोजन दिनांक १० से १२ नवम्बर २०१८ तक आयोजित किया जा रहा है। इस सुअवसर पर समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित हैं।

आयोजन के मुख्य अतिथि

माननीय हंसराज अहीर केन्द्रिय गृह राज्य मंत्री, दिल्ली

(जन्मदिवस पर विशेष गरिमामयी उपस्थिति दिनांक ११ को)

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य हरिशचन्द्रजी शास्त्रीजी, भुसावर (राज.)
गुरूकुल पिता : आचार्य विद्यादेव जी, दिल्ली (पू. प्रा. टंकारा गुरूकुल)
सन्यासी वृंद : स्वामी वेदप्रकाशानन्द जी सरस्वती, हिमाचल प्रदेश
स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती, मध्य प्रदेश
भजनोपदेशक : पं. प्रतापसिंह जी आर्य, सहारनपुर (उ. प्र.)

इस अवसर पर **वैदिक संसार** इंदौर द्वारा **वैदिक साहित्य** का स्टॉल लगाया जावेगा।

निवेदक : आचार्य सर्वेश जी सिद्धान्ताचार्य तथा समस्त गुरूकुल परिवार

सम्पर्क : ९१७९१८३८३३, ९१६५१६८१५८

सम्बन्धों के लिए विवाह पर १८ वर्ष तक का सीमा निर्धारण भी क्यों? स्वतन्त्रता के नाम पर उपरोक्त सभी प्रकार विकृतियों का भी ये लोग समर्थन करने लगेंगे यही नहीं समलैंगिक विवाह को मान्यता दी जाती तो कल को पशुओं के साथ विवाह करने की भी मान्यता दी जाए ऐसा भी प्रयास इस प्रकार की दूषित मनोवृत्ति वाले लोग करेंगे तो क्या संसद इसको भी मान्यता प्रदान करेगी? इस प्रकार की विकृत सोच को वैदिक संस्कृति ही नहीं बल्कि पाश्चात्य जगत् के पैगम्बर, जीसस क्राइस्ट आदि ने भी बाईबिल आदि तथाकथित धर्म ग्रन्थों में भी इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं है। इस प्रकार की घृणित विकृति के पक्षधर क्या अपने परिवार के सदस्यों के विवाह समलिंगियों से करना स्वीकारेंगे? यदि स्वीकारेंगे तो शायद वे भूल चुके हैं कि यदि उनके माता-पिता भी इस प्रकार का विवाह करते तो क्या उनका जन्म हो पाता? ऐसे लोग ही प्रकृति विरुद्ध बाते करके स्वयं को विकसित कहते हैं। क्या कामातुर होना, धोखेबाज होना, असभ्य व संस्कारहीन होना, बेहया, मर्यादाविहीन होना ही विकास की परिभाषा है? पूरा का पूरा वाम पन्थ की राह पर चलना ही विकास है? इससे क्या देश का राष्ट्र खुशहाल होगा? क्या इसके द्वारा वंश वृद्धि सम्भव है? कदापि नहीं।

हमारी संस्कृति की भव्य गौरव गरिमा को नष्ट करने केलिए पाश्चात्य जगत् जी जान से जुटा हुआ है पूर्व कथित जितने भी वैचारिक प्रदूषण हैं चाहे वह टी.वी. के विषय हो या विभिन्न प्रकार के यौनाचारों के विषय में हो जैसे हस्त मैथुन, लिव इन रिलेशनशिप, बाल यौन शोषण आदि हमारी संस्कृति को प्रदूषित करने वाले समस्त विचार इन नीच प्रवृति के लोगों द्वारा फैलाए जाते हैं फिर जो लोग इनके फैलाए इस मक्कड़ जाल में फंसते जाते हैं उनकी मदद करते हैं इन्हें कानूनी मान्यता दिलाने की। एक बडा तंत्र अन्तराष्ट्रीय स्तर पर इस काम को अंजाम देता है ताकि विदेशों से आए उनके पर्यटकों को भारत में इस प्रकार के घृणित कार्य करने पर भी सभी प्रकार से सुरक्षा मिल सके। दूसरी तरफ उपरोक्त सभी प्रकार के यौनशोषण करने की स्वतंत्रता गर्भ निरोधक साधनों को बेचने वाली कम्पनियों के हितों के लिए भी काम करती है क्योंकि सरकार इन उद्योगियों व व्यवसायियों के चुंगल में फंसी हुई है इसलिए उनको लाभ पहुंचाने हेतु उनके हितकारी काम करने में आपत्ति नहीं जताती। इसके साथ-२ आज इन पामरों (नीच प्रवृति के लोगों) द्वारा इन्टरनेट पर ऐसे कुकृत्यों को बढ़ावा देने वाली लगभग २०,००० से भी अधिक काम वासना भड़काने वाली वेबसाईटें भरी हुई है। आज बच्चों के हाथों में लैपटॉप, मोबाईल, कम्प्यूटर आदि इन्टरनेट के माध्यम से वे इस प्रकार की वेबसाइटों को डाउनलोड कर देखते है जिससे उनका पौरूषत्व छोटी उम्र में ही नष्ट हो रहा है और मानसिकता विकृत होती जा रही है। एड्स जैसी खतरनाक बिमारियाँ उत्पन्न हो रही है। इन विदेशियों की यह चाल है ताकि भारतीय संस्कृति का समूल नष्ट हो जाए। इन वेबसाइटों पर समलैंगिक संभोग तो दिखाते ही हैं, साथ ही पाश्विक प्रवृत्तियों से परे पशुओं के भी साथ संभोग करते नर-नारी को दिखाया जाता है । इन्हें देखकर किस देश का बच्चा सुयोग्य नागरिक बन पाएगा? जरा विचार करे । यह अप्राकृतिक होने के साथ-साथ असामान्य (एबनार्मल) व्यवहार भी है। मानव मनोविज्ञान की दृष्टि से इस प्रकार से विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति कभी भी शारीरिक तो क्या मानसिक दृष्टि से भी उन्नत नहीं हो सकता। मैं इण्टरनेट पर डाली गई इस प्रकार की **पोर्न वेबसाइट्स** की घोर निंदा करता हूं जिसमें एनिमल एण्ड वुमैन तथा मैन एण्ड एनीमल आदि केरिलेशन्स दिखाए जाते हैं जिनमें समलैंगिक रिलेश्न दिखाए जाते हैं या अन्य यौनाकर्षण जैसी एडल्ट फिल्में डाली गई हैं।

हमें इनका आज से ही व सदैव विरोध करना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की घृणित मान्यता से न तो परिवार ही बढ़ पाऐंगें, न ही वैवाहिक जीवन सुखमय संसार बन पाएगा। भारतीय संस्कृति, परम्परा, परिवार रूपी संस्था तथा समाज की मर्यादाएं सब विनष्ट हो जाएंगी। समाज में कामाचार बढ़ेगा जिससे तनाव एवं कलह का वातावरण बढ़ता है। और भावी युवा पीढ़ी अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होने पर आत्महत्या जैसे कुकृत्य करने को विवश हो जाती है या नशे की लत की शिकार होती है और अपने प्रेम सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए चोरी, हत्या जैसे अपराध कर धन जुटाने का प्रयास करने को आतुर हो जाती है। इस प्रकार उनकी शिक्षा, योग्यता, खेल, ज्ञान, विज्ञान, भाषा साहित्य दर्शन की योग्यता प्राप्त करने का, अपने शारीरिक और मानसिक स्वस्थ को बनाने का मधुरिम समय सैक्स की अन्धी गलियों में भटकने में बीत जाएगा तो उनका व देश का भविष्य क्या होगा? क्या माता-पिता, शिक्षक इन परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे। हमारी परम, पावन, पुण्यमयी वैदिक संस्कृति में शारीरिक वेगो (लैटरिन, पेशाब आदि) को न रोकने का तथा मानसिक वेग (चित्त की वृत्तियों) को रोकने की शिक्षा दी जाती है। क्योंकि शारीरिक वेगों को रोकने से शरीर की हानि होती है अर्थात् शरीर रोगी हो जाता है और मानसिक वेगों (चित्त की वृत्तियों) को न रोकने से मनुष्य अपराधी बन जाता है। इसके लिए योग आसन, प्राणायाम, धारणा ध्यान आदि हमारी गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में प्रारम्भ से ही बच्चों को सिखाई जाती थी ताकि उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो । हमारी संस्कृति भावों व उद्वेगों के संयमन और नियंत्रण के साथ उनके उन्नत होने नाम भी है। यही सच्चे अर्थों में **मानवीय संस्कृति** और इससे भी ऊपर **देव संस्कति** तथा **ऋषि संस्कृति** है। जो लोग कामुकता की संतुष्टि से उपर नहीं उठ सके हैं, इसी को अपने जीवन का लक्ष्य मान बैठे हैं वे चाहे संन्यासी, लेखक, वक्ता, अभिनेता, बुद्धिजीवी कलाकार कोई भी क्यों न हो, वे देव संस्कृति और ऋषि संस्कृति की महिमा, महानता और मूल्य क्या जानें? वास्तव में जो लोग समलैंगिक विवाह का समर्थन करते हैं उनको ये समझना चाहिए कि यह भारतीय संस्कृति नहीं है बल्कि यूरोपीय राक्षसी संस्कृति की दूषित मानसिकता की परिकल्पना है।

अंत में पाठकों से निवेदन करता हूँ कि यदि अपने देश की गौरव गरिमा व संस्कृति की रक्षा करना चाहते हो तो इस प्रकार के निकृष्ट वैचारिक प्रदूषण से स्वयं को बचाएं राष्ट्र की उन्नति के लिए सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का अनुसरण करें ताकि आपकी भावी पीढ़ी आपसे प्रेरणा ले सके।

ग्यारह आत्महत्यायें या हत्यायें ?

जांगिड कुलाूषण - **रामफल सिंह आर्य** -
वरि.उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष ०९४१८४७७७१४

देश की राजधानी दिल्ली के बुराड़ी में सन्त नगर में रहने वाले भाटिया परिवार के ग्यारह लोगों की एक साथ हुई मृत्यु के समाचार ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। इस घटना से जहां एक और परिवार के सभी लोगों की यूं एक साथ हुई मृत्यु से दु:ख उत्पन्न होता है, वहीं दूसरी और आश्चर्य भी होता है कि किस प्रकार से एक हंसता खेलता परिवार, अंधविश्वास की भेंट चढ़ कर एक समय में विनाश को प्राप्त हो गया। जिसने भी दूरदर्शन या समाचार पत्रों के माध्यम से इस घटना को जाना वह यह विचारने पर विवश अवश्य ही हुआ है कि क्या आज के इस युग में भी ऐसे लोग हैं, जो नितान्त निरर्थक, निराधार और बुद्धि विरुद्ध बातों पर विश्वास करके इतना भयानक कर्म कर डालते हैं? पुलिस और जांच दलों द्वारा जो निष्कर्ष निकल कर आये हैं उनसे यही सिद्ध होता है कि भाटिया परिवार के ही एक पुत्र द्वारा आत्माओं का आह्वान किये जाने के फलस्वरुप दी गई निरन्तर प्रेरणा से यह घोर कर्म किया गया जिसमें परिवार में पीछे कोई रोने वाला भी शेष ना रहा। आज सारे समाचार चैनल इसे अन्धविश्वास जनित कार्य बता कर इसकी समीक्षा में लगे हैं। यहां तक कि कई समाचार चैनलों ने तो देश के धार्मिक जगत् से जुड़े बाबाओं, गुरुओं की एक परिचर्चा भी बुला डाली। दूरदर्शन के प्रत्येक चैनल पर यह समाचार प्रमुखता से छाया रहा और लोग भी इस बात के लिए प्रतिक्षा करते रहे कि देखें जांच दलों द्वारा क्या तथ्य निकलकर सामने आते हैं। ऐसा लगता रहा कि टी.वी. चैनलों ने अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिये कमर कस ली है।

परन्तु कितने घोर आश्चर्य की बात है कि जो टी.वी. चैनल आज विज्ञान के युग की दुहाई देते नहीं थकते और इस अन्धविश्वास की घटना को कोसने में सारी शक्ति लगाते दिखाई देते हैं, उन्हीं चैनलों पर प्रात: काल और सांयकाल चमत्कारी बाबाओं के श्री यन्त्र, शनि यन्त्र, गणेश यन्त्र, लक्ष्मी यन्त्र सिद्ध मनोकामना यन्त्रों का प्रचार भी खूब धड़ल्ले से हो रहा है। चमत्कारी बाबाओं, फिल्म अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के माध्यम से पाखण्ड को बढ़ावा देने वाले अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण भी पीछे नहीं है। यह कैसा विज्ञान का युग है? इस दोगलेपन का अर्थ भला क्या है? आज पूरे समाज में तथाकथित बाबाओं और गुरुओं का बोलबाला है। उनके पास लाखों लोगों की भीड़, करोड़ों अरबों रुपए की सम्पत्ति है और देश के प्रभावशाली लोगों का संरक्षण उन्हें प्राप्त है। उनके एक संकेत पर उनके शिष्य कुछ भी करने के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसा नहीं है कि उनके शिष्य मण्डल में निरे अशिक्षित लोग ही हैं अपितु अच्छे उच्च शिक्षित, उंचे पदों पर बैठे समर्थ लोग, उद्योगपति, नेता और अधिकारियों की पर्याप्त संख्या है। बाबाओं और अम्माओं का एक पूरा दल है जो किसी शक्तिशाली अजगर की भाँति उनको लपेटे हुए हैं और वे प्रसन्नता पूर्वक उसमें लिपटे हुए हैं। ज्योतिषियों, तान्त्रिकों, धर्मगुरुओं, कथाकारों, झाड़ फूंक करने वालों, वशीकरण एवं मनोकामना सिद्ध करने वालों का एक ऐसा ताना-बाना सा बुना जा चुका है जिसके बाहर इस समाज का निकलना एक विकराल समस्या बन चुका है। यदि इस सारे मकड़जाल को ध्यान में रख कर बुराड़ी की इस घटना को देखेंगे तो पता चलेगा कि वास्तव में उन लोगों ने आत्महत्या नहीं की है अपितु समाज में फैली यह प्रदूषित विचारधारा और पाखण्ड और अन्धविश्वास का प्रचार करने वाली इन सभी संस्थाओं ने उन्हें इस ओर धकेल दिया है या कहें कि उनकी हत्या कर डाली है तो कोई अनुचित बात ना होगी।

कहा जाता है कि भाटिया परिवार के पुत्र के ऊपर आत्मा आती थी जो उस परिवार के लोगों को मोक्ष दिलाने की ओर प्रेरित करती थी। उसी की प्रेरणा से प्रेरित होकर उन लोगों ने यह घोर कर्म किया। समाज में आत्मा को लेकर जो भ्रान्ति फैला दी गई है उसमें भी टी.वी. और सिनेमा का बहुत बड़ा हाथ है। इस भ्रम में उलझे लोग न तो आत्मा का स्वरुप ही समझते हैं और न ही परमात्मा के बारे में कुछ भी जानते हैं। रही मोक्ष की बात तो वह कोई वस्तु नहीं है कि किसी स्थान पर जाने से रखी हुई मिल जाएगी या किसी बाबा या तांत्रिक की बताई हुई विधि वहां तकपहुंचा देगी। मोक्ष एक स्थिति विशेष का नाम है जो लगातार कठोर साधना, तपस्या और शुभ कर्मों के परिणाम स्वरुप आत्मा अपने पुरुषार्थ और कृपा से प्राप्त करता है। इस प्रकार से आत्महत्या करके मोक्ष कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस प्रकार से आत्महत्या व्यक्ति तो समाज, राष्ट्र, न्याय, विधि और स्वयं का अपराधी बन जाता है। पापी बन जाता है। ये महामूर्ख तान्त्रिक, बाबा और तथाकथित गुरु क्या मोक्ष को, क्या आत्मा और क्या परमात्मा को जानेंगे? यदि कुछ जानते हैं तो इतना अवश्य और भली प्रकार जानते हैं कि किस प्रकार से भोले-भाले लोगों के अपने जाल में फांस कर अपना उल्लू सीधा करना है। इन ढ़ोंगी, पाखण्डी और स्वार्थ की मूर्तियों ने तो लोगों से विचार एवं तर्क की शक्ति ही छीन कर उन्हें मानसिक रुप से विकलांग ही बना डाला है।

जहां पर लोग केवल लाल या हरी चटनी के साथ समोसा खाकर जीवन की समस्याओं का हल ढूंढ लेना चाहते हैं, वहां पर बाबा की कृपा आकाश से धीरे-धीरे उतर कर ऐसे आती हो जैसे आकाश से वायुयान उतरता है, जहां पर अनेक उच्च शिक्षित लोग जाकर निरे बुद्धू और मूर्ख बन जाते हैं और एक पाखण्डी का चरण चुम्बन करने लग जाते हों क्या वहां के लोग तर्कशील, बुद्धिमान, पुरुषार्थी बनकर, ईश्वर की न्याय व्यवस्था को जानकर पाप के फल दु:ख से बचनें की अपेक्षा पाप कर्म छोड़ने का कष्ट करेंगे? कदापि नहीं! क्यों? क्योंकि उन्हें यह पता है कि तुम्हारे कर्म चाहे कैसे भी क्यों

ना हो, बचाने के लिये बाबा तो बैठा ही है। जाकर उनके पैर पकड़ लेंगे, बस सारा कल्याण स्वत: ही हो जायेगा। जहां पर खूब सजी-धजी सुन्दरी मेक-अप आदि करके भक्तों की गोद में आकर बैठ जाती है उसके साथ डेट पर भी जाती है और भक्त लोग विपुल धन राशि के बदले उससे कुछ भी खरीद सकते हो आश्चर्य है कि इतना होने पर भी वह धर्म प्रचारिका बनकर मां कहलाये और उसकी पूजा की जाये, उस समाज का कल्याण भला कैसे हो सकता है? क्या वहां समाज के लोग सदाचारी संयमी और तपस्वी बनेंगे? नितांत असम्भव है। प्रतिदिन एक नये बाबा का नग्न स्वरुप जनता के सामने उजागर होता है, एक नया काण्ड उभर कर आता है लोग सुनते हैं, देखते हैं और बहुत शीघ्र ही उसे भूलाकर फिर किसी पाखण्डी का दरवाजा खटखटा देते हैं। हमें तो यह समझ ही नहीं आता कि आखिर लोगों की बुद्धि कहां जाकर खो गई है? क्यों नहीं वे आंखें खोल कर सत्य को देखना चाहते? क्यों बार-बार इन धूर्तों के छलावे में आ जाते हैं? मनोकामना पूर्ण करने वाले, बिगड़ी बनाने वाले, भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि के माध्यम से लोगों के कार्य बनाने या बिगाड़ने वाले, काले जादू से लोगों को सिद्धि दिलाने वाले, करामातीयों के विज्ञापनों से रेलवे स्टेशन, बस अड्डे एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों के साथ-साथ समाचार पत्रों के पन्ने भरे रहते हैं, टी.वी. चैनल भी उनका प्रचार करने में पीछे नहीं है उनके पास जाने वालों की भी एक लंबी पंक्ति है इतना सब कुछ होने पर भी आज कहते हैं कि यह विज्ञान का युग है।

वास्तव में बात तो यह है कि आज सत्य विद्या के प्रचार के अभाव में मानव समाज पूरी तरह से सहम चुका है। स्वार्थी, दम्भी और पाखण्डी लोगों ने नये-नये हथकण्ड़े अपना कर लोगों को इतना भ्रमित कर डाला है कि उन्हें बिल्कुल अन्धा ही बना दिया है। आज सत्य बात करने वाला व्यक्ति उन्हें झूठा और पाखण्ड की बात करने वाला सच्चा दिखने लगा है। जब इन दुष्ट लोगों द्वारा उनका धन, शील और मान मर्यादा का हरण कर लिया जाता है तब अपना माथा पकड़ कर रोने के अतिरिक्त उनके पास कोई रास्ता बचता ही नहीं। समाज को गलत मार्ग पर ले जाने वाले लोग केवल बुराड़ी के ग्यारह लोगों के हत्यारे नहीं है अपितु पूरी मानव जाति के शत्रु हैं। समाज के अपराधी हैं। चाहे जांच एजेंसियों के ध्यान में यह बात आये या न आए परन्तु यही सत्य है। इस घटना के मूल में पाखण्डी लोगों की ही लीला है। आत्महत्या तो उन ग्यारह लोगों ने की है परन्तु इस कृत्य तक जिस विचारधारा ने उन्हें पहुंचाया है वह भी उतनी ही दोषी है।

इस विषय में पूरे समाज को एक गहन चिन्तन की आवश्यकता है जिससे कि इस दूषित मानसिकता से मुक्ति मिल सके।

स्मरण रखिये :-

१. आत्मा एक निराकार, चेतन, अल्पज्ञ, अनादि, अविनाशी सत्ता है जिसे कार्य करने के लिए शरीर की आवश्यक्ता होती है और यह शरीर मिलता है ईश्वरीय व्यवस्था से। वह स्वयं शरीर धारण या त्याग नहीं कर सकता। हां! कभी-कभी मूर्खता के कारण आत्महत्या लोग कर लेते हैं पर वह भी स्वाभाविक स्थिति नहीं है।

२. ईश्वर एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, चेतन सत्ता है जो उचित अनुचित कर्मों का फल आत्मा को देता है।

३. मोक्ष जीवात्मा प्राप्त करता है एक लम्बे, कठिन और उच्च कोटि के योगाभ्यास से, केवल शरीर को त्याग देना मोक्ष नहीं है।

इन सभी बातों को जानने के लिये ऋषियों के बनाए ग्रंथ एवं वेदादि शास्त्रों में लिखे हुए को योग्य एवं अनुभवी व्यक्तियों से जानना आवश्यक है।

उर्दू दिवस - १ नवम्बर

- यह विदेशी भाषा है जो अरबी लिपि में दाएं से बाएं की ओर लिखी जाती है।
- मुगलों के शासन काल में यह सरकारी भाषा रही थी।
- जिन्ना ने १९४७ में कहा था कि देश विभाजन का श्रेय उर्दू को है।
- पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा उर्दू ही है। लाहौर के मुस्लिम अभी भी पंजाबी बोलते हैं लेकिन लिखने का कार्य अरबी लिपि में ही होता है।
- उदारवादी- अदूरदर्शी- स्वार्थी नेताओं ने खण्डित भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उर्दू को स्थान देकर भयंकर गलती की।
- बिहार के बाद उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का स्थान देकर हिन्दी का महत्व कम कर दिया।
- उत्तरी भारत के मुस्लिम नेता शुद्ध हिन्दी बोलते हैं लेकिन सरकारी कर्मचारी जनगणना में इन्हें उर्दू भाषी लिख देते हैं।
- मुस्लिम घरों-दुकानों पर प्राय: हिन्दी के दैनिक अखबार ही पढ़े जा रहे हैं।
- १९७१ में उर्दू ही के कारण पाकिस्तान टूटा और पूर्वी पाकिस्तान बांग्ला भाषी बांग्ला देश बना।
- आश्चर्य है कि पश्चिम बंगाल के मुस्लिम बांग्ला की जगह उर्दू को पसन्द कर रहे हैं। उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा देने की मांग कर रहे हैं।
- कश्मीर घाटी के मुस्लिम कश्मीरी भाषा की अपेक्षा उर्दू को अपना रहे हैं।
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और उसकी शाखाओं में ग्यारहवीं से लेकर चौदहवीं कक्षा तक उर्दू को अनिवार्य विषय घोषित कर दिया गया है।
- लखनऊ मेट्रो ट्रेन के स्टेशनों में उर्दू में भी नाम लिखवाए गए हैं।
- उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा देने के विरोध में, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ा किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली फिर भी मैं उनके प्रयास व संघर्ष की प्रशंसा करता हूं। अनेक कार्यों से संघर्ष करने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

इन्द्रदेव गुलाटी
संस्थापक- सावरकर वाद प्रचार सभा
बुलन्द शहर (उ.प्र.)
चलभाष -८९५८७७८४४३

मन्त्रगीत

प्रभुवर प्रत्यक्ष

जो रहते देव-प्रजा बनकर।
उनके प्रत्यक्ष रहें प्रभुवर।।

क्यों यत्र तत्र तुम तकते हो।
क्यों नहीं सूर्य को लखते हो।
दिनकर देवत्व प्रदाता हैं,
आचरण सृजन कर सकते हो।
लेते प्रखर प्रेरणा उठकर।
उनके प्रत्यक्ष रहे प्रभुवर।।१ ।।

जो मननशील हो जाते हैं।
देवत्व सहज अपनाते हैं।
आसुरी वृत्तियां त्याग वही,
परमेश पुत्र पद पाते हैं।
मनु-बोध कराते हैं हितकर।
उनके प्रत्यक्ष रहे प्रभुवर।।२ ।।

प्रत्यक्ष सूर्य आभा अनुपम।
दिखलाता प्रभु महिमा उत्तम।
प्रभु-रवि की छवि छा जाने से,
उद्‌गारों का होता उद्‌गम।
यह धन्य ईश दर्पण दिनकर।
उनके प्रत्यक्ष रहे प्रभुवर।।३ ।।

स्त्रोत- **प्रत्यङ् देवानां विशः**
प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्।
प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे।।
ऋ० १.५०.५।।

- देवनारायण भारद्वाज -
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ. प्र.)
दूरभाष : ०५७१ - २७४२०६१

कटु वास्तविकता

बूढ़े मां बाप को वृद्धाश्रम
पहुंचाने का सारा दोष
हम सब साधारणतया
नालायक बेटे के सिर
मढ़ देते हैं।
स्वयं भुक्तभोगी होते हुए भी
हम एक कटु वास्तविकता से
हमेशा आंखे फेर लेते हैं।
अधिकतर ऐसे मामलों में
असली प्रेरक बेटा नहीं
बहू होती है।
जो रात दिन झूटी सच्ची
शिकायतें कर-कर के
पति को मजबूर कर देती है।

दो पाटों के बीच

एक चिरस्थायी समस्या
जिस से हम सब पीढ़ी दर पीढ़ी
जूझते चले आए हैं
पर जिस का कोई स्थायी संतोषजनक
समाधान आज तक ढूंढ नहीं पाए हैं।
बेटे की शिक्षित बारोज़गार होते ही
मां बड़े चाव से चुन कर अपनी पसंद की
सुन्दर सलोनी बहू ले आती है.
पर कुछ ही दिनों में न जाने क्यों
उसकी केमिस्ट्री ही बदल जाती है.
वह ममतामयी मां के स्थान पर
जैसे क्रूर प्रतिपक्षी बन जाती है.
उसे सहन नहीं होता कि वही बेटा
जो कल तक उसका पल्लू पकड़े
मां-मां करता डोलता था
अचानक नई आई छोकरी के
वश में कैसे चला गया !
और बेचारा युवक मां और पत्नि के
दो पाटों में पिसने लगता है!

- ओमप्रकाश बजाज, इन्दौर
चलभाष : ९८२६४९६९७५

जगदीश्वर से नाता जोड़ो

ईश्वर की माया अजब, प्रभु है जगदाधार।
निराकार सर्वज्ञ अज, जग का पालनहार।।
जग का पालनहार, विश्व का है निर्माता।
अजर अमर है नित्य, पवित्र है सच्चा दाता।।
कर्मों का फल यथा-योग्य सबको है देता।
न्यायकारी जगदीश, किसी से कुछ ना लेता।।१।।
नर-नारी संसार के, गए धर्म को भूल।
स्वार्थ में अंधे हुए, लड़ते मूढ़ फिजूल।
लड़ते मूढ़ फिजूल, नर्क संसार बनाया।
दिया धर्म को छोड़, पाप को गले लगाया।
पशुओं से भी बुरे, काम करके हर्षाते।
जीवन का उद्‌देश्य, अनाड़ी समझ न पाते।।२।।
कल्याणी बाणी सुनों, प्रभु की चारों वेद।
पढो ध्यान से लो समझ, भले-बुरे का भेद।।
भले-बुरे का भेद, जान लो, तज नादानी।
मानवता लो धार, बनो तुम सच्चे ज्ञानी।
भोगोगे आनन्द, बनो तुम परोपकारी।।
गाएगी यशगान, तुम्हारे, दुनियां सारी।।३ ।।
राजा-महाराजा गए, गए वीर बलवान।
ज्ञानी-ध्यानी सब गए, करो अरे कुछ ध्यान।।
करो अरे कुछ ध्यान, रहे ना रावण बाली।
अबदाली, तैमूर, सिकन्दर मिटे, कुचाली।।
जो आता है यहां, एक दिन वह जाता है।
काल बड़ा बलवान, न कोई बच पाता है।।४।।
भला इसी में मान लो, ऋषियों की तुम बात।
जीवन यह होगा सफल, बन्द करो उत्पात।।
बन्द करो उत्पात, वेद पथ को अपनाओ।
करो धर्म के काम, जगत को स्वर्ग बनाओ।।
मैं-मेरा, तेरा-तेरी की रट अब छोड़ो।
''नन्दलाल'' अब जगदीश्वर से नाता जोड़ो।

विश्वकर्मा कुल गौरव
- पं. नन्दलाल 'निर्भय'
आर्य सदन बहीन,
जनपद-पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

सृष्टि सम्वत् गणना पर शास्त्रार्थ की चुनौती

साभार-आर्यावर्त्त केसरी, अमरोहा
१ से १५ जुलाई २०१८

सेवा में,

सपादक- आर्यावर्त्त केसरी

सादर सप्रेम नमस्ते !

ईश कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्दित होंगे। आपके द्वारा प्रकाशित "**आर्यवर्त्त केसरी**" (पाक्षिक पत्रिका) अंक १६-२८ फरवरी २०१७ अंक के पृष्ठ संख्या-३ पर "**सृष्टि सम्वत् गणना पर शास्त्रार्थ की चुनौती**" शीर्षक से बॉक्स में समाचार प्रकाशित हुआ है। उसके अनुसार दस रुपये के स्टॉम्प पेपर पर मैंने अपना अभिमत तथा सहमति दिनांक ११/०४/२०१७ को भेजी थी। मेरा अभिमत पक्ष यह है कि चैत्र पूर्णिमा, दिन मंगलवार, विक्रम सम्वत् - २०७४ तदनुसार दिनांक ११ अप्रैल २०१७ का जगत् को उत्पत्ति में एक अरब, छयानवे करोड़, आठ लाख, तिरेपन हजार एक सौ सत्रह अर्थात् (१९६०८५३११७) वर्ष व्यतीत हो गये हैं और यह सृष्टि सम्वत् का १९६०८५३११८ वॉ वर्ष चल रहा है।

आचार्य लोकेश जी दार्शनेय का पक्ष है कि सृष्टि की उत्पत्ति में १९७२९४९११९ वर्ष व्यतीत हो गये हैं। इस विषय पर शास्त्रार्थ की खुली चुनौती मैंने दी थी। यदि आचार्य दार्शनेय लोकेश जी मुझसे शास्त्रार्थ करना चाहें तो इसकी घोषणा करें। आपसे निवेदन है कि इस विषय को अपनी पाक्षिक पत्रिका **आर्यवर्त्त केसरी** में छापने-छपवाने की कृपा करें। धन्यवाद

- आचार्य भद्रकाम वर्णी -

वर्तमान पता - आर्य समाज मन्दिर
डी.डी.यू. मार्ग, मिण्टो रोड़, नई दिल्ली - ११०००२

कल्पादि गणना से जुड़ी चुनौती स्वीकार

श्रीमान, १ से १५ जुलाई के आर्यावर्त्त केसरी के पृष्ठ १० पर छपी चुनौती को स्वीकार करते हुए मुझे हर्ष अनुभव हो रहा है क्योंकि आखिरकार इस से सृष्ट्यादि गणना के नाम पर खास कर आर्य समाज में, जो द्वन्द चल रहा है उसको पूर्ण विराम मिल सकेगा। प्रतिवर्ष सुप्रतिष्ठित ज्योतिर्विद, स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती, गुरुकुल वडलूरु, आन्ध्र प्रदेश के द्वारा स्पष्टीकृत सृष्ट्यादि गणना प्राप्त हो रही है और चूंकि वह सूर्य सिद्धान्त के अनुसार सही से दी गयी है इस कारण मैं उसे अपने पञ्चाङ्ग '**श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्**' में प्रकाशित करता आ रहा हूँ। स्वाभाविक और स्पष्ट है कि मैं उस से सहमत हूं। नियमत: ये चुनौती स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी को दी जानी चाहिए थी तथापि संस्कृति के व्यापक हित में मुझे स्वयं भी चुनौती का हिस्सेदार बनाने में कोई परहेज नहीं है।

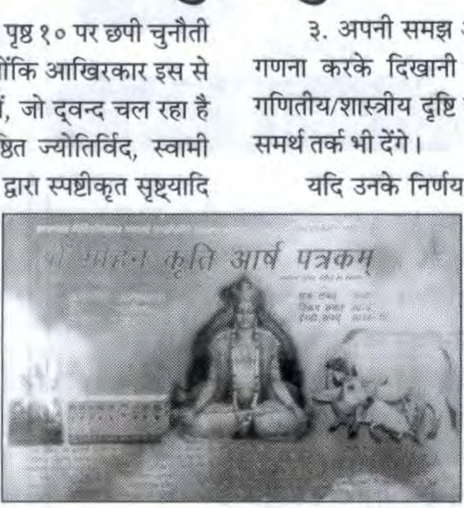

मेरी कुछ शर्तें रहेंगी - १, शास्त्रार्थ किसी राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित संस्था जैसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा, अजमेर, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात, वैदिक मिशन मुम्बई या आर्य समाज की अन्य कोई लब्ध प्रतिष्ठित है जिसका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर है तो उसके द्वारा आयोजित होना चाहिए जो कि निर्णीत तथ्य को वैदिक समाज में पूरी तरह से लागू भी कर सके। ऐसा कुछ न हो कि सारा प्रयास ले दे कर फिर वही ढाक के तीन पात का होकर रह जाए, इसलिए इस विषय में हमें किसी का भी वैयक्तिक तौर का आयोजन स्वीकार नहीं होगा।

२. निर्णायक मंडल में कम से कम, विश्व विद्यालयों के न्यूनतम दो ज्योतिष विभागाध्यक्ष और एक ज्योतिष का प्रतिष्ठित अन्य विद्वान् हो। वि. वि. जैसे कि वाराणसी हिन्दू विश्व विद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा संस्कृत विश्व विद्यालय या कोई भी। कल्पादि की गणना के लिए हमें सिद्ध करना है कि कौन सी गणना सही है ना कि इस सन्दर्भ से कौन व्यक्ति सही है।

३. अपनी समझ और शास्त्रीय सूचना के अनुसार श्याम पट पर काल गणना करके दिखानी होगी। इस पर निर्णायक अपना निर्णय देंगे कि गणितीय/शास्त्रीय दृष्टि से कौन गलत है और कौन सही। अपने निर्णय का समर्थ तर्क भी देंगे।

यदि उनके निर्णय से कोई पक्ष सहमत नहीं हैं तो उनके सामने अपनी गणित के पक्ष में शास्त्रीय तथ्य रखेंगे। इस प्रकार सभी के बीच खुला विचार मंथन होगा। कोई भी अपनी कल्पना जोड़कर तर्क नहीं करेगा अपितु जो भी तर्क या प्रमाण देगा वो किसी न किसी ज्योतिष-सिद्धान्त ग्रन्थ से लिया हुआ होना चाहिए।

४. सृष्ट्यादि गणना के निमित्त शास्त्रार्थ के स्थल पर १२ अंक तक की गणितीय क्षमता का संगणक उपलब्ध होना चाहिए। कैलकुलेटर की गणित को दुहराने के लिए साथ में एक सहायक रख सकते हैं।

अन्त में स्पष्ट करता हूँ कि हमारा उद्देश्य किसी से जीतने का नहीं अपितु समाज और संस्कृति के हित में सत्यबद्ध, सर्वस्वीकार्य वैदिक सिद्धान्त सम्मत तथ्य को उजागर करने का है। हमारा ब्रह्म वाक्य है कि आर्य समाज जब तक वैदिक पचाङ्ग को पूरी सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं दे पाता तब तक उसका आर्यत्व अधूरा है। आर्य समाज को स्मरण रखना होगा कि अनार्ष मान्यताओं पर आधारित पौराणिक पञ्चाङ्गों पर चलते हुए वे जाने-अनजाने स्वयं भी एक अप्रत्यक्ष रुप से पौराणिक मान्यताओं को ही पुष्ट कर रहे हैं।

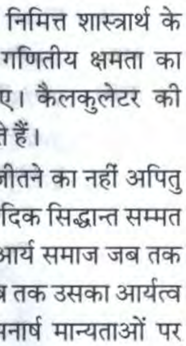

आचार्य दार्शनेय लोकेश, सम्पादक
श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् (एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)
सी -२७६, गामा-१, ग्रेटर नॉएडा
दूरभाष : ०१२०४२७१४१०

म्यूनिख (जर्मनी) के अन्तर्राष्ट्रीय विमानपत्तन से एक पत्र

समादरणीय आर्य प्रवर सादर नमस्ते

ईश्वर कृपायात्र कुशलं तत्रास्तु!

दिल्ली से ८ घंटे २० मिनट की यात्रा कर Lufthansa Airlines के वायुयान से जर्मनी के प्रसिद्ध शहर म्यूनिख पहुंचे। ये हमारी बारहवी विदेश यात्रा है। जर्मनी यूरोप का सर्वाधिक आबादी वाला देश है। यहां की जनसंख्या ८ करोड़ २० लाख है जिसमें ६० से ७०% इसाई, ४७ लाख मुस्लिम, १ लाख २० हजार हिन्दू और ढाई लाख बौद्ध है। जर्मनी का क्षेत्रफल ३ लाख ५७ हजार वर्ग कि.मी. है अत: यह भारत से ९ गुना छोटा है। इसमें १६ राज्य व ४०१ जिले हैं। १० वीं शताब्दी में यहां रोमन साम्राज्य स्थापित हुआ था। बाद में मार्टिन लूथर के प्रयासों से ये प्रोटेस्टेंट सुधार का केन्द्र बना। एक बड़ी क्रान्ति से १८४९ में यहां लोकतंत्र स्थापित हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध में दो जर्मन राज्य हो गए। जब पूर्वी यूरोप में कम्युनिस्टों का प्रभाव हुआ तो १९८९ में बर्लिन की दीवार गिरा दी गई ३ अक्टूबर १९९० को पूरा जर्मनी एक बना दिया गया। भारत को लगातार छोटा करते हुए बंटवारे का षड़यन्त्र करने वाले लोगों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। लेटिन भाषा में जर्मन का अर्थ लोकप्रिय होता है। पूरे विश्व की चौथे नंबर की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला यह देश है। संसार के माल का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक व आयातक देश इसे माना जाता है। विश्व में इसकी गरिमा का पता इससे चलता है कि नाटो, OECD, जी-८, जी-२०, विश्व बैंक और आईएमएफ जैसी संस्थाओं के सदस्यता इसे प्राप्त है। उत्तर में डेनमार्क, पूर्व पोलैंड व चेक गणराज्य, दक्षिण पूर्व में ऑस्ट्रिया, दक्षिण में स्विट्जरलैंड, फ्रांसादि पश्चिम और उत्तर पश्चिम में नीदरलैंड इसकी सीमा से लगे हैं। यूरोप की तीसरी सबसे बड़ी झील का तट यहां बड़ा मनोहर दृश्य उपस्थित करता है यहां का समुद्रीतट भी बहुत आकर्षक है। बेकरी के व्यंजनों में अत्यंत निवासियों की विशेष रुचि होने से ६०० प्रकार की रोटियां व १२०० प्रकार की पेस्ट्री व रोल यहां मिलते हैं। ३०% आबादी भोजन में पनीर का अवश्य सेवन करती है। ९८% आबादी मांसाहारी है और शराब की भी प्रति व्यक्ति खपत बहुत ज्यादा है। फीफा वर्ल्ड कप यहां के फुटबॉल खिलाड़ी अनेक बार जीत चुके हैं। दक्षिण कोरिया के बाद विज्ञान और इंजीनियरिंग के सबसे ज्यादा स्नातक यहां की शिक्षण संस्थायें तैयार करती है। प्रकाश, गुरुत्वाकर्षण के विशेष सापेक्षता के सिद्धान्तों की शुरुआत करने वाले अल्बर्ट आईस्टीन के साथ एक्सरे की खोज, परमाणु विखण्डन की खोज, प्रथम पूर्ण स्वचालित कम्प्यूटर का निर्माण आदि करने वाले अनेक वैज्ञानिकों की मातृभूमि होने का गौरव जर्मनी को प्राप्त है। आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना, हिटलर सहित अनेक नेताओं से मुलाकात के कारण भारत के नेताजी सुभाष चन्द्र जी बोस का जर्मनी से आत्मीय सम्बन्ध प्रसिद्ध है। तीन करोड़ पर्यटक हर साल आते हैं। ५० लाख जर्मन योग्यता सम्पन्न शिक्षाविद वैज्ञानिक इंजीनियर आदि दूसरे देशों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। स्थानीय समय के अनुसार अभी प्रात: ९.३० पर हमें यूनाइटेड एयरलाइंस के वायुयान से न्यूयॉर्क व वहां से अटलांटा रवाना होना है। जर्मनी का ये प्रवास हमारा केवल साढ़े तीन घंटे का ही था। इसमें हमने सहयात्रियों को वैदिक धर्म के टेक्स्ट बांटे। एयरपोर्ट के प्रार्थना स्थल पर जाकर वहां के रजिस्टर में हिन्दी व अंग्रेजी में आर्य समाज के सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए कुछ सन्देश लिखा। भारत से अपने साथ लाया हुआ अंग्रेजी व हिन्दी का साहित्य रख दिया। जिससे विभिन्न मत मतान्तरों के अनुयायी उसे पढ़ सकें। भारत की समृद्धि व अखण्डता के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए ईश उपासना की। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अटलांटा में १९ से २२ जुलाई २०१८ तक सम्मिलित होने व अमेरिका के विभिन्न अंचलों में यथा शक्ति प्रचार करने के बाद अगला पत्र हम अमेरिका से लिखेंगे।

कांटे आते हैं तो आने दें, हम तो एक फूल खिलायें,
अंधकार को कोसे नहीं दीपक एक जलाएं।
एक-एक यदि फूल खिला तो फिर बसंत लह लहायेगा,
एक यही दीप जला तो अंधकार मिट जाएगा।।

आर्य समाज व गृह मंदिर के सभी को नमस्ते कहें।

आपका अपना ही - **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**

समृद्धि के प्रतीक पाताल देश (अमेरिका) के सिनसिनाटी में आर्य समाज की स्थापना के बाद लिखी गई पाती

समादरणीय आर्य प्रवर, सादर नमस्ते

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु!

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा १९ से २२ जुलाई २०१८ तक अटलांटा के एक पांच सितारा होटल में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया था। जिसका उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ. श्री देवव्रत जी ने किया। दो विभिन्न सत्रों में तीन विषयों पर हमें अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ। माता पिता का सन्तान के निर्माण में योगदान, गृह दायित्व के साथ अध्यात्म का समन्वय, अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ आर्य समाज की भूमिका इन विषयों पर हमने उदाहरण सहित व्याख्यान दिए। वेदादि शास्त्रों के प्रमाण ऐतिहासिक दृष्टान्त सहित प्रस्तुत किए। प्रथम मुख्य विषय पर लगभग १६ सुझाव रखें। प्रात: कालीन १ घंटे का ध्यान योग उपवास का प्रशिक्षण भी साधकजनों को देने का अवसर प्राप्त हुआ। अटलांटा के बाद न्यूयॉर्क के जमैका आर्य समाज में २९ जुलाई को पुन: महामहिम राज्यपालजी से मिलना हुआ तो होशंगाबाद गुरुकुल के दिसम्बर के वार्षिकोत्सव पर आपको आमन्त्रित किया। अटलांटा, न्यूयार्क, न्यूजर्सी के अनेक परिवारों, आर्यसमाजों में हमें यज्ञ, उपदेश सैद्धान्तिक चर्चा, योग दर्शन के अध्यापन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सिनसिनाटी नगर अटलांटा से ७२५ किलोमीटर व शिकागो से ४६३ किलोमीटर है। १० अगस्त को एक परिवार में यज्ञ करवाने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं से चर्चा कर आर्य समाज की स्थापना कर दी। फिजिक्स के प्राध्यापक डॉ. अरुण नागपाल जी को प्रधान, श्री रवि त्रिवेदीजी को मन्त्री, इंजीनियर राघवेन्द्र जी को कोषाध्यक्ष व अन्य को दायित्व सौंपकर शपथ ग्रहण करवाई। अमेरिका सभा के प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य,

दिल्ली के श्री विनय जी आर्य से अधिकारियों की फोन पर चर्चा करवाई। सभी ने इस ऐतिहासिक कार्य हेतु सुखद आश्चर्य व्यक्त करते हुए हर संभव सहयोग की बात कही। अमेरिका के गणमान्य आर्यों को भी बाद में सूचना दी गई। सभी ने शुभकामनायें व्यक्त की। अमेरिका के ५० राज्य हैं इसका क्षेत्रफल ९८३३५०० वर्ग किलोमीटर है जो भारत से लगभग ३ गुना बड़ा है पर जनसंख्या भारत से एक तिहाई ३२.५ करोड मात्र हैं। ६९% इसाई, २४% नास्तिक, २% यहूदी, १% मुस्लिम, १% बौद्ध, १% हिन्दू व १% अन्य धर्म के हैं। मूलनिवासी १.२% मात्र बचे हैं। अंग्रेजों ने उन्हें समाप्त सा कर दिया है। पूरी दुनिया की ४०% संपत्ति का स्वामी अमेरिका है पर विश्व की केवल ५% आबादी यहां रहती है। ब्रिटेन से सबसे पहले आजाद होकर ४ जुलाई १७७६ को इस देश की स्थापना हुई थी। १८ वीं सदी के उत्तरार्ध में सेना का नेतृत्व करते हुए जनरल जॉर्ज वाशिंगटन ने विद्रोह कर दिया था। १३ उपनिवेश ब्रिटेन से अलग हो गए। श्री वाशिंगटन को राष्ट्र निर्माता माना जाता है। उस क्रांति को ही स्वतन्त्रता संग्राम कहते हैं। देश की विशालता व विविधता के कारण अलग-अलग चार क्षेत्रों में चार पृथक- पृथक समय यहां की घड़ियों में देखा जाता है जिसका सर्वाधिक अन्तर तीन घंटे का है। अमेरिका में मकानादि पर टैक्स बहुत ज्यादा देना होता है पर सरकार प्रजा के लिए कितना उत्तम प्रबन्ध करती है कि किसी को कोई शिकायत नहीं रह पाती। हाई स्कूल तक निशुल्क शिक्षा, चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था, पूरे देश में स्वास्थ्य व सौन्दर्य वर्धक हरियाली, सुरक्षार्थ अनेक प्रकार की पुलिस, प्रत्येक कार्यालय में कर्तव्य परायण कर्मचारी, उत्तम मानक स्तर की बहुत चौड़ी सड़कें, सैकड़ों पर्यटक व दार्शनिक स्थल, बच्चों को उत्कृष्ट करते स्कूल, लाइब्रेरी सहित अनेक व्यवस्थायें भारत सहित विश्व के अनेक देशों के नागरिकों को जैसे बाँध सा लेती है। कोई वापस अपने देश जाना नहीं चाहते हैं। पूरे देश में ट्रेन व बस वातानुकूलित ही होती है व यात्रा महंगी है पर जन सामान्य वायुयान की यात्रा ज्यादा करता है। विश्व में ४४००० एयरपोर्ट में से १५०९५ एयरपोर्ट केवल अमेरिका में है। १८ वर्ष के बाद स्वावलंबी हो जाते हैं अत: स्वच्छंदता व स्वतंत्रता ज्यादा है। अंत में शिकागो आर्यसमाज में १२ अगस्त को हमारा एक आध्यात्मिक विषय पर व्याख्यान हुआ जिसका फेसबुक पर सीधा प्रसारण हुआ था। २८ से १४ अगस्त तक लगभग ४८ दिनों के लिए हमने अपनी बारहवीं विदेश यात्रार्थ समय निकाला था। ईश्वर कृपा से ये सफल हुई। CNN सेन्टर, कोकाकोला म्यूजियम, डिजनीलैंड, एयर फोर्स म्यूजियम, नियाग्रा प्रपात, वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर आदि सैकड़ों स्थल है जिनको देखने लाखों पर्यटक अमेरिका आते हैं। **सर्वेभ्यो नमो वाच्यम्**- माना बुढ़ापा जिन्दगी की रवानी है।
जवानी में हो वैराग्य, तो बुढ़ापा भी जवानी है।

आपका अपना ही
आचार्य आनंद पुरुषार्थी
अंतरराष्ट्रीय वैदिक मिशनरी

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

ईश्वर की असीम कृपा से आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र) के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन रविवार दिनांक २६/८/२०१८ से ३/९/२०१८ सोमवार तक भगवान् श्री कृष्ण के पावन जन्मोत्सव के साथ निर्विघ्नपूर्वक सम्पन्न हुआ। वेद प्रचार सप्ताह का शुभारंभ आर्य समाज मन्दिर के प्रात: काल वैदिक यज्ञ आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ तथा इस अवसर पर मथुरा से पधारे आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोंपदेशक श्री उदयवीर जी आर्य एवं उनकी सुपुत्री कु. सुरभी आर्य के सुमधुर भजनों के द्वारा वेदों का संदेश दिया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री ने वेदों का सारगर्भित उपदेश दिया तथा श्रावण मास की महातम्य को दर्शाते हुए कहा कि श्रावण शब्द **'श्रु'** श्रवणे धातु से बनता है जिसका अर्थ होता है सुनना और सुनाना। अर्थात् जिस मास में सबसे ज्यादा सुनने और सुनाने का तथा पढ़ने व पढ़ाने का क्रम रहता है उस मास को श्रावण मास कहा जाता है। इस अवसर पर उन्होंने इसकी विस्तृत व्याख्या की।

इन्दौर शहर के कोने-कोने में तथा धार्मिक स्थलों मन्दिरों(हरसिद्धि मन्दिर) में भी तथा अन्य परिवारों में यज्ञ/सत्संग एवं भजन का आयोजन अत्यंत उत्साहपूर्वक किया गया। वेद प्रचार सप्ताह का समापन आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज में यज्ञ के साथ ही समापन हुआ। इस अवसर आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक जी ने भगवान् श्रीकृष्ण के संदेशों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा भगवान् श्री कृष्ण और भगवान् राम हमारे आदर्श महापुरुष है, **अत: हमें भगवान् श्री कृष्ण के चित्र की पूजा नहीं बल्कि चरित्र की पूजा करनी चाहिए** क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण का जीवन यज्ञमय था। वह वेदों के ज्ञाता थे, योगि थे, ऐसे महान योगि को चूड़ी बेचने वाला कहना या छलिया कहना अत्यंत अज्ञानता है। अत: हमें उनके संदेहों को नहीं बल्कि संदेशों को जीवन में धारण करना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सम्माननीय श्री शिवकुमार जी चौधरी सपत्नीक (प्रसिद्ध उद्योगपति प्रतिभा सिंटेक्स) इन्दौर, श्री अरुण त्रिवेदी जी (मंत्री आर्य समाज बैंगलोर) थे। इस अवसर पर मुख्य रूप से वेद प्रचार सप्ताह के दौरान आठों दिवस दोनों समय आचार्य जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग दिया। सर्व श्री रमेश चन्द्र जी चौहान (चतुर्वेदी), श्री अरुण त्रिवेदी जी, ओमप्रकाश पाटीदार जी (आर्य समाज मन्दिर, सिंधी कॉलोनी) इंदौर, श्री कृष्णाकांत जी पाटीदार, श्री दिनेश श्रीवास्तव जी, डॉ. विनोद आहलूवालिया (मन्त्री मल्हारगंज), श्रीमती गीता आहलूवालिया जी, डा. दक्षदेव जी गौड़ (प्रधान आर्य समाज मल्हारगंज), श्रीमती विमला गौड, श्री राकेश उपाध्याय जी, श्री उमेश गुप्ता जी, श्री हरीश गुप्ता, श्री शशि गुप्ता, सुश्री अमिता पांचाल, श्री पुरुषोत्तम गुप्ता, श्री हरिसिंह जी, श्रीमती नीलम जी, श्रीमती ज्योति चड्डा, आशीष मेहता का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के मन्त्री व प्रधान जी ने सभी आगंतुक महानुभावों का तथा जिन्होंने अपने गृह में यज्ञ/सत्संग का आयोजन करवाया व सहयोग प्रदान किया उन सभी लोगों का हृदय से आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

सत्य की स्थापना एवं विश्व शान्ति हेतु शास्त्रार्थ का आव्हान

प्रधान जी एवं मन्त्री जी मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

आदरणीय सभा प्रधानजी एवं मन्त्री जी सादर नमस्ते

आर्यसमाज वैदिक सिद्धान्तों को मानता है। जो सत्य है तथा संनातन है। जिसको असत्य साबित करने का साहस, सामर्थ्य किसी अन्य मत को मानने वालों में नहीं है फिर भी सत्य सनातन वैदिक धर्म को सर्वमान्य बनाने में हम पिछड़ रहे है।

मेरा निवेदन है कि देश की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं, जिला सभाएं मिलकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय से अनुरोध करें कि वे राष्ट्रीय स्तर पर शास्त्रार्थ सम्मेलन का आयोजन भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं भारत के सभी उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की उपस्थिति में प्रीतिपूर्वक व राष्ट्रकल्याण के संवाद हेतु पर्याप्त समय देकर सभी मजहबी एवं वैदिक संगठनों को आमंत्रित किया जावे।

जैन, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई, सीक्ख, कबीरपन्थी तथाकथित हिन्दू मत में प्रचलित समस्त पन्थ सम्प्रदाय आदि के आचार्यों, साधुओं, शंकराचार्यों, पादरियों, महन्तों, महामण्डलेश्वरों, मौलवियों, पण्डितों, गुरुओं आदि सभी को कुछ बिन्दुओं का निर्धारण कर आर्य समाज के साथ शास्त्रार्थ की तैयारी के साथ बुलावें। इसके अलावा भारत के निष्पक्ष प्रगतिशील व बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक, पत्रकारों, साहित्यकारों, कानूनविदों, इतिहासकारों व समाज शास्त्रियों को भी इस सम्मेलन में आमन्त्रित किया जावे।

सभी वक्ताओं-संगठनों को स्पष्ट बता दिया जावे कि शास्त्रार्थ संवाद प्रीतिपूर्वक, राष्ट्रकल्याणार्थ सत्य-असत्य के निर्धारण तथा सत्य की स्थापना के लिए हो रहा है। किसी को हानि-लाभ, जय-पराजय तथा ईर्ष्या-द्वेष की भावना त्यागकर विश्व को परिवार समझकर इस गंभीर मुद्दे को हल करना है। जो भी सत्य साबित हो उसे ही विश्व धर्म माना जावे। जो असत्य, अपूर्ण, अवैज्ञानिक तथा मानवता के हित के प्रतिकूल हो, उसे उचित समय की सूचना के साथ देश में पूर्ण प्रतिबंधित कर दिया जाए।

देश में अराजकता बढ़ रही है । अतः सम्मेलन स्थल पर कड़ी-सुरक्षा व्यवस्था हो देश की सीमाओं को सील कर देश में कम से कम १ माह तक हाई अलर्ट रखा जावे। आशा है इससे वैदिक धर्म के प्रचार, प्रसार की सुविधा होगी। आपसी घृणा बैर समाप्त होकर सम्पूर्ण विश्व में एकता सुदृढ़ होगी। वैदिक धर्म की जय।

आर्य मानसिंह यादव, उपप्रधान-चम्बल संभाग
मध्यभारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा, भोपाल

१३५ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक : १६ से १८ नवंबर २०१८

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड़, अजमेर

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - डॉ. विनय विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में ।

वेद गोष्ठी - 'षड्दर्शनों की वेद मूलकता और महर्षि दयानन्द' विचारणीय बिन्दू पर अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त तत्वावधान में।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - २१ वर्ष आयु के छात्र किसी एक वेद को आद्योप्रान्त कण्ठस्थ कर इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। जिन ब्रह्मचारियों ने पूर्व प्रतियोगिता में जिस वेद पर प्रस्तुति दे चुके हों उससे अन्य वेद का कण्ठस्टीकरण कर भाग ले सकते हैं। अपने गुरुकुल, आश्रम, संस्थान प्रमुख द्वारा अधिकृत पत्र पर ३१ अक्टूबर तक पंजीकृत होना आवश्यक।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान, विदुषियों एवं कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी आयोजन पूर्ववत् होगा।

आमन्त्रित विशिष्ट विद्वान एवं अतिथि - श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. देवनारायण जी तिवारी-कोलकाता, डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री-रायबरेली, स्वामी ऋतस्पति जी-होशंगाबाद, आचार्य विद्यादेव जी, श्री दीनदयाल जी गुप्ता-कोलकाता, डॉ. सोमदेव जी 'शतांशु'-गुरुकुल कांगड़ी, श्री जगदीश जी शर्मा-जयपुर, ठाकुर विक्रमसिंह जी-दिल्ली, श्री प्रकाश जी आर्य-महू (महामन्त्री सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा अनेक गणमान्य विद्वानों के अमृत वचनों तथा दर्शन का लाभ इस अवसर पर उपस्थितों को होगा।

इस आयोजन मैं अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर मानव जाति के उपकारार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले ऋषि के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने तथा सभा द्वारा संचालित प्रकल्पों के लिए मुक्तहस्त से दान देने का अनुरोध परोपकारिणी सभा अजमेर करती है।

गजानंद आर्य - संरक्षक **डॉ. सुरेंद्र कुमार - कार्यकारी प्रधान** **ओम मुनी - मन्त्री**

हिन्दी दिवस सम्पन्न, महिपाल सिंह जी 'हिन्दी आर्य रत्न' से सम्मानित

राष्ट्रभाषा हिन्दी का न्यायालयों में उपयोग प्रारम्भ- विवेक नागर

आर्य समाज नीमच (म.प्र.) द्वारा **'हिन्दी दिवस'** के उपलक्ष में १५ सितम्बर को डॉ. महिपाल सिंह जी चौहान के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कन्हैयालाल जी रतावजिया सेवानिवृत्त जिला शिक्षाधिकारी तथा आर्य समाज के संरक्षक द्वारा की गई। विशिष्ट अतिथि थे वैदिक संसार के प्रतिनिधि तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के उपप्रधान श्री बंशीलाल जी आर्य-बरखेड़ा पंथ।

मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारंभ मनोज स्वर्णकार द्वारा किया गया। पश्चात् अतिथियों का स्वागत मनोज स्वर्णकार, सुरेश चन्द्र शर्मा एवं अशोक चौरसिया द्वारा किया गया।

हिन्दी भाषा की उपेक्षा, हिन्दी महत्ता तथा किस प्रकार यह अपना सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सकें इस पर साहित्य मनिषियों सर्व श्री हरीश उपाध्याय, दुर्गेश नागदा, हंसमुख, लोकेन्द्र सिंह परिहार, हर्षराय त्रिवेदी, डॉ. के.के. जैन, सी. एम. शर्मा, माधुरी चौरसिया एवं इतिहासकार सुरेन्द्र शक्तावत द्वारा अपनी ओजस्वी वाणी से प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि श्री बंशीलाल जी द्वारा वीर रस और करुणा रस की कविताएं तथा अंग्रेजी कविता का तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि डॉ. महिपाल सिंह जी चौहान द्वारा अपने विचार प्रकट करते हुए काव्य पाठ किया गया पश्चात् आपको **'हिन्दी आर्य रत्न'** सम्मान से शाल, प्रशस्ति पत्र, हिन्दी साहित्य, श्रीफल, गायत्री मन्त्र के समृति चिन्ह द्वारा आर्य समाज पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मंजुला धीर द्वारा किया गया। आभार कार्यक्रम संयोजक सुरेशचन्द्र शर्मा द्वारा माना गया।

विशाल वैदिक सत्संग आयोजन सम्पन्न

जयपुर। वैदिक वीरांगना दल के द्वारा रविवार १६ सितम्बर को एक विशाल वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने बताया कि सत्संग में वेदों के मूर्धन्य विद्वान स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल (हरियाणा) तथा दर्शनों के विशेषज्ञ स्वामी शांतानन्द जी गुरुकुल भवानीपुर (कच्छ) ने वर्तमान परिपेक्ष मैं चिंता को दूर करने, तनाव रहित जीवन जीने, भविष्य की चिंताओं से मुक्ति पाने निराशा को उत्साह में बदलने तथा असफलता पर सफलता कैसे प्राप्त की जाए इसके तरीके बताए। स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने कहा कि जैसे-जैसे मनुष्य के पास साधन बढ़ रहें है वैसे-वैसे सुख की उम्र घटती जा रही है। परम पिता परमेश्वर ने दुनिया को स्वर्ग और सुख का सागर बनाया है। जहर भी सुख के लिए ही बनाया गया है। जहर से ही अस्थमा की दवा बनती है। स्वामी शान्तानन्द जी ने कहा कि जो व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ भी करने का तैयार होगा वह हमेशा सुखी रहेगा। उन्होंने कहा कि जिसने जितना सद्कर्म किया है, जितना दान दिया है, उसका जीवन उतना ही सुखमय होगा। उन्होंने तनाव दूर करने के उपाय के बारे में कहा कि मनुष्य को दूसरों से घृणा नहीं करनी चाहिए। सत्संग में बड़ी संख्या में आर्य समाज के सदस्य वैदिक वीरांगना दल की सदस्याएं व शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पृष्ठ १४ का शेष भाग :

महर्षि दयानन्द और...

वास्तव में भूत-प्रेत कोई योनि नहीं है। दूसरा अन्धविश्वास और पाखण्ड मूर्ति पूजा और अवतारवाद है। अवतारवाद केलिए लोगों की मान्यता है कि जब धरती पर अन्याय बढ़ जाता है तब अन्याय को नष्ट करने के लिए ईश्वर किसी ना किसी रुप में अवतार लेता है। जैसे रावण अन्यायी को मारने के लिए राम का अवतार लिया और कंस अन्यायी को मारने के लिए कृष्ण के रुप में अवतार लिया। महर्षि दयानन्द ने कहा कि ईश्वर सर्वव्यापी, निराकार, अजर व अमर है। अवतार लेने के लिए ईश्वर को सर्वव्यापी ना रहकर एक स्थान व्यापी होना पड़ेगा। निराकार न होकर साकार होना पड़ेगा और मनुष्य का शरीर धारण करने से उसे बूढ़ा भी होना पड़ेगा और मृत्यु को भी प्राप्त होना पड़ेगा, इसीलिए ईश्वर के यह चारों गुण नष्ट हो जाते हैं, इसलिए ईश्वर अवतार नहीं ले सकता। महर्षि का कहना है कि राम और कृष्ण ईश्वर नहीं थे वे महापुरुष थे। इसी प्रकार महर्षि जी ने मूर्ति पूजा के लिए भी कहा कि मूर्ति जड़ है, उसको किसी प्रकार का ज्ञान नहीं है। जड़ चीज कभी भी, किसी का भला या बुरा नहीं कर सकती, इसलिए मूर्ति पूजा करना समय को बर्बाद करना है। सामान्य जन कह देता है कि मूर्ति पूजा मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी है पर महर्षि जी कहते हैं कि मूर्ति पूजा मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी नहीं बल्किखाई है जिसके अन्धविश्वास रुपी खाई में पड़कर व्यक्ति नष्ट हो जाता है।

६ - वेदानुकूल चलने से ही विश्व शान्ति सम्भव :- ऊपर लिखी बातों से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्व में शान्ति, वेदानुकूल चलने से ही सम्भव है। महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व तक विश्व में केवल वैदिक धर्म ही था, इसलिए विश्व में सुख व शान्ति थी। महाभारत के समय से ही वेद-ज्ञान प्रायः लुप्त होता जा रहा है जिसके कारण विश्व में दु:ख व अशान्ति का बाहुल्य होता जा रहा है, इसलिए हमें महर्षि दयानन्द के बताए वेद मार्ग को पुन: अपनाना होगा, तभी विश्व में सुख व शान्ति का होना सम्भव है। ●

श्रद्धेय आर्य शिरोमणी **श्री सुखदेव शर्मा जी, श्री गजेश शास्त्री जी**
सादर सप्रेम नमस्ते,

श्रद्धेयवर आप द्वारा प्रकाशित वैदिक संसार वर्तमान में आर्य जगत् पत्रिकाओं में सर्वोच्च स्थान रखता है। स्वाध्याय शील आर्य एवं आर्य समाज के पुरुषार्थी आर्य वैदिक संसार प्राप्त होने पर आद्योप्रान्त पढ़कर ही विश्राम करते हैं। क्योंकि इस पत्रिका में प्रेरणा स्त्रोत लेख व अनछूए पहलुओं की जानकारी व अपने अतीत के इतिहास की जानकर मिल रही है।

आप विद्वानों ने परिश्रम करके इस पत्रिका का प्रकाशन कार्य किया है यह इस सदी की सर्वोच्च साहित्य जानकारी है। इसके लिए आप विद्वानों की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है, मैं ईश्वर से आप दोनों की दीर्घायु हेतु प्रार्थना करता हूं।

पं. उम्मेदसिंह विशारद
वैदिक प्रचारक व लेखक, गढ़ निवास मोहकमपुर देहरादून उत्तराखण्ड

यात्रा वृतान्त परमपिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा है....

दिनांक १२ सितम्बर को जालना-औरंगाबाद (महा.) से लौटने के पश्चात् दिनांक १५ से १७ सितम्बर तक आर्य समाज मानटाउन, सवाई माधोपुर (राज.) में आयोजित चतुर्वेद शतकम् तथा वैदिक सत्संग के आयोजन में अथवा आचार्य सोमदेव जी की गरिमामयी उपस्थिति में जबलपुर मध्य प्रदेश में आयोजित आयोजन में जाने का मानस था। इस प्रकार आर्य समाज ब्यावर (राज.) के वार्षिकोत्सव में तथा ऋषि-समृति न्यास जोधपुर द्वारा आयोजित ऋषि स्मृती महोत्सव दिनांक २७ सितम्बर से १ अक्टूबर तक जोधपुर में अथवा ३० सितम्बर से १ अक्टूबर तक आर्य समाज मुंडावर, जिला-अलवर (राज.) द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन-२०१८ में जाने का मानस था, इसी बीच आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी, होशंगाबाद की गरिमामयी उपस्थिति में मथुरा (उ. प्र.) के समीप किसी गांव में आयोजन इन्हीं तिथियों में था। आचार्य जी का अनुरोध इस आयोजन में बुक स्टाल लगाने का था किन्तु किसी भी आयोजन में जाना सम्भव नहीं हो पाया। सितम्बर मास समस्याओं को अर्पित रहा। कम्प्यूटर ऑपरेटर के पास अन्य कार्य अधिक आ जाने तथा उसके द्वारा दैनिक समाचार पत्र में नौकरी भी करने के कारण वह कई महिनों से कार्य को समय पर नहीं कर पा रहा था तथा जल्दी बाजी में त्रुटियां भी हो रही थी जिसके कारण कार्य की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा था, थक-हारकर कम्प्यूटर ऑपरेटर बदलना पड़ा। नवीन कम्प्यूटर आपरेटर के लिए इस प्रकार की पत्रिका का कार्य सर्वथा भिन्न था अत: कुछ समय अधिक लगा तथा उनके साथ लगकर सितम्बर माह की पत्रिका को पूर्ण किया।

वेद प्रचार वाहन का बीमा समाप्त हो जाने पर १८ सितम्बर को उस कार्य को सम्पन्न किया। कम्प्यूटर ऑपरेटर की त्रुटि से डाक पंजीयन नवीनीकरण नूतन वर्ष प्रकाशित नहीं हो रहा था अत: डाक विभाग ने इस छोटी सी त्रुटि का दण्ड २३४००/- रुपये अधिरोपित कर दिया तथा न जमा किए जाने के स्थिति में डाक पंजीयन रद्द किए जाने की चेतावनी का पत्र दे दिया। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के इन्दौर सम्भाग के उपप्रधान श्री गोविन्द राम जी आर्य जो कि इन्दौर संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती सुमित्रा महाजन ताई (लोकसभा अध्यक्ष) के जिला पंचायत प्रतिनिधि भी है। आपको उपरोक्त समस्या से अवगत करवाया। आप इंदौर से ६० किलोमीटर दूर देपालपुर में निवास करते हैं, आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था। इसके उपरांत भी आप दो बार आए तथा साथ जाकर अधिकारियों से अनुनय-विनय की, आपके प्रयासों से सितम्बर माह की पत्रिका का प्रेषण सम्भव हो सका। वैदिक संसार परिवार आपका ह्रदय की गहराइयों से हार्दिक आभार व्यक्त करता है। दिनांक २१-२२ को अक्टूबर माह की पत्रिका के कार्य को सम्पन्न किया। दिनांक २३ सितम्बर को पत्रिका प्रेषण सम्बन्धी कार्यों को पूर्ण किया। दिनांक २५ सितम्बर को अत्यन्त कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए पत्रिका का प्रेषण किया। दिनांक २६ सितम्बर को अन्य कार्यों को सम्पन्न किया। दिनांक २७ से २८ सितम्बर तक पुस्तक पैकेट से भेजी जाने वाली पत्रिकाओं के कार्य को संपादित किया।

दिनांक २९ से ३० सितम्बर को क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में भाग लेने हेतु वैदिक संसार के लगभग ५०० पाठकों को प्रेरणा बाबद् पत्र प्रेषित किए।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा से दिनांक ३ अक्टूबर के प्रात:काल तक इंदौर निवास पर ही रहा। निवास पर ही निर्बाध रूप से निर्विघ्न, नियमित भ्रमण, व्यायाम संध्योपासना धर्मपत्नी, पुत्र तथा पुत्री के साथ देवयज्ञ एवं पं. रामनाथ वेदालंकार कृत वेद मन्जरी के प्रतिदिन एक वेद मन्त्र का स्वाध्याय तथा उपरोक्त भाष्य की विस्तार पूर्वक व्याख्या द्वारा पारिवारिक सत्संग तथा लेखन, पत्राचार, वैदिक संसार के अनेक पाठकों से पत्रिका प्राप्ति तथा अन्य विषयों को लेकर चलभाष पर वार्ता, डाक-विभाग के कार्य आदि कार्यों को सम्पन्न किया। दिनांक ३० सितम्बर को आर्य समाज मल्हारगंज, इंदौर के साप्ताहिक सत्संग के समापन समय पर पहुंचा। प्रधान डॉ. दक्षदेव जी गौड़, मन्त्री श्री विनोद जी अहलुवालिया, पुरोहित श्री चंद्रमणि जी तथा आर्यजनों से भेंट तथा वार्ता हुई। आर्य समाज से प्रस्थान कर श्री रमेश जी पंवार के निवास पर पहुँचा आपसे विस्तार पूर्वक सामाजिक-आध्यात्मिक वार्ता हुई। आपको क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में जाने की प्रेरणा दी। दिनांक ३ अक्टूबर को सुपुत्र नितिन तथा गजेश के साथ वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी गया जहां पर वैदिक साहित्य का भण्डारण किया जाता है तथा वेद प्रचार वाहन श्री मोहनलाल जी शर्मा के आवास पर रखा जाता है। सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव उदयपुर में जाने की तैय्यारी से वेद प्रचार वाहन में वैदिक साहित्य तथा अन्य सामग्रियों का चयन कर रखा। लगभग १२:३० पर वहां से उदयपुर के लिये प्रस्थान किया।

उज्जैन पहुंचकर श्री वेदप्रकाश जी आर्य से भेंट तथा वार्ता की। उज्जैन से प्रस्थान कर नागदा में श्री भंवरलाल जी पांचाल से सम्पर्क किया। आप अपने खेत पर सोयाबीन कटाई का कार्य सपरिवार कर रहे थे। आपसे आपके खेत पर जाकर भेंट तथा वार्ता की। वहां से प्रस्थान कर मन्दसौर में भी अर्जुन लालजी झलोया जी के आवास पर पहुंचा। आपको चलभाष पर पूर्व से सूचित कर दिया था कि मेरा वहां पहुँचने पर मौन प्रारम्भ हो जावेगा, संध्योपासना करूंगा और भोजन नहीं करूंगा। आपने अपने हाथों से नमकीन खिचड़ी बनाई थी। आपके अनुरोध पर संध्योपासना पश्चात् अल्प मात्रा में खिचड़ी तथा फल-दूध ग्रहण कर शयन किया। दिनांक ४ को ब्रह्म मुहूर्त में बिछौना त्याग कर नित्य कर्म से निवृत्त हो रामटेकरी से महाराणा प्रताप द्वार तक भ्रमण किया। श्री अर्जुन जी के साथ देवयज्ञ किया आपको विस्तार से वैदिक संस्कृति की महत्ता तथा मानव जीवन में उपयोगिता तथा पंच महायज्ञ वह देवयज्ञ के विषय में बताया। देव यज्ञ के स्तुति प्रार्थना-उपासना मन्त्रों को अर्थ सहित वाचन के साथ उनके मर्म पर प्रकाश डाला। देवयज्ञ पश्चात् वार्ता के समय आपसे प्रश्न किया कि मैं प्रात:काल जब उठा तो पड़ोस में से किसी के अपशब्द बोलना, झगड़ने आदि की तेज आवाज आ रही थी क्या कोई विक्षिप्त है? आपने उत्तर दिया नहीं एक शराबी है जो शराब पीकर पूरी रात शोर करता रहता है परिवार वालों के साथ आस-पड़ोस के लोग भी अत्यन्त व्यथित है उसकी इन गतिविधियों से दुखी

होकर विगत दिनों उसके माता-पिता आत्महत्या कर चुके हैं। यह सुनकर मैं अवाक् रह गया। मेरे समक्ष मेरे अतित का दृश्य उपस्थित हो गया मुझ किंचन के पास परमपिता के धन्यवाद के लिए शब्द नहीं थे मात्र इतना भर कह सका- **हे परम पिता परमेश्वर ! आपकी महती कृपा है** उस निरीह प्राणी और उसके परिजनों पर भी मेरे अन्तरमन में दया भाव उभर आया उनके लिए उस परमपिता परमेश्वर से कामना की हे प्रभु उस दुर्बुद्धि को सद्बुद्धि प्रदान करों जो अपने इस मानव जीवन को क्षण-प्रतिक्षण नष्ट कर रहा है और अपने स्वजनों को प्रेम-स्नेह के स्थान पर दारुण दु:ख दे रहा है। **हे दयानिधे! दया करो, दया करो, दया करो।** भोजन ग्रहण करने के पश्चात् मन्दसौर निवासी श्री रूपचन्द जी शर्मा तथा आपके छोटे भाई श्री मोहनलाल जी शर्मा के प्रतिष्ठानों पर जाकर भेंट की तथा वैदिक संसार के निमित्त सहयोग प्राप्त किया। श्री मोहनलाल जी झिटावा के आवास पर जाकर आपके स्वास्थ्य का कुशल क्षेम जाना।

मन्दसौर से प्रस्थान कर नीमच में सुरेश जी शर्मा जो वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी है तथा मुझे आत्मीय सम्मान देते हैं आपके प्रतिष्ठान मिलन मोटर बॉडी पर पहुँचा। आपके मनासा गये होने से भेंट नहीं हुई। पश्चात शिक्षाविद् तथा साहित्यकार श्री प्रवीण जी शर्मा के आवास पर गया। आप नहीं मिले आपकी धर्मपत्नी, सुपुत्री कु, नताशा तथा पुत्रवधू श्रीमती मेघा से भेंट हुई। आपसे विस्तार पूर्वक अध्यात्मिक वार्ता हुई। आप सभी को वैदिक संसार तथा सद्साहित्य स्वाध्याय की प्रेरणा प्रदान की। प्रवीण जी के निर्देशानुसार आपने वैदिक संसार का आजीवन सदस्यता राशि का सहयोग किया। मेरे द्वारा आपको सत्यार्थ प्रकाश तथा संस्कार विधि उपहार स्वरूप भेंट की। नीमच से प्रस्थान कर नीमच के समीप राजस्थान प्रान्त के प्रतापगढ़ जनपद के गोमाना ग्राम पहुँचा वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि तथा सहयोगी श्री मांगीलाल जी प्रजापत तथा श्री गौरीशंकर जी पाटीदार से भेंट वार्ता हुई। सदस्यों से संग्रहित राशि आपसे प्राप्त कर प्रतापगढ़ जनपद के खेड़ी आर्यनगर ग्राम के निवासी वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री ताराचन्द जी पाटीदार के निवास पर पहुंचे। आपसे तथा उपस्थित आर्यजनों से नमस्ते की तथा कुशल क्षेम जाना। जलपान लेकर मौन प्रारम्भ होने से पूर्व आपको सायंकाल को भोजन न करने से लेकर प्रात:काल यज्ञ करने तक ही सम्पूर्ण दिनचर्या तक के विषय में अवगत करवा दिया।

शौच आदि से निवृत हो संध्योपासना के पश्चात् दूध ग्रहण करते समय देखा कि सामने राधा कृष्ण मन्दिर के बाहर पेड़ के चबूतरे तथा अन्य निवासों के बाहर अनेक युवा और बुजुर्गगण बैठे परसपर वार्ताऐं कर रहे हैं तथा चलभाष आदि पर कुछ कर रहे हैं। श्री ताराचन्द जी को लिखकर निवेदन किया कि अनुकूल हो तो कुछ महानुभावों को एकत्रित कर उपदेश किया जावे। आपने प्रसन्नता व्यक्त की तथा मन्दिर के सत्संग सभागार में उपस्थित सज्जनों को चलने का आग्रह किया। जिनकी आध्यात्मिक रुचि थी वह मन्दिर के अन्दर आ गये, जिनकी नहीं थी वे घर चले गये। चलभाष द्वारा भी अनेक महानुभावों को सूचना दी गई, कुछ बंधु आये। गायत्री मन्त्र उसके अर्थ पर चिन्तन प्रस्तुत करते हुए मानव जीवन का उद्देश्य परमपिता परमात्मा की प्राप्ति इसी और ध्यान देने और प्रयास करने अन्यथा मानव जीवन की महान् हानि को केंद्र में रखकर उपदेश किया। शायनकालीन मन्त्र पाठ पश्चात् शयन किया।

दिनांक ५ को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा देवी को विदा कर भ्रमण किया तथा कुछ लेखन कार्य सम्पन्न किया। शौच-स्नानादि से निवृत हो संध्योपासना की तथा मन्दिर के सामने पेड़ के चबूतरे पर निर्मित यज्ञ वेदी पर मुख्य के यजमान के रूप में श्री कंवरलाल जी बा. सा. तथा श्री भेरुलाल जी (अध्यक्ष), श्री जगदीश जी (प्रधान), श्री ताराचन्द्र जी (मन्त्री) एवं श्री जगदीश जी, सूरतराम जी साह यजमान के रूप में देवयज्ञ की व्यवस्था कर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। आप महानुभावों के द्वारा यज्ञ ब्रह्मा का सम्मान मुझे प्रदान किया गया। ध्वनी विस्तारक यन्त्र के साथ बृहद देवयज्ञ किया गया। देवयज्ञ के मन्त्रों का स्वर सुनते ही ग्रामवासी घृत लाने लगे देखते-देखते भगोनी (पतीली) भर गई। यज्ञ के प्रति ग्रामवासियों की निष्ठा देख कर मुंह से यह शब्द प्रस्फूटित हुए कि आर्य नगर के निवासी वास्तविक आर्य है। देव यज्ञ पश्चात् उपदेश मेरे द्वारा दिया गया।

देवयज्ञ का समापन कर प्रात:राश लेकर अनेक बन्धुओं से भेंट की तथा ग्राम हड़मतिया कुण्डाल और जीवनपुरा जाकर आर्यजनों से भेंट-वार्ता के साथ वैदिक संसार का त्रैवार्षिक सहयोग प्राप्त किया। वापसी लौटकर ताराचन्द जी के यहां भोजन ग्रहण कर उदयपुर के लिए प्रस्थान किया।

सायंकाल ४ बजे उदयपुर स्थित गुलाब बाग जहां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव दिनांक ६ से प्रारम्भ होना था पर पहुंचा। स्टाल का प्रबन्ध किया। ऋषि मिशन के श्री नन्दकिशोर जी को साथ लेकर रेल स्थानक गया। इन्दौर-उदयपुर रेल से ७ बजे श्री प्रेमनारायण जी पाटीदार प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी देवास वाले तथा मेरी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा आ गये आप लोगों को लेकर गुलाब बाग आऐ, हम दोनों पति-पत्नि को तो भोजन करना नहीं था, साथीगणों के भोजन ग्रहण करने के पश्चात् आर्य समाज पिछोली गये वहां संध्योपासना पश्चात् शयन किया।

दिनांक ६ से ८ तक सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के आयोजन में पधारे आर्य जनों की साहित्य सेवा की तथा भेंट व वार्ता सम्पन्न की। तीन दिन तक संध्या उपासना की तथा देवयज्ञ धर्मपत्नी और श्री प्रेमनारायण जी कि साथ स्टाल पर ही किया। दिनांक ८ को गोमाना वाले श्री गौरीशंकर जी आर्य ने भी देवयज्ञ में आहुतियां प्रदान की। दिनांक ९ अक्टूबर को प्रात: काल अजमेर के लिए वेद प्रचार वाहन से प्रस्थान किया। ९ बजे अजमेर पहुंचकर अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के पूर्व महामन्त्री तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सुभाषनगर वार्ड के कार्य वाहक श्री उमाशंकर जी पालड़िया के रामगंज स्थित निवास पर पहुंच स्नानादि से निवृत हो आपके यहां भोजन ग्रहण किया। वेद प्रचार वाहन को अजमेर में छोड़कर रेल द्वारा दोपहर एक बजे इंदौर के लिए प्रस्थान किया। परमपिता परमात्मा की महती कृपा से शकुशल, निर्विघ्न लगभग १४०० किलोमीटर की इस यात्रा का समापन हुआ। अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में भाग लेने जाने के कारण अक्टूबर माह की पत्रिका का कार्य समय से पहले दिनांक १० से १८ तक मध्य पूर्ण किया। दिनांक २१ को आगामी यात्रा हेतु इन्दौर से अजमेर के लिए प्रस्थान हेतु रेल टिकिट आरक्षित करवा लिया गया। ●

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ जून से २० अक्टूबर २०१८ तक

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि **श्री मोहनलाल जी दशोरा 'आर्य', सुपुत्र श्री कचरुमल जी दशोरा**, निवासी- नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)। आप कनघट्टी ग्राम में आयोजित आयोजन से मेरे सम्पर्क में आये। लगभग ७८ वर्ष की आयु अवस्था तथा स्वास्थ्य समस्याओं के उपरान्त भी वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार तथा अन्धविश्वास-पाखण्ड के नाश के लिये आपका जोश देखते ही बनता है। आप की लेखनी रुपी तलवार की धार अत्यन्त तीव्र है, कहीं भी आपकी दृष्टी में अन्धविश्वास, पाखण्ड दृष्टिगोचर होता है आप प्रहार करने से नहीं चुकते। आपने वैदिक संसार के कार्यों से प्रभावित होकर वर्ष २०१८ से ही वैदिक संसार के सदस्य बनने की प्रेरणा देने का कार्य प्रारम्भ किया और अभी तक लगभग शतक पुरा करने की और अग्रसर है। समस्त आर्य जनों के लिए आपका कार्य प्रेरणादायी है कि आपके निवास स्थल नारायणगढ़ में मात्र २-४ परिवारों में वैदिक संसार पहुंचता था किन्तु आपके मैदान में उतरने के पश्चात् आज लगभग ५६ परिवारों में वैदिक ज्ञान का प्रकाश आलोकित हो रहा है जबकि नारायणगढ़ एक छोटा सा कस्बा है। इसके पूर्व मई २०१८ के अंक में पृष्ठ ४१ पर आपका विस्तृत जीवन परिचय प्रकाशित किया गया था। आपका सम्पर्क चलभाष क्र. ९५७५७ ९८४१२ है। आपकी प्रेरणा से बने वार्षिक सदस्य निम्नानुसार है।

मध्यप्रदेश, जिला-मन्दसौर : श्री भगवती लाल जी चौहान 'प्रशान्त टेलर्स'-नारायणगढ़, श्री रामचन्द्र जी कुमावत-नारायणगढ़, श्री बालकृष्ण जी मूंदडा 'माहेश्वरी मिष्ठान'-नारायणगढ़, श्री जगदीश मोहनलाल जी काले-नारायणगढ, श्री रमेशचन्द्र लक्ष्मीनारायण जी लक्षकार-नारायणगढ़, श्री ओमप्रकाश इन्द्रदेव जी बसेर-नारायणगढ़, श्री राजेश गोवर्धनलाल जी पाटीदार, नारायणगढ़, श्री कन्हैयालाल जी कापड़िया 'पूर्व अध्यक्ष न.पा.'-नारायणगढ़, श्री हेमन्त भवानीशंकर जी कलवाड़िया-नारायणगढ़, श्री गोपाल मोहनलाल जी बोराना-नारायणगढ़, श्री मदनलाल राधाकृष्ण जी पाटीदार-नारायणगढ़, ठाकुर फतेहसिंह स्वरुपसिंह जी चौहान-नारायणगढ़, श्री कमलेश अम्बालाल जी हियार-नारायणगढ़, डॉ. मदनलाल जी शर्मा-नारायणगढ़, श्री माणकलाल जी सोनी 'पूर्व बैंक मैनेजर'-नारायणगढ़, श्री रामचन्द्र भंवरलाल जी पथिक-नारायणगढ़, श्री जगदीश मोढ़ीराम जी मेल-नारायणगढ़, श्री ओमप्रकाश नारायण जी चौधरी-नारायणगढ़, श्री राधेलाल मांगीलाल जी कापड़िया-नारायणगढ़, श्री बंशीलाल जी बोराना 'से. नि. अध्यापक'-नारायणगढ़, श्री राजेश शंकरलाल जी राठौर-नारायणगढ़, श्री विजय जी वारुंडिया 'भाणेज'-नारायणगढ़, श्री समरथमल रामचन्द्र जी राठौर-मल्हारगढ़। श्री राजेश अमृतलाल जी सोलंकी-नारायणगढ़, श्री अनिलकुमार शंकरलाल जी पाटीदार-नारायणगढ़, श्रीमती निर्मला विजयकुमार जी बसेर-मल्हारगढ़, श्री मोहन मांगीलालजी सेन (कछावा)-मल्हारगढ़, श्री रामचन्द्र फकीरचन्द जी मोड़-मल्हारगढ़, श्री कुलदीप प्रेमचन्द जी रत्नावत-मल्हारगढ़, श्री शिवरामजी पाटीदार 'अधिवक्ता'-पिपलिया मण्डी, श्री अनिल जी दशोरा 'अधिवक्ता' मन्दसौर, श्री वरदीचन्द भोरेविया जी पाटीदार-नारायणगढ़, श्री ललित सुनिल जी पामेचा नारायणगढ़, श्री श्यामसुन्दर रामचन्द्र जी मुंदड़ा-नारायणगढ़, श्री रमेशचन्द्र जी सोनी 'पटवारी'-नारायणगढ़, श्री ऋषिराज पन्नालाल जी कापड़िया-नारायणगढ़, श्री राधेश्याम ओंकारलाल जी भगत-नारायणगढ़, श्री सन्तोषमल चन्दनमल जी रुगरेचा-नारायणगढ़, श्री दिलीप गणपतलाल जी तिवारी-नारायणगढ़, श्री भगवानसिंह जी सोलंकी-अफजलपुर, श्री बाबूलाल जी चौहान 'ट्रेजरी वाले'-मन्दसौर, ठा. दिलीपसिंह मोहनसिंह जी पंवार-नारायणगढ़, श्री गोविन्द जी वारुण्डिया 'अधिवक्ता'-रेवास देवड़ा, श्री मांगीलाल जगन्नाथ जी पनिहार-टकरावद।

जिला- नीमच : श्रीमती सरस्वती पवन जी राजोरा-नीमच, श्री लक्ष्मीनारायण हीरालाल जी राठौर-धनेरिया कला। श्री निरंजन जी दशौरा 'अधिवक्ता'-नीमच, श्री अमृत रामलाल जी पंचोली-कुकड़ेश्वर, श्री पारसमल जी जौहरी-नीमच।

आर्य समाज किशनपोल, जयपुर के पूर्व प्रधान **श्री शंकरलाल बद्रीलाल जी जांगिड** निवासी-राधा गोविन्द कालोनी, डहर के बालाजी, सीकर रोड़, जयपुर, आपका वैदिक संसार के प्रती असीम स्नेह है। आपके द्वारा वैदिक संसार की आजीवन, त्रैवार्षिक तथा वार्षिक सदस्यता के द्वारा अनेक परिवारों को जोड़कर उन परिवारों में वैदिक धर्म सिद्धान्तों के ज्ञान प्रकाश पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त किया है। आप दैनिक अग्निहोत्री थे। जिन सदस्यों को पत्रिका नहीं पहुँचने की शिकायत होती थी उनकी पत्रिकाएँ अपने पते पर मंगवाकर स्वयं तथा परिवार जनों के सहयोग से वितरित करते थे। अत्यधिक आयु अवस्था और स्वास्थ्य समस्याओं के चलते अब आपका बाहर आना-जाना लगभग बन्द हो गया है। आपका विस्तृत जीवन परिचय इसके पूर्व जनवरी २०१७ के अंक में पृष्ठ ४० पर प्रकाशित किया गया था। आपका चलभाष क्र. ९४१३२३६८४८ है। आपके द्वारा लौटाई गई पावती पुस्तक के द्वारा आपकी प्रेरणा से बने सदस्य निम्नानुसार है-

राजस्थान, जिला-जयपुर : श्री कल्याण सहाय भगवान सहाय जी जांगिड-जयपुर (वार्षिक), श्री हनुमान सहाय भरताराम जी मीणा - ताला (गठवाड़ी) (वार्षिक), श्री राजेन्द्र कुमार गौरीशंकर जी शर्मा-नायन (वार्षिक), श्री हनुमान सहाय रामदयाल जी शर्मा-जयपुर (त्रैवार्षिक), श्री महेश चन्द्र जी गर्ग सुपुत्र-श्री पी.सी. गर्ग जी-जयपुर (त्रैवार्षिक)।

जिला-सीकर : श्री बनवारीलाल लादूराम जी सैनी-दायरा (वार्षिक), श्री मूलचन्द चौथमल जी पंवार-हरिपुरा (वार्षिक)।

जिला-अजमेर : श्री गोपाल नाथूलाल जी शर्मा-अजमेर (वार्षिक)।

अन्य महानुभावों से प्राप्त विविध सहयोग

संरक्षक

श्री नरेश सोहनलाल जी जांगिड (दम्मीवाल), कोहिनूर एमरी इन्डस्ट्रीज, बासनी ।।, जोधपुर (राज.)।

श्री विनोद राजाराम जी जायसवाल, गौरव इलेक्ट्रिकल्स, बालाजी गार्डन, पाटीदार भवन के सामने, टिम्बर मार्केट, रायपुर, छत्तिसगढ़।

आर्य श्री वेदप्रकाश रामेश्वरप्रसाद जी शर्मा, आई.ओ.सी.एल. बीकानेर (मूल निवासी-भगवतगढ़, जिला-सवाई माधोपुर) राज.।

श्री गजानन्द जोधाराम जी जांगिड, अष्टविनायक कन्ट्रक्शन , कान्ट्रेक्टर एवं डेव्हलपर्स, जालना (महाराष्ट्र)।

श्री अर्जुन जगन्नाथ जी झलोया, सेवा निवृत अभियन्ता एवं जिलाध्यक्ष जांगिड ब्राह्मण शाखा सभा-मन्दसौर (म.प्र.)।

स्वैच्छिक अनुदान

राजस्थान, जिला-जयपुर : श्री शंकरलाल बद्रीनारायण जी शर्मा-जयपुर, पं. गंगाराम किशनलाल जी जांगिड-जयपुर, डॉ. अनामिका शर्मा वैदिक वीरांगना दल-जयपुर।

जिला-पाली : श्री प्रकाश भंवरलाल जी पीड़वा-पाली।

जिला-उदयपुर : श्री नन्दलाल अम्बाराम जी शर्मा-उदयपुर।

मध्यप्रदेश, जिला-उज्जैन : श्री धर्मेन्द्र बसन्तीलाल जी शर्मा-उज्जैन।

जिला-इन्दौर : श्री छाजूलाल कन्हैयालाल जी शर्मा-इन्दौर-१६।

जिला-मन्दसौर : श्री रुपचन्द कचरमल जी शर्मा-मन्दसौर, श्री मोहनलाल कचरमल जी शर्मा-मन्दसौर।

जिला-विदिशा : श्री एस. के. सैनी जी - गंजबासौदा।

झारखण्ड, जिला-जमशेदपुर : डॉ. लक्ष्मीनिधि जी- साकची।

वयोवृद्ध, मूर्धन्य वैदिक विद्वान, वैदिक संसार में प्रकाशित लेखों के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं. शिवनारायण जी कोटा की प्रेरणा से ७ सदस्यों का त्रैवार्षिक सदस्यता राशि का सहयोग प्राप्त हुआ है। हम आपका हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हैं तथा आपके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना करते हैं — सम्पादक

आजीवन

राजस्थान, जिला-पाली(मारवाड़): श्री धनराज पुनाराम जी आर्य, अध्यक्ष-आर्य वीरदल-पाली, श्री घनश्याम रामचन्द्र जी कुड़िया-पाली।

जिला-जोधपुर : श्री हरिशचन्द्र शिवलाल जी जांगिड-जोधपुर।

जिला-हनुमानगढ़ : श्री रामनिवास गणपतराम जी कासलीवाल-हनुमानगढ़ टाउन, श्री मुन्शीराम गोकलचन्द जी कालोनिया 'अध्यक्ष-विश्वकर्मा सेवा समिति'-हनुमानगढ़ टाउन।

जिला-सीकर : डॉ. अरुण कुमार शंकरलाल जी जांगिड 'दिव्य नेत्र चिकित्सालय' सीकर।

जिला-जयपुर : श्री देवेन्द्र वेनीप्रसाद जी शर्मा-जयपुर।

महाराष्ट्र, जिला-जालना : सेठ श्री घनश्याम चुन्नीलाल जी गोयल 'कालिका अयस्क प्रा. लि.'- जालना, श्री सन्तोष बाबूराम जी आर्य 'अध्यक्ष-आर्य समाज'-जालना।

जिला-नागपुर : श्री किशनलाल शिवराम जी शर्मा-नागपुर।

छत्तिसगढ़, जिला-रायपुर : श्री मदनलाल प्यारेलाल जी शर्मा, 'अध्यक्ष-जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा छत्तिसगढ़'-रायपुर, श्री सांवरमल लालचन्द जी शर्मा-रायपुर।

जिला-दुर्ग : श्री सुभाष लालचन्द जी शर्मा 'जागिड़'-दुर्ग।

उत्तरप्रदेश, जिला-आगरा : श्री ओमप्रकाश अशरफीलाल जी शर्मा-हनुमान (फतेहाबाद)

जिला-गाजियाबाद : श्री मुनिन्द्र कुमार परमानन्द जी आर्य-गाजियाबाद।

गुजरात, जिला-अहमदाबाद : स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती-अहमदाबाद।

उत्तराखण्ड, जिला-देहरादून : श्री रमनकुमार गंगाराम जी डग-विकास नगर।

मध्य प्रदेश, जिला-उज्जैन : श्री प्रधान जी/मन्त्री जी आर्य समाज-उज्जैन।

जिला-इन्दौर : श्री महेश बद्रीप्रसाद जी जांगिड-इन्दौर।

जिला-भोपाल : श्री जीवनसिंह मोतीलाल जी परमार-रतनपुर सड़क (मिसरौद)।

जिला-नीमच : श्री प्रवीण जगदीश चन्द्र जी शर्मा **'जागीरदार'**-नीमच।

त्रैवार्षिक

राजस्थान, जिला-कोटा : श्री रघुवीर सिंह जी कुशवाह-कोटा, श्री सत्यनारायण जी शर्मा-कोटा, श्री राजेन्द्र जी सक्सेना-कोटा, श्री अजीत जी नागर-कोटा।

जिला-प्रतापगढ़ : रॉयल एकेडमी ऑफ चाइल्ड एज्यूकेशन-खेड़ी आर्यनगर, श्री सोहनलाल उदयलाल जी आंजना-बसेड़ा, श्री शुभम सिंघास जी पाटीदार-गाधोला, श्री भेरूलाल बापूलाल जी आर्य-खेड़ी आर्यनगर, श्री शिवलाल मांगीलाल जी पाटीदार-खेड़ी आर्यनगर, श्री कचरुमल भंवरलाल जी पाटीदार-हड़मतिया कुण्डाल, श्री घनश्याम अम्बाराम जी पाटीदार-जीवनपुरा, श्री पृथ्वीराज मूलचन्द जी पाटीदार-जीवनपुरा, श्री मोड़ीराम

प्रभुलाल जी पाटीदार-जीवनपुरा, श्री मांगीलाल धन्नालाल जी प्रजापत-गोमाना।

जिला-उदयपुर : श्री सुरेशचन्द्र किशनलाल जी चौहान-उदयपुर, श्री प्रधान जी/मन्त्री जी आर्य समाज-हिरण मगरी, श्री कृष्णकुमार माणकलाल जी सोनी-उदयपुर, डॉ. अमृतलाल भंवरलाल जी तापड़िया-उदयपुर, श्री निरंजन गोरधनदास जी नेभनाणी-उदयपुर, श्री प्रकाशचन्द्र दामोदरलाल जी श्रीमाली-उदयपुर, श्री फतहलाल ओंकारलाल जी शर्मा-उदयपुर, श्री भूपेन्द्र जितेन्द्र पाल जी शर्मा-उदयपुर।

जिला-झालावाड़ : श्री देवेन्द्रकुमार शिवनारायण जी उपाध्याय-झिरी।

जिला-भीलवाड़ा : श्री विजय रतिराम जी शर्मा-भीलवाड़ा।

जिला-पाली (मारवाड़) : श्री हुक्माराम कानाराम जी बंजारा-पाली, श्री वीरेन्द्र सिंह अमरसिंह जी-पाली, श्री प्रधान जी/मण्त्री जी आर्यवीर दल-पाली, श्री गणपत गौरूराम जी भदौरिया-पाली, श्री जीवराज गोरधन जी जांगिड-पाली, श्री कैलाश भूरालाल जी आर्य-पाली, श्री राकेश सोहनलाल

संरक्षक सदस्य-जीवन परिचय

संघर्षशील, परिश्रमी, सेवाभावी, उदार, सहृदयी, प्रेरणास्पद व्यक्तिगत के धनी वैदिक संसार के आधार स्तम्भ तथा अभिन्न सहयोगी भामाशाह श्री गजानन्दजी जांगिड सुपुत्र स्मृति शेष श्री जोधाराम जी जांगिड (छिछोलिया) निवासी - जालना (महा.), मूल निवासी-तिवाड़ी का वास तह. नीम का थाना, जिला-सीकर (राज.) का जन्म दिनांक : १५ फरवरी १९६३ को माता श्रीमती सरस्वती देवी जी की कोख से अपने गृहग्राम तिवाड़ी का वास में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव में ग्रहण की उसके पश्चात् बी.कॉम तक नीम का थाना में शिक्षा प्राप्त की। आप अपने पिता के एक मात्र सुपुत्र तथा आपकी दो बहने श्री मती कमला देवी सीताराम जी जांगिड-धनोरा (म.प्र.) तथा श्री मती सन्तरादेवी रामपाल जी जांगिड-नारवाड़ी (राज.) है। आपका विवाह सौ. का. राजबाला, सुपुत्री श्री विशम्बर दयाल जी जांगिड निवासी निहालौठ, तह.-खेतड़ी, जिला-झुन्झनू (राज.) के साथ दिनांक १८ जून १९८६ को हुआ।

शिक्षा तथा विवाह के पश्चात् आपने अपने क्षेत्र में ही कार्य किया। वर्ष १९९३ में आप अपने जीजाजी के पास औरंगाबाद (महा.) कार्य करने आ गये, तब से आपने महाराष्ट्र को अपनी कर्मभूमि बनाकर जालना को अपना स्थायी निवास बना लिया। भवन निर्माण के क्षेत्र में आपने विशेष ख्याति अर्जित की है। बहुमंजिला व्यापारिक संकुलों, विद्यालयों, चिकित्सालयों आदि के निर्माण में आप सिद्धहस्त है। अष्टविनायक कन्ट्रक्शन तथा उमा कन्ट्रक्शन के नाम से भवन निर्माण कान्ट्रेक्ट तथा डेव्हलपर के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान आपके कार्यरत् है। आपके सुपुत्र-सुपुत्री विद्या अर्जन हेतु अन्यत्र स्थानों पर निवास कर रहे हैं। पारिवारिक कार्यों में भी आपको समय देना होता है तथा आपका व्यवसाय अधिकांश औरंगाबाद क्षेत्र में है। पारिवारिक और व्यवसायिक वयस्तताओं के उपरान्त भी आप सामाजिक कार्यों में भी तन-मन-धन से आगे रहते हैं। वर्तमान में आप विश्वकर्मा सेवा समिति जालना के अध्यक्ष के साथ अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के जालना जिला सभा के जिलाध्यक्ष पद का दायित्व निर्वाह कर समाज को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं।

आपके अपने पैतृक ग्राम तिवाड़ी का वास में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन की कमी ग्रामवासियों द्वारा अनुभूत की जा रही थी। जब आपके ध्यान में यह बात लाई गई तो आपने विद्यालय भवन निर्माण का यह दायित्व अपने कन्धों पर ले लिया तथा लगभग २८ लाख रुपयों से भवन निर्माण कर १६ अगस्त २०१८ को राजस्थान सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री प्रेमसिंह जी बाजोर तथा अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय प्रधान श्री रविशंकर जी शर्मा एवं अनेक राजनीतिक, सामाजिक विभूतियों की गरीमामयी उपस्थिति में भवन को जन सेवार्थ लोकार्पित कर दिया। इस अवसर पर आपको भामाशाह सम्मान से विभूषित किया गया। सामाजिक कार्यों में उदार हृदय से आप तन-मन-धन से हमेशा आगे रहते हैं। वैदिक संसार के प्रकाशन प्रारम्भ से आप इसके आधार स्तम्भ सदस्य है तथा प्रतिवर्ष मुक्त हस्त से सहयोग करते हैं।

दिनांक ११ सितम्बर को जालना प्रवास पर आपसे संरक्षक सदस्यता का अनुरोध करने पर आपने २५०००/- रुपये का सहयोग किया तथा पृथक से प्रतिवर्ष किया जाने वाला सहयोग भी किया। आपके तीन सुपुत्र ज्येष्ठ सुपुत्र चि. विजय जांगिड यू.एस.ए. में शिक्षा उपरान्त मैकेनिकल इंजीनियरिंग पद पर वहीं पर कार्यरत है। मझले सुपुत्र चि. दीपक जांगिड पूना में इंफोसिस कम्पनी में साफ्टवेअर इंजीनियर के पद पर कार्यरत है। सबसे छोटे सुपुत्र चि. आशीष जांगिड़ हीरानन्दजी कम्पनी में सीविल इंजीनियर के पद पर पनवेल (मुम्बई) में कार्यरत है। सबसे छोटी सुपुत्री कु. प्रियंका जांगिड पूना में आर्किटेक्ट हेतु अध्ययनरत् है।

वैदिक संसार परिवार आपके तथा आपके परिवार के आरोग्यप्रद, दीर्घायु, यशस्वी, सुख-शान्तिमय जीवन की कामना करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह आपको इतना समृद्धशाली बनावें कि आप हजारों हाथों से दान के पुण्य के भागी बन अपने मानव जीवन को सार्थक सफल बना सके। आपके द्वारा किये जा रहे परोपकारी कार्यों तथा वैदिक संसार को किये गये सहयोग के लिये वैदिक संसार परिवार आपका हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करता है।

जी सोनी-पाली, श्री रामेदव शंकरलाल जी जांगिड-पाली, श्री जगदीश प्रसाद पूनमचन्द जी जांगिड-पाली, श्री जगदीश मादाराम जी जांगिड-पाली, श्री अशोक प्रकाश जी चावरिया पाली, श्री भंवरलाल मूलाराम जी जोपिंग-पाली, श्री चन्द्राराम वागाराम जी -पाली, श्री रामचन्द्र जी घीसुलाल जी जांगिड-पाली, श्री वीरेन्द्र ओमसिंह जी परिहार-पाली।

जिला-हनुमानगढ़ : श्री सादीराम गोकलचन्द जी कालोनिया-हनुमानगढ़ टाउन, श्री मनोहरलाल मदनलाल जी मिषण-हनुमानगढ़ टाउन, श्री गोपीराम हनुमान जी सुथार-हनुमानगढ़ जंक्शन, श्री मांगेराम हजारीराम जी सुथार-हनुमानगढ़ जंक्शन, श्री प्रहलादराम छगनलाल जी खण्डेलवाल-हनुमानगढ़ जंक्शन, श्री मनीराम विजयराम जी सुथार-हनुमानगढ़ जंक्शन, श्री बैगराज लादूराम जी खाती-हनुमानगढ़ जंक्शन, श्री हरिराम सहीराम जी सुथार-हनुमानगढ़ टाउन।

जिला-श्री गंगानगर : श्री जगदीश दौलतराम जी राजोतिया-श्री गंगानगर, श्री मनफूलसिंह रामजीलाल जी जांगिड-श्रीगंगानगर, श्री द्वारकाप्रसाद रामेश्वरलाल जी जांगिड-श्री गंगानगर, श्री गजानन्द सादीराम जी जांगिड- श्री गांगानगर।

जिला-सीकर : प्रो. आर के मीणा-फतेहपुर शेखावटी, श्री सीताराम मुरलीधर जी प्रजापति-फतेहपुर शेखावटी, श्री ओमप्रकाश जी जाखड़-फतेहपुर शेखावटी, श्री रजनीकान्त रामकुमार जी वार्ष्णेय-फतेहपुर शेखावटी, श्री जयदेव शान्तिदेव जी जांगिड-सीकर।

जिला - जयपुर : श्री रामसहाय रामसुख जी शर्मा-जयपुर-०६, श्री जगदीश प्रसाद शंकरलाल जी वर्मा-जयपुर-२०, श्री राधाकिशन मूलचन्द जी मांडन-जयपुर-१६। श्री सुशील जगन्नाथ प्रसाद जी मित्तल-जयपुर-१५।

जिला-जोधपुर : श्री सोमदेव रामरखजी करवा-रातानाड़ा जोधपुर, श्री टीकुराम जी गोदारा 'सनातन धर्म एवं गो सेवा और आर्य समाज'-पाबूसर (दासानिया), श्री श्यामसुन्दर शंकरलाल जी लदरेचा 'अधिवक्ता'-जोधपुर।

जिला-नागौर : श्री मोहनलाल घीसालाल जी जांगिड-गूलर(बडू), श्री गिरधारीलाल रामनिवास जी जांगिड-बेसरोली (मकराना)।

जिला-सवाईमाधोपुर : श्रीमती लक्ष्मी चन्द्रमोहन जी शर्मा-भगवतगढ़।

जिला-अजमेर : श्री दीवानसिंह मानसिंह जी चौधरी-ब्यावर।

जिला-कोटा : श्री प्रेमनाथ विश्वम्भर जी कौशल-कोटा।

हरियाणा, जिला-पलवल : श्री मेजर नन्नूराम देवीसिंह जी डांगी-सदुआगढ़ी, श्री सुभाष चन्द्र जी दीपचन्द्र जी आर्य-सदुआगड़ी।

जिला-महेन्द्रगढ़ : श्री गणपतसिंह प्रभूदयाल जी आर्य-करीरा, अध्यापक जयप्रकाश जी सहरावत-नागल चौधरी।

जिला-गुरुग्राम : श्री संजय जी शर्मा-गुरुग्राम।

मध्यप्रदेश, जिला-उज्जैन : श्री संजय शिवनारायण जी शर्मा-महिदपुर सीटी, डॉ. आनन्द मोहन राजबहादुर जी सक्सेना-उज्जैन, श्री अरुण वासुदेव जी आर्य-सुवासा, श्री आशीष ईश्वरलाल जी पाटीदार-सुवासा, श्री प्रधान जी-मन्त्री जी आर्य समाज-बड़नगर, श्री अरुण अशोक जी भावसार-बड़नगर, श्री राजेन्द्र गोपाल जी यादव-बड़नगर, श्री वेदप्रकाश अजयकुमार जी आर्य-उज्जैन।

जिला-इन्दौर : श्री रविराज शिवनारायण जी माहेश्वरी-इन्दौर-२०, श्री मोहनलाल कन्हैयालाल जी जांगिड-इन्दौर-११, श्री दिनेश राजाराम जी यादव-इन्दौर-०१, श्री ओमप्रकाश रामलाल जी नागवंशी-इन्दौर-१०, श्री महेश हुकुमचन्द जी शर्मा-इन्दौर ०९, श्री दीपचन्द प्रेमनारायण जी गोस्वामी 'कोर्ट मुंशी'- इन्दौर ।

जिला-सीहोर : श्री नरेशचन्द्र भय्यालाल जी आर्य-सीहोर, श्री प्रधान जी/मन्त्री जी आर्य समाज-सीहोर।

जिला-देवास : श्री हरिसिंह छतरसिंह जी ठाकुर-राजोदा।

जिला-बड़वानी : श्री योगेश विनोद जी शर्मा-बड़वानी।

जिला-शाजापुर : श्री आनन्द कुमार राजनारायण जी चौधरी-शाजापुर।

जिला-रायसेन : श्री रामभरोसे गोपीप्रसाद जी आर्य-कामतौन।

जिला-रतलाम : श्री हरिकिशन ईश्वरलाल जी पाटीदार-कलालिया।

कर्नाटक, जिला-बंगलुरू : श्री सुरेन्द्र कुमार शिवनारायण जी उपाध्याय-बंगलुरू।

पश्चिम बंगाल, जिला-कोलकाता : श्री दिनेश शान्तिस्वरुप जी गुप्ता-कोलकाता, श्रीमती विमला मोहनलाल जी बगड़िया-कोलकाता, श्रीमती आशा गोपाल विष्णु जी जोग-कोलकाता, श्रीमती उषा दीवान जी अग्रवाल-कोलकाता।

महाराष्ट्र, जिला-जालना : श्री सुनिल रुपजी पहलवान अहीरे-जालना, श्री मनिषनन्द भैय्यालाल जी यादव-जालना, श्री नरेन्द्र भगवान दास जी वलेचा-जालना।

जिला-नागपुर : श्री इन्द्रचन्द्र मुरलीधर जी जांगिड-नागपुर

उत्तरप्रदेश, जिला-बुलन्दशहर : श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी-संस्थापक- सावरकर वाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर।

जिला-शामली : श्री पवन कुमार विष्णुजी आर्य 'शर्मा'-शामली।

छत्तिसगढ़, जिला-रायपुर: श्री प्रधान जी/मन्त्री आर्य समाज बैजनाथ पारा-रायपुर, श्री जगदीश चन्द्र काशीराम जी पशरेजा-रायपुर।

दिल्ली : श्री श्रवणकुमार प्रदीप जी आर्य- त्रिनगर दिल्ली, डॉ. गंगाशरण जी आर्य- दिल्ली।

उत्तराखण्ड, जिला-रुड़की : सुश्री अनिता जी (असिस्टेन्ट इंजीनियर)-रामनगर।

जम्मू-कश्मीर, जिला राजौरी : मा. चुन्नीलाल प्रेमदास जी आर्य-लम्बेड़ी (नौशहरा)

शेष भाग आगामी अंक में...

वैदिक संसार के संरक्षक तथा वरिष्ठ समाज सेवी, भामाशाह श्री गजानन्द जी जांगिड द्वारा राजकीय उच्च मा. विद्यालय भवन का २८ लाख रुपए की लागत से निर्माण करवाकर १६ अगस्त को जनसेवार्थ लोकार्पित समारोह की चित्रावली

एम.पी.एच.आई.एन.– २०१२/४५०६९ • सम्पादक – गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन– एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१८–२०

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

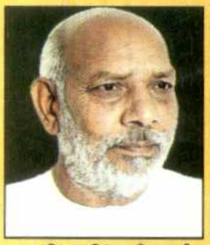

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

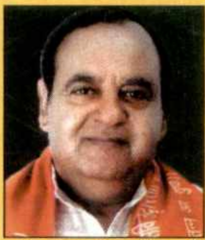

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धूलिया (महारा

श्री गजानन्द जी जांगिड
जा. ब्रा. जिलाध्यक्ष
जालना (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरा

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा, (हरियाणा)

श्री गोविन्दराम जी आर्य
सांसद प्रतिनिधि
देपालपुर (इन्दौर)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वास्को डी गामा, गोवा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आ. सर्वेश सिद्धान्ताचार्य
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित
गाधी, बागपत (उ.प्र.)

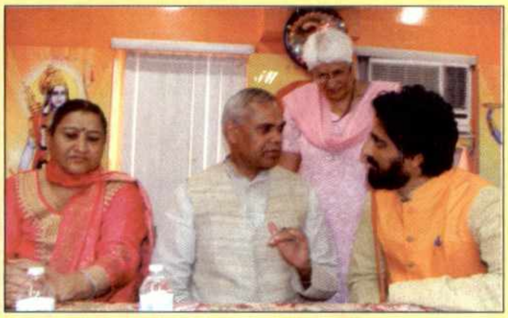

आर्य महासम्मेलन अमेरिका के अटलांटा में आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी का व्याख्यान तथा महामहिम आचार्य देवव्रत जी से वार्ता करते हुए आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी

महिला नेतृत्व में आपदा प्रबंधन हेतु अनामिका शर्मा, जयपुर को दिया गया अवार्ड।

डॉ. महिपालसिंह जी को ''हिन्दी आर्य रत्न'' से सम्मानित करते आर्य समाज नीमच के पदाधिकारी।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्रफिक्स २४, कुंवर मण्डली, से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर - १८ से प्रकाशित